मधु-संचय

भाग 2

(कक्षा 10 'अ' के लिए हिंदी की पूरक पाठ्यपुस्तक)

संपादक
स्नेह लता प्रसाद

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
जनवरी 2003
पौष 1924

ISBN 81-7450-152-5

PD 400T DRH

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्लू.सी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110 016	बैंगलूर 560 085	अहमदाबाद 380 014	24 परगना 743 179

प्रकाशन सहयोग

संपादन : दयाराम हरितश
उत्पादन : डी. साई प्रसाद
सुनील कुमार

आवरण
कल्याण बैनर्जी

रु.10.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 70 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा नवटैक कंप्यूटर द्वारा लेज़र टाईपसैट होकर अजय आफॅसेट प्रिंटर्स ए-55, नारायणा इंडस्ट्रियल ऐरिया फेज- I, नारायणा, नई दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित।

आमुख

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में विद्यालयी स्तर पर विभिन्न शैक्षिक विषयों के लिए पाठ्यचर्या एवं तदनुरूप पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का कार्य लगभग चार दशकों से हो रहा है। इसी क्रम में राष्ट्रीय नीति (1986) के लागू होने पर तद्निहित सिद्धांतों, सुझावों और उद्देश्यों के अनुसार उपयुक्त शिक्षण-सामग्री एवं पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया, जिनमें बाल-केंद्रित शिक्षा एवं शिक्षार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में यह सुझाव भी दिया गया था कि कुछ समय के पश्चात ज्ञान-विज्ञान के विकास, सामाजिक रचना और नवीन दृष्टिकोण तथा मूल्यपूरक शैक्षिक आवश्यकताओं को देखते हुए पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में यथावश्यक संशोधन और परिवर्तन अवश्य किया जाए। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए 'विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (सन् 2000)' का निर्माण हुआ। तत्पश्चात नवीन पाठ्यचर्या में सुझाए गए नवीन उद्देश्यों, जीवन-मूल्यों, सूचना-संसाधनों एवं शिक्षा के व्यावहारिक पक्ष की दृष्टि से अपेक्षित शैक्षिक बिंदुओं को समाहित करते हुए विविध विषयों का नवीन पाठ्यक्रम तैयार किया गया। तदनुसार नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण का कार्य हाथ में लिया गया। इसी शृंखला में दसवीं कक्षा के हिंदी 'अ' पाठ्यक्रम के लिए पूरक पठन की इस पुस्तक **मधु-संचय भाग 2** का प्रणयन किया गया है।

इस पुस्तक के प्रणयन में जिन प्रमुख सिद्धांतों का विशेष ध्यान रखा गया है, वे इस प्रकार हैं –

1. पुस्तक में ऐसी पठन-सामग्री का समावेश किया गया है जो शिक्षार्थी में राष्ट्रीय लक्ष्यों तथा केंद्रिक पाठ्यक्रम में प्रतिपादित जीवन-मूल्यों, लोकतंत्र, धर्म-निरपेक्षता,

समाजवाद, सामाजिक-न्याय और राष्ट्रीय एकता के प्रति चेतना एवं आस्था विकसित कर सके।

2. पठन-सामग्री में भारतीय जनजीवन से संबंधित समस्याएँ, परिस्थितियाँ तथा राष्ट्र की सामासिक संस्कृति परिलक्षित हो।

3. पूरक पुस्तक मूलतः स्वाध्याय के द्‌वारा पठन-रुचि विकसित करने के लिए होती है। अतः प्रस्तुत पुस्तक के लिए ऐसी पाठ्य-सामग्री के निर्माण का प्रयास किया गया है जो अपनी रोचकता, बोधगम्यता एवं विविधता के कारण शिक्षार्थियों को स्व-अध्ययन के लिए तो प्रेरित करे ही, साथ ही उन्हें इस प्रकार की अन्य सामग्री पढ़ने के लिए भी उत्प्रेरित कर सके। इस प्रकार की सामग्री के अध्ययन से छात्रों में उत्तरोत्तर भाषिक एवं साहित्यिक योग्यताओं का विकास हो सकेगा।

प्रस्तुत पुस्तक द्‌वारा जहाँ एक ओर हिंदी के भारतीय सामासिक संस्कृति के संवाहिका रूप को उजागर करने की चेष्टा की गई है, वहीं दूसरी ओर साहित्य, समाज, कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों में देश की गौरवमयी परंपरा और उसमें निहित जीवन-मूल्यों को रेखांकित करने का भी प्रयत्न किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण में हमें अनेक शिक्षाविदों, भाषाशास्त्रियों एवं अध्यापकों का सहयोग मिला है। मैं उन सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

जिन लेखकों ने अपनी रचनाएँ इस पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किए जाने की अनुमति दी है, उनके प्रति मैं विशेष रूप से अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

इस पुस्तक के परिष्कार के लिए शिक्षाविदों और अध्यापकों द्‌वारा व्यक्त प्रतिक्रियाओं और सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

जगमोहन सिंह राजपूत
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

अक्तूबर, 2002
नई दिल्ली

भूमिका

कक्षा 10 हिंदी 'अ' पाठ्यक्रम के लिए प्रस्तुत पूरक पाठ्यपुस्तक के निर्माण में विद्यार्थियों की पूर्वार्जित भाषा योग्यता, बौद्धिक क्षमता एवं रुचि का ध्यान रखते हुए यह प्रयास किया गया है कि इसके माध्यम से वे विभिन्न साहित्यिक विधागत विशेषताओं से परिचित हों और उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति भी विकसित हो। यह भी प्रयत्न किया गया है कि जो साहित्यिक विधाएँ नवीं-दसवीं कक्षा की मुख्य पाठ्यपुस्तक एवं नवीं कक्षा की पूरक पठन की पुस्तक **मधु-संचय भाग 1** में सम्मिलित नहीं हो पाई हैं वे इस कक्षा दसवीं की पूरक पठन की पुस्तक **मधु-संचय भाग 2** में अवश्य आ जाएँ। इस दृष्टि से इस पुस्तक में कहानी और व्यंग्य के अतिरिक्त जीवनी (पत्र-शैली) तथा अनूदित रचना आदि को स्थान दिया गया है। इनके अध्ययन से अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थी इन विविध विधाओं की शैलीगत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।

आज देश में संकीर्ण संप्रदायवाद और असहिष्णुता की प्रवृत्ति के कारण हम भारतीय जीवन-मूल्यों तथा अपनी समन्वयवादी सामासिक संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। समुचित साहित्य की शिक्षा इस प्रवृत्ति को दूर करने और विद्यार्थियों में राष्ट्र के प्रति स्वस्थ अभिरुचि विकसित करने में एक प्रेरक साधन बन सकती है। इस दृष्टि से पाठ्य-सामग्री के चयन और संयोजन में निम्नलिखित बिंदुओं को केंद्र में रखा गया है :

पठन-सामग्री ऐसी हो जिसके माध्यम से विद्यार्थी लोक-परंपरा, साहित्य, कला, विज्ञान, समाज आदि के क्षेत्र में अपनी सांस्कृतिक विरासत से परिचित हों और उसके प्रति उनमें सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो।

विधागत पाठ्य-सामग्री के चयन में रोचकता और विविधता का ध्यान रखा गया है।

पठन-सामग्री के बोधन की दिशा में अध्यापक एवं विद्यार्थियों को स्पष्ट दृष्टि देने के विचार से प्रत्येक पाठ के अंत में बोध-प्रश्न दिए गए हैं। आशा है कि इन प्रश्नों के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों के बोधन का मूल्यांकन हो सकेगा, बल्कि पाठ में निहित विविध शैक्षणिक बिंदु भी उभरकर सामने आ सकेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक में सम्मिलित रचनाओं की कतिपय विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

कोटर और कुटीर : सियारामशरण गुप्त द्वारा लिखित इस गद्य रचना में पक्षी एवं मानव दोनों के माध्यम से यह प्रतिपादित किया गया है कि संकट के समय भी अपनी आन और मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए। वस्तुतः चरित्र की कसौटी कठिनाई की घड़ी ही होती है। जिस प्राणी ने कठिन समय संयम और धैर्यपूर्वक संघर्षरत रहते हुए निकाल लिया, वही वंदनीय है।

सुभाष चंद्र बोस का पत्र एन.सी. केलकर के नाम : सुभाष चंद्र बोस ने यह पत्र मांडले सेंट्रल जेल, म्याँमार (बर्मा) में अपने कारावास के समय लिखा था। उन्हें उसी कक्ष में रखा गया था जिसमें लोकमान्य तिलक को रखा गया था। इस पत्र में बड़े ही सशक्त एवं मार्मिक ढंग से माननीय तिलक के महान चरित्र, धैर्य, कष्ट-सहिष्णुता, असीम देश-प्रेम, अगाध विद्वता, गहन चिंतन और भारतीय दर्शन के मर्मज्ञ रूप का चित्रण किया गया है।

काश, मैं मोटर साइकिल होता : श्रीलाल शुक्ल ने इस व्यंग्य में अत्यंत रोचक ढंग से वर्तमान प्रशासनिक कार्यव्यवस्था पर प्रहार करते हुए आकस्मिक दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की स्थिति का वर्णन किया है।

ऋणशोध : ऋता शुक्ल की इस कहानी में जहाँ एक ओर मध्यवर्गीय परिवार की कठिनाइयों की मार्मिक व्यंजना हुई है, वहीं दूसरी ओर गुरु की महत्ता पर भी प्रकाश डाला गया है। विद्यादान

देनेवाले से अधिक शुभाकांक्षी और स्नेही कोई हो ही नहीं सकता। गुरु से आशीर्वाद लेने के लिए विकास अपने नवजात शिशु को उनकी पहनी हुई धोती में लपेटकर उनके चरणों मे रख देता है। गुरु के प्रति श्रद्धा का यह अनुपम उदाहरण है।

मुगलों ने सल्तनत बख्श दी : भगवती चरण वर्मा के इस व्यंग्य में अंग्रेज़ों द्वारा भारत पर धीरे-धीरे कब्ज़ा कर लेने की घटना को बड़े ही रोचक रूप में प्रस्तुत करते हुए तत्कालीन मुगल साम्राज्य में व्याप्त राग-रंग और अकर्मण्यता पर करारी चोट की है।

समानांतर सरल रेखाएँ : यह कहानी विभूति पट्टनायक की उड़िया में लिखित कहानी का हिंदी अनुवाद है। इसमें लेखक ने दो पीढ़ियों के जीवन-मूल्यों के अंतर को बड़े ही सजीव रूप में चित्रित किया है। पुरानी पीढ़ी जो करती थी, उसके फल की कामना नहीं करती थी और आज की पीढ़ी पुरखों के किए हुए को ही भुनाना चाहती है। इस कहानी के माध्यम से 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' का संदेश प्रदान करने का प्रयत्न किया गया है।

आशा है यह पुस्तक विद्यार्थियों को रुचिकर लगेगी और उनमें स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ाने के साथ-साथ विभिन्न जीवन-मूल्यों के प्रति समझ भी उत्पन्न कर सकेगी।

पाठ्यपुस्तक-निर्माण-समिति

1. डॉ. विद्यानिवास मिश्र
   पूर्वकुलपति, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी तथा महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी
2. श्री निरंजन कुमार सिंह
   अवकाशप्राप्त प्रवाचक, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
3. डॉ. माणिक गोविंद चतुर्वेदी
   अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर
   केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली
4. डॉ. आनंद प्रकाश व्यास
   अवकाशप्राप्त प्रवाचक, केंद्रीय शिक्षा संस्थान दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
5. डॉ. मानसिंह वर्मा
   पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, मेरठ कालेज मेरठ
6. डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी
   प्रोफ़ेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली
7. डॉ. अनिरुद्ध राय
   अवकाशप्राप्त प्रोफ़ेसर, रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली
8. डॉ. प्रभात कुमार
   प्रवाचक, हंसराज कालेज
   दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
9. डॉ. रमेश दवे
   एल.आई.जी.-276
   कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल
10. डॉ. नीरा नारंग
    वरिष्ठ प्रवक्ता, केंद्रीय शिक्षा संस्थान
    दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
11. डॉ. सुरेश पंत
    अवकाशप्राप्त प्रवक्ता
    रा.उ.मा. बाल विद्यालय,
    जनकपुरी, दिल्ली
12. श्री प्रभाकर द्विवेदी
    अवकाशप्राप्त मुख्य संपादक
    रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
13. डॉ. कमल सत्यार्थी
    अवकाशप्राप्त उपप्रधानाचार्य
    सरदार पटेल विद्यालय, दिल्ली
14. कु. कुसुम लता अग्रवाल
    टी.जी.टी., सर्वोदय बाल विद्यालय
    रमेश नगर, दिल्ली
15. श्री अमर गोस्वामी
    स्वतंत्र लेखक, बी.एफ. 5 शर्मा मार्किट
    अट्टा, सेक्टर 27, नोएडा
16. श्री अशोक शुक्ल
    टी.जी.टी., सर्वोदय सहशिक्षा विद्यालय
    एफ.यू. ब्लाक, पीतमपुरा, दिल्ली
17. मो. इमरान
    टी.जी.टी., एंग्लो-अरेबिक उ.मा.विद्यालय
    अजमेरी गेट, दिल्ली
18. श्री सत्यनारायण शर्मा
    पी.जी.टी., केंद्रीय विद्यालय, ए.जी.सी.आर.
    कालोनी, दिल्ली
19. डॉ. राम निवास
    प्रवक्ता, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    रा.शै.अ.प्र.प., अजमेर
20. कु. इंद्रा सक्सेना
    पी.जी.टी., डी.एम. स्कूल, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
    अजमेर

रा.शै.अ.प्र.प. संकाय

1. डॉ. सत्येंद्र वर्मा, *प्रोफ़ेसर*
2. डॉ. प्रमोद दुबे, *प्रवक्ता*
3. डॉ. (कु) स्नेह लता प्रसाद
   प्रवाचक **(समन्वयक)**

विषय-सूची

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे, और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू सके।

1 कोटर और कुटीर

सियारामशरण गुप्त

कोटर

दोपहरी का समय था। सूर्य अग्नि-शलाकाओं से पृथ्वी का शरीर दग्ध कर रहा था। वृक्षों के पत्ते निस्पंद थे। मानो किसी और भयंकर कांड की आशंका से साँस-सी साधे खड़े हैं। इसी समय अपने छोटे-से कोटर के भीतर बैठे हुए चातक-पुत्र ने कहा, "पिता !"

बाहर की सहज स्निग्ध वनस्थली की वर्तमान रूखेपन की तरह ही वह स्वर कुछ नीरस था। चातक ने अपनी चोंच कुमार की पीठ पर फेरते हुए प्यार से कहा, "क्या है बेटा?"

"है और क्या? प्यास के मारे चोंच तक प्राण आ गए हैं।"

"बेटा, अधीर न हो। समय सदा एक-सा नहीं रहता।"

"तो यही तो मैं भी कहता हूँ – समय सदा एक-सा नहीं रहता। पुरानी बातें पुराने समय के लिए थीं। आप अब भी उन्हें इस तरह छाती से चिपकाए हुए हैं जिस तरह बानरी मरे बच्चे को चिपकाए रहती है। घनश्याम की बाट आप जोहते रहिए। अब मुझसे यह नहीं सध सकता।"

"घनश्याम के सिवा हम और किसी का जल ग्रहण नहीं करते। यही हमारे कुल का व्रत है। इस व्रत के कारण अपने गोत्र में न तो किसी की मृत्यु हुई और न कोई दूसरा अनर्थ।"

"आप कहते हैं, कोई अनर्थ नहीं हुआ, मैं कहता हूँ, प्यास की इस यंत्रणा से बढ़कर और अनर्थ क्या होगा? जहाँ से भी होगा, मैं जल ग्रहण करूँगा ही।"

चातक सिहरकर पंख फड़फड़ाने लगा। मानो उसने उन अश्रव्य वचनों और कानों के बीच में कोलाहल की परिखा-सी खड़ी कर देनी चाही। थोड़ी देर तक चुप रहकर वह बोला, "बेटा धैर्य रख। अपने इस व्रत के कारण ही पानी बरसता है और धरती माता की गोद हरी-भरी होती है। यह व्रत इस तरह नष्ट कर देने की वस्तु नहीं।"

लड़के ने कहा, " व्रत-पालन करते हुए इतने दिन तो हो गए, पानी का कहीं चिह्न तक नहीं है। गरमी ऐसी पड़ रही है कि धरती के नदी-नाले सब सूख गए। फिर सूर्य के और निकट रहने वाले आकाश के मेघों में पानी टिक ही कैसे सकता है?"

"बेटा, पृथ्वी का यह निर्जल उपवास है। इसी पुण्य से उसे जीवनदान मिलेगा। भोजन का पूरा स्वाद और पूरी तृप्ति पाने के लिए थोड़ी-सी क्षुधा सहन करना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है।"

"पिताजी, मैं थोड़ी-सी क्षुधा से नहीं डरता। परंतु यह भी नहीं चाहता कि क्षुधा-ही-क्षुधा सहन करता रहूँ। मैं ऐसा व्रत व्यर्थ समझता हूँ। देवताओं का अभिशाप लेकर भी मैं इसे तोड़ूँगा। घनश्याम को भी तो सोचना चाहिए था कि उनके बिना किसी के प्राण निकल रहे हैं। आदमी ने मेघों पर अविश्वास करके कृषि की रक्षा के लिए नहर, तालाब और कुओं का बंदोबस्त कर लिया है। कृषि ने आपकी तरह सिर नहीं हिलाया कि मैं तो घनश्याम के सिवा और किसी का जल नहीं छुऊँगी। हमीं क्यों इस तरह कष्ट सहें? आप चाहें रखें या छोड़ें, मैं यह झंझट न मानूँगा।"

चातक ने देखा मामला बेढब हुआ चाहता है। यह इस तरह न मानेगा। कहा, "यह बताओ, तुम जल कहाँ से ग्रहण करोगे?"

चातक-पुत्र चुप। उसने अभी तक इस बात पर विचार ही नहीं किया था। वह सोचता था, जिस प्रकार लाखों जीव-जंतु जल पीते हैं उसी प्रकार मैं भी पिऊँगा। परंतु वह प्रकार कैसा है, यह उसकी समझ में न आया था।

लड़के को चुप देखकर पिता ने समझा कमज़ोरी यहीं है। वह जानता था कि कमज़ोरी के ऊपर से ही आक्रमण करना विजय की पहली सीढ़ी है। बोला, "चुप कैसे रह गए? बताओ, तुम जल कहाँ से ग्रहण करोगे?"

हिचकिचा कर अपनी बात स्वयं ही खंड-खंड करते हुए लड़के ने कहा, "जहाँ से और दूसरे ग्रहण करते हैं, वहीं से मैं भी करूँगा।"

पिता ने कहा – "पड़ोस में वह पोखरी है। अनेक पशु-पक्षी और आदमी भी वहाँ जल पीते हैं। तुम वहाँ जल पी सकोगे? बोलो, है हिम्मत?"

चातक-पुत्र को उस पोखरी के स्मरण से ही फुरहरी आ गई। अह, उसमें कितनी गंदगी है ! सूखे पत्ते, डंठल आदि गिरकर उसमें सड़ते रहते हैं। कीड़े कुलबुलाते हुए उसमें साफ़ दिखाई दे सकते हैं। लोग उसमें कपड़े निखारने आते हैं या गंदे करने, कई बार सोचने पर भी वह समझ न सका था। एक बार एक आदमी को अँजुली से पानी पीते देख उसने पिता से कहा था, "देखो पिताजी, ये कैसे घृणित जीव हैं !" अवश्य ही उसने अपने व्रत का ज़िक्र उस समय नहीं किया था, परंतु उसके मन में उसी का गर्व छलक उठा था। अब इस समय वह पिता से कैसे कहे कि मैं उस पोखरी का पानी पिऊँगा?

चातक बोला, "बेटा, अभी तुम नासमझ हो ! चाहे जहाँ से पानी ग्रहण करना इस समय तुम आसान समझ रहे हो, परंतु जब इसके लिए बाहर निकलोगे तब तुम्हें मालूम पड़ेगा। हमारी प्यास के साथ करोड़ों की प्यास है और तृप्ति के साथ करोड़ों की तृप्ति। तुझसे अकेले तृप्त होते कैसे बनेगा?"

चातक-पुत्र इस समय अपने हठ को पुष्ट करने वाली कोई युक्ति सोच रहा था। पिता की बात बिना सुने वह बोल उठा, "मैं गंगा-जल ग्रहण करूँगा।"

चातक ने कहा, "गंगाजी तो यहाँ से पाँच दिन की उड़ान पर हैं। तू नहीं मानता तो जा। परंतु यदि तूने और कहीं एक बूँद भी ली, तो हमें मुँह न दिखाना !"

चातक-पुत्र प्रणाम करके फुर्र से उड़ गया।

कुटीर

बुद्धन का कच्चा खपरैल का घर था। छोटी-छोटी दो कोठरियाँ, फिर उन्हीं के अनुरूप आँगन और उसके आगे पौर। पुराना छप्पर नीचे झुककर घर के भीतर आश्रय लेने की बात सोच रहा था। जीर्ण-शीर्ण दीवारें रोशनदान न होने की साध दरारों के 'दत्तक' से पूरी किया चाहती थीं।

उस घर में और कुछ हो या न हो, आँगन के बीच, चातक-पुत्र के विश्राम करने योग्य नीम का एक वृक्ष था। तीसरी उड़ान की थकान मिटाने के लिए वह उसी पर उतरा।

नीचे वृक्ष की छाया में बुद्धन लेटा हुआ था। अवस्था उसकी पचास के ऊपर थी। फिर भी अभी कुछ दिन पहले तक, उसके पैरों में जीवन-यात्रा की इतनी ही मंज़िल तय करने योग्य शक्ति और मालूम होती थी। एक दिन एकाएक पक्षाघात ने उसे अचल कर दिया। जीवन और मृत्यु ने आपस में सुलह करके मानो आधे-आधे शरीर का बँटवारा कर लिया। स्त्री पहले ही गत हो चुकी थी। घर में 15-16 वर्ष का एक मात्र पुत्र, गोकुल ही अवशिष्ट था। उसी के सहारे उसके दिन पूरे हो रहे थे।

गोकुल एक जगह काम पर जाता था। काम करके प्रतिदिन संध्या-समय तक लौट आता था। आज अभी तक नहीं आया था, इसलिए बुद्धन उसके लिए छटपटा रहा था। ऊपर आकाश में तारे छिटक आए थे। इधर-उधर चारों ओर सन्नाटा था और घर में अकेला बुद्धन। यद्यपि उसमें खाट के नीचे उतरने तक की शक्ति नहीं थी, तो भी उसका मन न जाने कहाँ-कहाँ चौकड़ी भर रहा था। गोकुल सवेरे थोड़े-से चने खाकर काम पर गया था। बुद्धन के लिए भी कुछ चने और पीने का पानी यथास्थान रख गया था। आज खाने के लिए घर में और कुछ था ही नहीं। कह गया था, शाम को मजूरी के पैसों का आटा लाकर रोटी बनाऊँगा। परंतु आज वह अभी तक नहीं आया था। अनेक आशंकाओं से बुद्धन का मन चंचल था। जो समय आनंद की स्निग्ध शीतल छाया में, शीतकाल के दिन की

तरह, मालूम भी नहीं होने पाता और निकल जाता है, वही दुख की दाहक ज्वाला में निदाघ के दीर्घ दिनों की भाँति अकाट्य हो उठता है। रात बहुत नहीं बीती थी, परंतु बुद्धन को मालूम हो रहा था कि बरसों का समय हो गया। बार-बार अपने कान खड़े करके रात के उस सन्नाटे में वह गोकुल के पद-शब्द सुनने का प्रयत्न कर रहा था।

बड़ी देर बाद उसकी प्रतीक्षा सफल हुई। किवाड़ खुलने की आवाज़ सुनकर वह चौंका। वास्तव में यह गोकुल ही था। उसने कहा, "कौन गोकुल ! बेटा आज बड़ी देर लगाई।"

गोकुल धीरे से पिता की खाट के पास आकर रोने लगा।

बुद्धन ने घबड़ाकर पूछा, "क्या हुआ, बेटा क्या हुआ?"

"आज मजूरी नहीं मिली। अब कैसे चलेगा?"

"ऐं, मजूरी नहीं मिली। फिर इतनी देर क्यों हुई?"

प्रकृतिस्थ होकर गोकुल ने उसे अपना हाल सुनाया।

सवेरे घर से निकलते ही गोकुल को सामने खाली घड़ा मिला। देखकर उसके पैर ढीले पड़ गए। सोचा – आज भगवान ही मालिक है। काम पर पहुँचकर उसने देखा – ओवरसियर साहब आज कुछ ज़्यादा खफ़ा हैं। इंजीनियर साहब काम देखने आए थे। जान पड़ता है, काम देखने की जगह वे ओवरसियर साहब को ही देख गए थे। अन्याय का यह बोझ उन्होंने दिन भर मज़दूरों पर अच्छी तरह उतारा। शाम को मज़दूरी देने के समय भी साफ़ इनकार कर दिया – आज दाम नहीं दिए जाएँगे। उस अदालत के फ़ैसले की तरह, जिसकी कहीं अपील नहीं हो सकती, ओवरसियर साहब का हुक्म मानकर मज़दूर अपने-अपने घर लौट गए।

गोकुल लौटा चला आ रहा था कि एक जगह उसे रास्ते में कुछ पड़ा हुआ दिखाई दिया। पास पहुँचने पर मालूम हुआ, रुपए-पैसे रखने का बटुआ है। उठाकर देखा तो काफ़ी वज़नदार था। वह सोच में पड़ गया – इसे खोल कर देखना चाहिए या नहीं। न देखने का निश्चय ही उसे दृढ़ करना पड़ा। कौतूहल-निवृत्ति करने के लिए उसने उसे टटोला। टटोलने पर मालूम हुआ रुपए हैं और बहुत कम भी नहीं।

थोड़ी देर तक वहीं खड़ा-खड़ा सोचता रहा। इसका क्या करूँ? उसके पिता ने उसे अब तक जो कुछ सिखाया था, उसने उसे इस बात के सोचने का अवसर ही नहीं दिया कि बटुआ अपने पास रख ले। वह यही सोच रहा था कि यह बटुआ किसका है? जब उसे मालूम होगा कि उसका बटुआ खो गया है तब उसकी क्या दशा होगी ! रुपए-पैसे का क्या मूल्य है, यह बात वह कुछ दिनों में ही अच्छी तरह जान गया था। उस व्यक्ति की उस समय की दशा का विचार करके वह इस प्रकार सिहर उठा, मानो उसी का बटुआ खो गया हो।

उसे ध्यान आया कि कुछ दूर उसने एक गाड़ी जाती हुई देखी थी। उस पर कान में मोती-पिरोई सोने की बाली पहने हुए एक महतो बैठे थे। संभव है यह बटुआ उन्हीं का हो। और किसी के पास इतने रुपए होना आसान भी नहीं है। यहाँ कुएँ पर गाड़ी रोककर उन्होंने पानी पिया होगा और आग जला कर तमाखू भरी होगी। एक जगह आग जलाई जाने के चिह्न मौजूद थे। उसने इस बात पर विचार ही नहीं किया कि गाड़ी तक जाने में कितना समय लगेगा और वह दौड़ पड़ा।

लगभग आधे घंटे के परिश्रम से वह उस गाड़ी के पास पहुँच गया। गोकुल ने हाँफते-हाँफते पूछा, "महतो, तुम्हारा कुछ खो तो नहीं गया?"

महतो ने चौंककर गाड़ी में इधर-उधर देखा। साथ ही जेब पर हाथ रखा तो पाषाण की तरह निस्पंद हो गए। गोकुल से महतो की वह अवस्था देखी न गई। बटुआ दिखाकर उसने झट से प्रश्न कर दिया, "यह तुम्हारा है?"

एक क्षण में ही जीवन और मृत्यु का द्वंद्व-सा हो गया। मानो बिजली के खटके ने प्रकाश बुझाकर फिर से उद्दीप्त कर दिया हो। महतो ने कहा, "भगवान तुझे सुखी रखें भैया ! इसे कहाँ पाया?"

"रास्ते में पड़ा था। इसमें कितने रुपए हैं?"

महतो ने हिसाब लगाकर बताया, "बयालीस रुपए, एक अठन्नी, एक घिसी हुई बेकाम दुअन्नी, दस या बारह आने पैसे, एक कागज़, एक चाँदी का छल्ला..."

गोकुल ने बटुआ खोल कर रुपए गिने। सब ठीक निकले। बटुआ हाथ में लेकर महतो की आँखों में आँसू भर आए। बोले, "इतनी बड़ी रकम पाकर भी जिसे

उसका लोभ न हो, भैया मैंने ऐसा आदमी आज तक नहीं देखा। यदि किसी और को यह बटुआ मिलता तो मेरा मरण हो जाता। मेरा रोम-रोम असीस रहा है, भगवान तुम्हें सदा सुखी रखें....।" यह कहकर महतो ने बटुए से निकालकर गोकुल को दो रुपए देने चाहे। उसने सिर हिलाकर कहा, "मेरे बप्पा ने किसी से भीख लेने के लिए मुझे मना कर दिया है। मुफ़्त के रुपए मैं न लूँगा।"

महतो के सजल नेत्र विस्मय से खुले ही रह गए। गोकुल थोड़ी ही देर में उस अंधकार में उनकी आँखों से ओझल हो गया।

सब वृत्तांत सुनकर गोकुल अपराधी की भाँति खड़ा-खड़ा बोला, "बप्पा, आज खाने के लिए कुछ नहीं है। महतो से कुछ उधार माँग लाता, तो सब ठीक हो जाता। मेरी समझ में यह बात उस समय आई ही नहीं।"

बुद्धन की आँखों से झर-झर आँसू झरने लगे। गोकुल को अपनी दोनों भुजाओं में भरकर उसने छाती से लगा लिया। आनंदातिरेक ने उसका कंठावरोध कर दिया। उसे मालूम हुआ कि उसके क्षुधित और निर्जीव शरीर में प्राणों का संचार हो गया है। उसे जिस तृप्ति का अनुभव होने लगा वह दो-एक दिन की तो बात ही क्या जीवन भर की क्षुधा शांत कर सकती है। धन-संपत्ति, मान और बड़ाई सब उसे तुच्छ-से प्रतीत होने लगे। मानो एकाएक उसके सब दुख रोग दूर हो गए हैं। अब वह बिना किसी चिंता के मृत्यु का आलिंगन इसी क्षण कर सकता है।

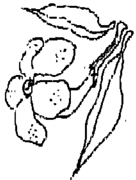
बड़ी देर में अपने को सँभालकर बुद्धन बोला, "अच्छा ही किया बेटा, जो तू महतो से रुपए उधार नहीं लाया। वह उधार माँगना भी एक तरह का माँगना ही होता। भगवान ने तुझे ऐसी बुद्धि दी है, मैं तो यही देखकर निहाल हो गया। दो-एक दिन की भूख हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। जिस तरह चातक अपने प्राण देकर भी मेघ के सिवा किसी दूसरे का जल लेने का व्रत नहीं तोड़ता, उसी तरह तू भी ईमानदारी की टेक न छोड़ना। मुझे मालूम हो गया, यह तू मुझसे भी अच्छी तरह जानता है। फिर भी कहता हूँ, सदा ऐसी ही मति रखना। चाहे जितनी बड़ी विपत्ति पड़े, अपनी नीयत न डुलाना।"

ऊपर चातक-पुत्र सुन रहा था। उसकी आँखों से भी झर-झर आँसू झरने लगे। बड़ी कठिनता से वह रात बिता सका। पौ फटते ही बड़े सवेरे वह फिर उड़ा। परंतु आज वह विपरीत दिशा को चला, उसी दिशा को, जिधर से वह आया था। उसकी उड़ान पहले से तेज़ हो गई थी। फिर भी अपने कोटर तक पहुँचने में उसे चार दिन की जगह सात दिन लग गए। दूसरे दिन से ही मेघों ने उठकर ऐसी झड़ी लगा दी कि बीच-बीच में कई जगह रुककर ही वह वहाँ तक पहुँच सका।

बोध-प्रश्न

1. चातक ने अपने तृषित पुत्र को किस व्रत की याद दिलाई?
2. *"जहाँ से भी होगा, मैं जल ग्रहण करूँगा ही"* – पुत्र *का यह कथन सुनकर चातक* सिहरकर पंख क्यों फड़फड़ाने लगा?
3. चातक-पुत्र ने अपने पिता के तर्कों को किस प्रकार काटा?
4. "हमारी प्यास के साथ करोड़ों की प्यास है और तृप्ति के साथ करोड़ों की तृप्ति। तुझसे अकेले तृप्त होते कैसे बनेगा?" इन पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।
5. गोकुल के समय से घर न लौटने पर बुद्धन का मन आशंकित क्यों था?
6. गोकुल के देर से घर लौटने का क्या कारण था?
7. भूखे बुद्धन को तृप्ति का अनुभव क्यों हुआ?
8. चातक-पुत्र अपने कोटर की ओर क्यों लौट चला?
9. यह कहानी दो कहानियों को मिलाकर लिखी गई है। ये दोनों कहानियाँ किस प्रकार एक दूसरे की पूरक हैं, स्पष्ट कीजिए।

2 सुभाष चंद्र बोस का पत्र एन.सी.केलकर के नाम



सुभाष चंद्र बोस

प्रिय श्री केलकर

मैं पिछले कुछ महीनों से आपको लिखने की सोचता रहा हूँ जिसका कारण केवल यह रहा है कि मैं आप तक ऐसी जानकारी पहुँचा दूँ जिसमें आपको दिलचस्पी होगी। मैं नहीं जानता कि आपको मालूम है या नहीं कि मैं यहाँ गत जनवरी से कारावास में हूँ। जब बरहमपुर जेल (बंगाल) से मुझे मांडले जेल के लिए स्थानांतरण का आदेश मिला था तब मुझे यह स्मरण नहीं आया था कि लोकमान्य तिलक ने अपने कारावास काल का अधिकांश भाग मांडले जेल में ही गुज़ारा था। यहाँ आने पर मुझे पता चला कि इस चहारदीवारी में, यहाँ के बहुत ही हतोत्साहित कर देने वाले परिवेश में स्वर्गीय लोकमान्य ने अपने सुप्रसिद्ध 'गीता रहस्य' ग्रंथ का प्रणयन किया था जिसने मेरी नम्र राय में उन्हें शंकर और रामानुज जैसे प्रकांड भाष्यकारों की श्रेणी में स्थापित कर दिया है।

जिस वार्ड में लोकमान्य रहते थे, वह आज तक सुरक्षित है, यद्यपि उसमें फेरबदल किया गया है और उसे बड़ा बनाया गया है। हमारे अपने वार्ड की तरह वह लकड़ी के तख्तों से बना है जिसमें गरमी में लू और धूप से,वर्षा में पानी से, शीत ऋतु में सरदी से तथा सभी ऋतुओं में धूलभरी हवाओं से बचाव नहीं हो पाता। मेरे यहाँ पहुँचने के कुछ ही क्षण बाद मुझे उस वार्ड का परिचय दिया गया। मुझे यह बात अच्छी नहीं लग रही थी कि मुझे भारत से निष्कासित कर दिया गया था, लेकिन मैंने भगवान को धन्यवाद दिया कि मांडले में अपनी मातृभूमि और स्वदेश से बलात अनुपस्थिति के

बावजूद मुझे पवित्र स्मृतियाँ राहत और प्रेरणा देंगी। ऐसी अन्य जेलों की तरह यह एक ऐसा तीर्थस्थल है जहाँ भारत का एक महानतम सपूत लगातार छह वर्ष तक रहा था।

हम सभी जानते हैं कि लोकमान्य ने कारावास में छह वर्ष बिताए। लेकिन मुझे विश्वास है कि बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि उस अवधि में उन्हें किस हद तक शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से गुज़रना पड़ा था। वे यहाँ एकदम अकेले रहे और उन्हें कोई बौद्धिक स्तर का साथी नहीं मिला। मुझे विश्वास है कि उन्हें किसी अन्य बंदी से मिलने-जुलने नहीं दिया जाता था। उनको सांत्वना देने वाली एकमात्र वस्तु किताबें थीं और वे एक कमरे में एकदम एकाकी रहते थे। यहाँ रहते हुए उन्हें दो या तीन भेंटों से अधिक का मौका नहीं दिया गया और ये भेंटें भी पुलिस और जेल अधिकारियों की उपस्थिति में हुई होंगी जिससे वे कभी भी खुलकर और हार्दिकता से बात नहीं कर पाए होंगे।

उन तक कोई भी अखबार नहीं पहुँचने दिया जाता था। उनकी जैसी प्रतिष्ठा और स्थिति वाले नेता को बाहरी दुनिया के घटनाचक्रों से एकदम अलग कर देना एक तरह की यंत्रणा ही है और इस यंत्रणा को जिसने भुगता है, वही जान सकता है। इसके अलावा उनके कारावास की अधिकांश अवधि में देश का राजनैतिक जीवन बहुत मंदगति से खिसक रहा था और इस विचार ने उन्हें कोई संतोष नहीं दिया होगा कि जिस उद्देश्य को उन्होंने अपनाया था, वह उनकी अनुपस्थिति में आगे नहीं बढ़ रहा है।

उनकी शारीरिक यंत्रणा के बारे में जितना ही कम कहा जाए, बेहतर होगा। वे दंडसंहिता के अंतर्गत बंदी थे और इस प्रकार आज के राजबंदियों की अपेक्षा कुछ मायनों में उनकी दिनचर्या कहीं अधिक कठोर रही होगी। इसके अलावा उन्हें मधुमेह की बीमारी थी। जब लोकमान्य यहाँ थे, मांडले का मौसम तब भी प्रायः ऐसा रहा होगा जैसा वह आजकल है और आज नौजवानों को शिकायत है कि वहाँ की जलवायु शिथिल कर देने वाली और मंदाग्नि तथा गठिया को जन्म देने वाली है और

धीरे-धीरे पर अटूट रूप में वह व्यक्ति की जीवन-शक्ति को सोख लेती है, तो लोकमान्य ने,जो वयोवृद्ध थे, कितना अधिक कष्ट झेला होगा।

लेकिन इस कारागार की चहारदीवारियों में उन्होंने क्या यातनाएँ सहीं, इसके विषय में लोगों को बहुत कम जानकारी है। कितने लोगों को पता होता है उन अनेक छोटी-छोटी बातों का जो किसी बंदी के जीवन में सूइयों की-सी चुभन बन जाती हैं और जीवन को दूभर बना देती हैं। वे गीता की भावना में मग्न रहते थे और शायद इसीलिए दुख और यंत्रणाओं से ऊपर रहते थे। यही कारण है कि उन्होंने उनके बारे में किसी से कभी एक शब्द नहीं कहा।

समय-समय पर मैं इस सोच में डूबता रहा हूँ कि कैसे लोकमान्य को अपने बहुमूल्य जीवन के छह लंबे वर्ष इन परिस्थितियों में बिताने के लिए विवश होना पड़ा था और हर बार मैंने अपने आपसे पूछा कि "अगर नौजवानों को इतना कष्ट महसूस होता है तो महान लोकमान्य को अपने समय में कितनी पीड़ा सहनी पड़ी होगी, जिसके विषय में उनके देशवासियों को कुछ भी पता नहीं रहा होगा।" यह विश्व भगवान की कृति है लेकिन जेलें मानव के कृतित्व की निशानी हैं। उनकी अपनी एक अलग ही दुनिया है और सभ्य समाज ने जिन विचारों और संस्कारों को प्रतिबद्ध होकर स्वीकार किया है, वे जेलों में लागू नहीं होते। अपनी आत्मा के ह्रास के बिना बंदी-जीवन के प्रति अपने आपको अनुकूल बना पाना आसान काम नहीं है। इसके लिए हमें पिछली आदतें छोड़नी होती हैं और फिर भी स्वास्थ्य और स्फूर्ति बनाए रखनी होती है, सभी तरह के नियमों के आगे नत होना होता है और फिर भी आंतरिक प्रफुल्लता अक्षुण्ण रखनी होती है। दास-वृत्ति ठुकरानी होती है और मानसिक संतुलन अडिग बनाए रखना होता है। केवल लोकमान्य जैसा दार्शनिक ही, जिसे अदम्य इच्छाशक्ति का वरदान मिला था, उस बंदी जीवन के शक्ति हननकारी प्रभावों से बच सकता था, उस यंत्रणा और दासता के बीच मानसिक संतुलन बनाए रख सकता था और 'गीता भाष्य' जैसे विशाल एवं युग-निर्माणकारी ग्रंथ का प्रणयन कर सकता था।

अगर किसी को प्रत्यक्ष अनुभव पाना है कि इतने ज़्यादा प्रतिकूल, शक्तिहारी और दुर्बल बना देने वाले वातावरण में लोकमान्य के 'गीता भाष्य' जैसे पांडित्यपूर्ण एवं

महान ग्रंथ की रचना करने के लिए कितनी प्रबल इच्छाशक्ति, साधना की गहराई एवं सहनशीलता अपेक्षित है, तो जेल में आकर रहना चाहिए। जहाँ तक मेरी अपनी बात है, मैं जितना ही इस विषय में चिंतन करता हूँ उतना ही ज़्यादा मैं उनके प्रति आदर और श्रद्धा में डूब जाता हूँ। आशा करता हूँ कि मेरे देशवासी लोकमान्य की महत्ता को आँकते हुए इन सभी तथ्यों को भी दृष्टिपथ में रखेंगे। जो महापुरुष मधुमेह से पीड़ित होने के बावजूद – इतने सुदीर्घ कारावास को झेलता गया और फिर भी जिसने अपनी समस्त बौद्धिक क्षमता एवं संघर्ष-शक्ति को अक्षुण्ण बनाए रखा और जिसने उन अंधकारमय दिनों में अपनी मातृभूमि के लिए ऐसी अमूल्य भेंट तैयार की, उसे विश्व के महापुरुषों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में स्थान मिलना चाहिए।

लेकिन लोकमान्य ने प्रकृति के जिन अटल नियमों से अपने बंदी जीवन के दौरान टक्कर ली थी, उनको अपना बदला लेना ही था और अगर मैं कहूँ तो मेरा विश्वास है कि जैसे देशबंधु के शरीरांत का क्रम अलीपुर केंद्रीय कारागार में आरंभ हो गया था वैसे ही लोकमान्य ने जब मांडले को अंतिम नमस्कार किया था तो उनके जीवन के दिन गिने-चुने ही रह गए थे। निस्संदेह यह एक गंभीर दुख का विषय है कि हम अपने महानतम पुरुषों को इस प्रकार खोते रहे लेकिन मैं यह भी सोचता हूँ कि क्या वह दुखद दुर्भाग्य किसी न किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता था।

आदरपूर्वक
आपका स्नेहभाजक
सुभाष सी.बोस

बोध-प्रश्न

1. सुभाष चंद्र बोस को मांडले जेल का परिवेश कैसा लगा?
2. भारत से निष्कासित कर दिए जाने पर भी सुभाष चंद्र बोस ने भगवान को धन्यवाद क्यों दिया?

3. मांडले जेल में लोकमान्य तिलक के लिए पुस्तकें ही सांत्वना की एकमात्र वस्तु क्यों थीं?
4. लोकमान्य तिलक को अपने छह वर्ष के कारावास के दौरान किन-किन शारीरिक और मानसिक यंत्रणाओं से गुज़रना पड़ा होगा?
5. लोकमान्य तिलक ने अपने दुख और यंत्रणाओं के बारे में किसी से एक शब्द भी क्यों नहीं कहा?
6. "गीता रहस्य" जैसे महान ग्रंथ की रचना से लोकमान्य तिलक के किन गुणों पर प्रकाश पड़ता है?
7. सुभाष चंद्र बोस के अनुसार लोकमान्य तिलक की कौन-सी अमूल्य भेंट उन्हें विश्व के महापुरुषों के समकक्ष बनाती है?

3 | काश, मैं मोटर साइकिल होता



श्रीलाल शुक्ल

मैंने धीरे-धीरे आँखें खोलीं, पूछा, "मैं कहाँ हूँ?"

मेरे और चमकीले आसमान के बीच एक लंबा-चौड़ा चेहरा था, उसी ने जवाब दिया, "नाली में।"

तब मैंने दूसरा सवाल किया, "मुझे क्या हुआ है?"

"तुम्हारी मोटर साइकिल टूट गई है।" ज़वाब मिला।

सुनते ही मेरी बेहोशी गायब हो गई, मैं पूरी तौर से होश में आ गया। एक दरकी हुई टाँग, एक टूटी हुई बाँह, सनसनाती खोपड़ी, रुआँसी शक्ल – पूरी तौर से होश में आ जाने का शायद यही मतलब था।

मैंने पूछा, "मेरी मोटर साइकिल को क्या हुआ है?"

"शायद तुम्हारा दायाँ हाथ टूट गया है।" भीड़ में से किसी ने कहा। हुआ यह था कि अब तक मुझे जो भूत-प्रेत और चुड़ैलें हवा में तैरती नज़र आ रही थीं उन्हीं को लेकर अब यह हमदर्द इनसानों की भीड़ बन गई थी।

तो ऐसा ही हुआ था। यानी मेरा दायाँ हाथ टूट गया था। दरअसल, कुछ उससे भी ज़्यादा हुआ था। यानी टाँग की एक हड्डी भी दरक गई थी, कंधे को भी शायद कुछ हुआ था, सिर चकरा रहा था। और गंदे पानी की एक नाली मुझमें थी, मैं नाली में था।

हमदर्द लोगों ने सहारा देकर नाली से बाहर निकाला। मैं उसी के किनारे कूड़े के ढेर जैसा पसर गया। तब तक दूर किसी मोटर का हार्न सुनाई पड़ा। लंबे-चौड़े चेहरे ने कहा, "वाह ! ऐंबुलेंस आ गई !"

अब तक घटना-चक्र कुछ-कुछ समझ में आ चुका था। हुआ यह था कि मैं आज इस बसंती हवा में अपनी मोटर साइकिल से इस अजनबी सड़क पर आ निकला था और तभी कोई ट्रक मेरी मोटर साइकिल को पीछे से छूता हुआ निकल गया था। ट्रक के लिए यह मामूली-सी घटना थी, मगर वही मेरे और मेरी मोटर-साइकिल के लिए दुर्घटना बन गई थी।

जो भी हो, इस वक्त मेरी मोटर साइकिल मुझसे पाँच गज़ दूर टूटी-फूटी हालत में पड़ी थी। मैं नाली के किनारे का ढेर था। हमदर्द भीड़ हमारे चारों ओर थी, किसी ने कहीं से शहर के अस्पताल में ऐंबुलेंस के लिए फ़ोन कर दिया था। ताज्जुब की बात, महज़ इतने से ऐंबुलेंस आ भी गई थी।

ऐंबुलेंस का ड्राइवर बावरदी, बामुलाहिज़ा, होशियार किस्म का आदमी निकला। उसने उस ढेर को गौर से देखा जो मैं था, फिर दूसरे ढेर को भी उतने ही गौर से देखा जो मेरी मोटर साइकिल थी। फिर उसने अपने साथ के एक बाबूनुमा आदमी के साथ कुछ विचार-विमर्श करना शुरू कर दिया। बाबू कोई नक्शा देख रहा था। ड्राइवर भी उस नक्शे पर झुक गया। फिर सीधा होकर वह अपनी सीट पर जाकर बैठ गया। देखते-देखते उसने गाड़ी स्टार्ट कर दी। कोई कुछ कहता, इसके पहले ही गाड़ी जिधर से आई थी, उधर ही चली गई।

लंबे-चौड़े चेहरेवाले ने इस बार कुछ ज़्यादा ही मुसकराकर मुझे समझाया, "घबराओ नहीं भाई, झगड़ा जुरिस्डिक्शन का है।"

"जुरिस्डिक्शन?"

"यानी अधिकार-क्षेत्र? ड्राइवर कहता है कि आप जिस नाली में गिरे हैं, वह प्रतापगढ़ ज़िले में है। ऐंबुलेंस इलाहाबाद की है। वह प्रतापगढ़ नहीं जा सकती। आपको ले जाने के लिए प्रतापगढ़ वाली ऐंबुलेंस को बुलाना चाहिए था।"

मैंने कराहते हुए कहा," भाई साहब, आप एक बैलगाड़ी का इंतज़ाम कर दें। उस पर मुझे और मेरी मोटर साइकिल को लदवाकर प्रतापगढ़ भेज दीजिए। मैं वहीं का रहने वाला हूँ।"

वह बोला, "आपको तो प्रतापगढ़ भेज सकता हूँ, पर भाई, मोटर साइकिल आपके साथ कैसे जा सकती है?"

"क्यों भाई?"

"इसलिए भाई कि तुम जिस नाली में पड़े हो वह तो प्रतापगढ़ में है पर मोटर साइकिल जहाँ पड़ी है, वह ज़मीन इलाहाबाद ज़िले की है। मोटर बीमावाले इलाहाबाद से आकर इसे ले जाएँगे। इसकी मरम्मत इलाहाबाद में होगी, आपकी प्रतापगढ़ में।"

मैं प्रतापगढ़ भी नहीं जा पाया। लंबे-चौड़े चेहरे वाले आदमी का नाम भारत जी था। भारत जी मुझे अपने घर ले आए। घर नाली के पास ही था। बोले, "आप इस वक्त प्रतापगढ़ जाने की हालत में नहीं हैं। आपका यहीं इलाज करा दूँगा। आपकी मोटर साइकिल मैंने इलाहाबाद के बीमा ऑफ़िसर के हवाले कर दी है। आप यहीं रुककर तंदुरुस्ती बनाइए और आराम से मोटर साइकिल का इंतज़ार कीजिए।"

मैंने पूछा, "चाय मिल सकती है? "

वे अकेले आदमी थे। उन्होंने मुझे रसोईघर का रास्ता बता दिया।

कराहता, लुढ़कता, टटोलता हुआ मैं जब वहाँ जाकर अपनी चाय बनाने लगा, तो ड्राइंगरूम से भारत जी की आवाज़ आई,"एक प्याला चाय मेरे लिए बना लीजिएगा। प्याले जूठे पड़े हैं। पहले उन्हें साफ़ कर लेना।"

इसके बाद मेरे और भारत जी के रिश्ते साफ़ हो गए। उन्होंने जर्राह को बुलाकर मेरे जिस्म में कुछ खपच्चियाँ बँधवाई। मैं रोज़ उनके प्याले साफ़ करने लगा, चाय बनाने लगा, फिर उनका खाना भी।

इस तरह भारत जी की सेवा और मोटर साइकिल का इंतज़ार करते हुए डेढ़ महीना बीत गया। तब एक दिन इलाहाबाद का बीमा ऑफ़िसर मेरी मोटर साइकिल के साथ प्रकट हुआ। गाड़ी का कायाकल्प हो चुका था। वह नई गाड़ी से भी ज़्यादा नई लगती थी। कायाकल्प का खर्च बीमावालों ने ही उठाया था। खर्च में कुछ फर्ज़ी

चीज़ें जोड़कर उन्होंने एक अच्छी-खासी रकम नकद भी निकाल ली थी। उसका दो-तिहाई मिस्त्री और बीमा-अफ़सर में बँट चुका था। एक तिहाई मेरे और भारत जी के बीच बँटा।

मेरे सामने चमचमाती हुई मोटर साइकिल थी, मुट्ठी में कड़कड़ाते नोटों का एहसास था। उससे मेरे कंधे का दर्द जाता रहा, हाथ की हड्डी एक मिनट में जुड़ गई। टाँग की घिसटन गायब हो गई। भारत जी ने मेरा कंधा थपथपाया, बीमा-अफ़सर ने मुझे बधाई दी, एक व्याख्यान भी दिया। कहा, "जब तक मैं इलाहाबाद में हूँ, आप प्रतापगढ़ के चक्कर में मत पड़िए। अगली बार दुर्घटना हो तो आप इलाहाबाद ज़िले में ही गिरिएगा। प्रतापगढ़ वालों का कोई भरोसा नहीं। इलाहाबाद में हम सब ठीक कर देंगे। आपकी मोटर साइकिल के चाहे सौ टुकड़े हो जाएँ, मैं इसका फिर से कायाकल्प करा दूँगा। और आप अपनी फ़िक्र तो करें ही नहीं। आपकी सारी दिक्कतें जीवन बीमा वाले सुलझा देंगे। आपको हमारी टेरिटरी में कभी कोई परेशानी न होगी। एक्सिडेंट में आप मर जाएँ, तब भी कोई बात नहीं। यकीन मानें, आपके मर जाने पर हम बीमा वाले आपको यानी आपके घरवालों को मालामाल कर देंगे।"

मैंने कहा कुछ नहीं, सिर्फ़ सोचा, मुझसे अच्छी किस्मत तो मेरी मोटर साइकिल की है !

बोध-प्रश्न

1. होश आते ही लेखक ने स्वयं को कहाँ और किस हाल में पाया?
2. नक्शा देखते ही बाबू और ड्राइवर ऐंबुलेंस लेकर क्यों लौट गए?
3. दुर्घटनाग्रस्त लेखक को घर ले जाने से पहले और बाद में भारत जी के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं?
4. अंततः लेखक की मोटर साइकिल का क्या हुआ?

5. बीमा अफ़सर ने यह क्यों कहा कि "अगली बार दुर्घटना हो तो आप इलाहाबाद ज़िले में ही गिरिएगा?"
6. लेखक को यह क्यों लगा कि उसकी मोटर साइकिल की किस्मत उससे अधिक अच्छी है?
7. लेखक ने इस घटना के माध्यम से बीमा अधिकारियों पर क्या व्यंग्य किया है?
8. अधिकार-क्षेत्र के नियम के कारण दुर्घटना में बुरी तरह घायल व्यक्ति को उसके हाल पर छोड़ देना आपकी दृष्टि में कहाँ तक उचित है?

4 ऋण-शोध

ऋता शुक्ल



किसी आदमी की पूरी ज़िंदगी मौत से भी किस कदर बदतर हो सकती है, यह मैंने पहली बार आशुतोष काका के निकट रहकर देखा था। छोटी ही थी, जब बाबूजी ने उन्हें हमसे परिचित कराया था,"बिट्टी और विकास, ये तुम्हारे मास्टर साहब हैं। आज से ही तुम दोनों इनसे पढ़ना शुरू कर दो। चलो, पैर छूकर प्रणाम करो।"

आशुतोष काका की वह निरीह मुद्रा मैं आज तक नहीं भुला पाई हूँ। धूल से सने अपने दोनों पैरों को समेटकर काका,"रहने दो", "रहने दो" कहते हुए बेतरह सकुचा गए थे। झुककर उन्होंने हम दोनों भाई-बहनों के माथे पर हाथ फेरा था। बिना बटन वाले उनके मोटिया कुरते के खुले गले से झाँकता अधमैला जनेऊ बाहर निकल आया था। जनेऊ में काले धागे से बँधी एक छोटी-सी चाबी झूल रही थी। पाँच बरस के विकास ने कौतुकवश उनकी चाबी खींच ली थी,"यह क्या है, मास्साऽऽब?"

बाबूजी ने फ़ौरन टोका था,"काका कहो बेटे, ये तुम्हारे काका लगेंगे।" आशुतोष काका ने हलकी-सी झेंपभरी हँसी हँसकर बाबूजी के सामने सफ़ाई दी थी,"गाँव के विनायक पंडित ने शनि महाराज का प्रकोप बताया है। काला सूता देह से सटा रहे तो...." आशुतोष काका ने तीसरी से नवीं कक्षा तक हमें पढ़ाया था। उन छह-सात वर्षों में विकास की शरारती बुद्धि ने शायद ही कभी उन्हें चैन से बैठने दिया हो.....।

काका की पीठ पर लगातार झूलना और उनके कुरते के झिरझिरे हिस्से में उँगली डालकर ढेर सारे टूटे हुए धागों को बाहर निकालना उसका सबसे मज़ेदार खेल था।

सवाल हल न करने पर कभी-कभी काका कहा करते, "बिट्टी, विकास....! हम तुम दोनों की शिकायत बड़े भैया से कर देंगे ! फिर देखना कैसी कनइटी पड़ेगी।"

उन्हें बातों में बहलाकर रिझाने की कला हमने अच्छी तरह सीख ली थी, "काकाजी, आपने कहा था न, आप हमें लालबहादुर शास्त्री की कहानी सुनाएँगे?"

"हाँ, बेटे...शास्त्री जी बहुत साधारण परिवार से आए थे..."

"वे प्रधानमंत्री कैसे बने?"

"अपनी मेहनत, ईमानदारी और लगन से, बिट्टी !"

"क्या उनका कुरता भी फटा होता था, काका?"

"सवालों पर ध्यान दो, विकास !" काका विकास की ऐसी बातों को जान-बूझकर टालते हुए खुले आसमान की ओर निहारने लगते।

हम नवीं कक्षा में थे, जब आशुतोष काका ने आरा से जाने की तैयारी की थी। बक्सर के किसी मिडिल स्कूल में उन्हें हेडमास्टरी मिल गई थी और वे बाबू जी से विदा माँगने उस दिन हमारे घर आए थे, "सोच रहे हैं कि स्कूल में काम करते-करते पढ़ाई पूरी कर लें। आपकी मदद चाहिए भैया, एम. ए. की किताबों का खरच-बरच...।"

बाबूजी ने उन्हें सहायता का आश्वासन दिया था और काका ने उनके पैर छू लिए थे। विकास के माथे पर हाथ फेरकर आशीष देते वक्त उनकी आँखें नम हो गई थीं, "खूब मन लगाकर पढ़ना बेटे, बिट्टी से लड़ाई मत करना।"

आशुतोष काका के चले जाने के बाद कोई भी मास्टर हमें अच्छा नहीं लगा था और हमने बाबूजी से साफ़ कह दिया था, "हम अपने-आप पढ़ेंगे....।"

एम. ए. पास करने के बाद काका हमारे यहाँ आए थे। विकास ने फाटक पर ही उन्हें देख लिया था,"बिट्टी दी, जल्दी बाहर आओ न, अपने आशुतोष काका आए हैं।"

विकास बड़ी हैरत में था,"काका,काका... आप तो एम. ए. पास करने के बाद भी बिलकुल नहीं बदले।"

"एम. ए. पास करने के बाद आदमी बदल जाता है क्या?"

"गाँव के अपने राजकिशोर भैया भी तो एम. ए. पास हैं। चौड़ी मोहरी की पैंट, छींट की बुश्शर्ट, पतली-नुकीली मूँछ और सुनहला चश्मा...! ...आप भी पैंट पहनिए न, काका ऽऽ! आप तो राजकिशोर भैया से कितने लंबे-चौड़े हैं। आपके ऊपर पैंट-शर्ट खूब जमेगी काका, प्लीज़ ऽऽ!"

विकास के भोले इसरार पर काका एक फीकी हँसी हँसकर टाल गए थे। अम्माँ ने उसे धीरे-से धमकाया था,"कपड़ों की बात करके बराबर काका को परेशान नहीं करते, विकास...अब तू सयाना हो रहा है। तुझे अकल आनी चाहिए। तेरे आशुतोष काका के चार-चार बच्चे हैं। उन्हें खिलाने-पिलाने पर खर्च करेंगे कि अपनी दशा सुधारेंगे? बोल तो...!"

उम्र के साथ-साथ काका की फटेहाली और भी बढ़ती गई थी। बेटियों के ब्याह का भार, बेटों की पढ़ाई का खर्च और फैलती हुई गृहस्थी की हज़ार छोटी-मोटी चिंताएँ....।

काका ने हमें एक सबक याद कराया था,"चिंता मौत से भी बुरी चीज़ होती है, वह हमारे जीवन को कुतर-कुतरकर खा जाती है।"

काका की शीशम-सी पुख्ता काया को चिंताओं के काष्ठ-कीट ने कुतर-कुतरकर खोखला बना दिया था। अभावों की तपिश को झेल सकने में असमर्थ उनके तने हुए कंधे असमय ही झुक गए थे। होली हो या दशहरा, काका की देह पर नए कपड़े का सुयोग कभी नहीं बन पाता था। फ़र्स्ट डिवीज़न से मेरे बी.ए. पास करने की खुशी में अम्माँ ने उन्हें रेशमी किनारे की धोती और मलमल का कुरता भेंट किया था। आशुतोष काका के शब्दों से फूटती बेबसी ने उनकी आँखों

में उभर आए आनंद के रंग को फीका कर दिया था, "मलमल पहनाकर हमारी आदत मत बिगाड़िए भौजी, जनमभर तो हमें मोटिया ही पहनना है न ! बाद में अम्माँ को गाँव के किसी संबंधी ने बताया था, अम्माँ के दिए हुए नए कपड़े आशुतोष काका के बड़े बेटे ने हथिया लिए थे।

विकास के डॉक्टरी पास कर जाने की खुशी में अम्माँ ने सत्यनारायण भगवान की कथा कहलवाई थी। विकास को ताकीद की थी कि आशुतोष काका को पंद्रह दिन पहले ही न्योता भेजा जाए। बाबूजी ने सबके सामने काका का परिचय विकास के पहले गुरु के रूप में दिया था और विकास ने उठकर काका के पाँव छू लिए थे। उसके सिर पर हाथ फेरते हुए काका की आँखें छलछला आई थीं।

सारे बाहरी मेहमानों के चले जाने पर रसोई के ओसारे में बिठाकर अम्माँ ने काका को अपने सामने खिलाया था। उस दिन पहली बार काका इतने उद्‌विग्न, इतने मर्माहत दिखाई पड़े थे,"परिवार में सुख-शांति न हो तो जिंदगी बोझ बन जाती है, भौजी ! बाल-बच्चों के पीछे हमने अपनी काया गला दी, लेकिन हमारी बात का आज तक घर में कोई मोल न रहा। यह फटा हुआ कोट देख रही हैं न ! बस, सारे रिश्तों को ऐसी ही मजबूरी में हमने अपनी पीठ पर ढोया है। बेटा,बेटी, घरवाली... सबके लिए जितने फर्ज़ हो सकते हैं, वे मेरे हिस्से के, और मेरी कीमत उनके लिए कुछ भी नहीं... सुजीत और विकास दोनों लगभग एक ही उम्र के होंगे, पर कभी जो सुजीत मेरे पास आकर बैठा हो...।"

अपनी हाल की लंबी बीमारी के दौर का एक प्रसंग सहसा काका को याद आ गया था। सिरदर्द से वे रातभर कराहते रहे थे। बगलवाली कोठरी में उनका बड़ा बेटा सुजीत सोया हुआ था। पत्नी, दोनों बेटियों और छोटे बेटे के साथ मायके गई हुई थी। न उन्होंने बेटे को आवाज़ दी और न बेटे ने खुद उठकर आने की ज़रूरत समझी।

....सामने वाले मकान के कमला बाबू ने आकर दर्द कम करने वाली गोली दी थी और दूसरे दिन ही उन्हें तेज़ बुखार चढ़ आया था,"आप लोगों के दर्शन का सुयोग था। मौत के मुँह से निकल आया भैया,वरना..."

बाबूजी ने उनके बड़े बेटे की नौकरी का प्रसंग उठाया था, "बी.ए. के बाद बिहार की सरकारी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने की तैयारी कर रहा है भैया, हर महीने दो सौ रुपए तो उसकी किताबों आदि में ही निकल जाते हैं। उस पर अपनी अम्माँ के सामने मुझे कोसता रहता है कि मैंने उसे किसी बड़े शहर के अच्छे कॉलेज में तालीम नहीं दिलवाई, उसके लिए पैरवी नहीं की, उसके लिए कुछ नहीं किया।"

काका के जाते समय विकास ने उनके पैरों पर एक सौ एक रुपए रखकर उन्हें प्रणाम करना चाहा था।

काका ने विनम्रता, किंतु दृढ़ता के साथ रुपए उसकी हथेली पर रख दिए थे "तुम्हें, मैंने बेटे से कम कभी नहीं माना, विकास ! जिन गुणों की मैंने अपने सुजीत में कल्पना की थी, उनकी झलक मुझे तुममें मिली, बेटे! तुम्हारे निर्माण में मेरा भी योगदान है, मेरे जीवन के लिए यह गौरव ही यथेष्ट रहे। ये रुपए देकर मुझे छोटा मत करो..."

रिक्शे पर बैठे काका का दायाँ हाथ आशीष की मुद्रा में उठ गया था, दूर तक पीछे मुड़-मुड़कर उनकी सतृष्ण आँखें विकास को निहारती रही थीं।

फिर बहुत दिनों तक काका की कोई खबर नहीं मिल सकी थी। विकास की पहली नियुक्ति डाल्टनगंज में हुई थी। अपने एक पत्र में उसने लिखा था – सुजीत मेरे ही ब्लॉक में बी.डी.ओ. बनकर आया है बिट्टी दी, मैंने उससे काका की खबर पूछी तो ऐसे कतराकर निकल गया, जैसे मैंने कोई बहुत ही अप्रिय प्रसंग उठा दिया हो... यह तो बाद में पता चला कि उसने अपने मातहतों के बीच अपना लंबा-चौड़ा मनगढ़ंत परिचय फैला रखा है कि वह एक रिटायर्ड एस.पी. का बेटा है, कि उसके मामा केंद्रीय स्तर के राजनीतिज्ञ हैं। गाँव में उसकी लंबी-चौड़ी मिल्कीयत है। सबसे बड़ी विडंबना तो यह है बिट्टी दी, कि सुजीत तिवारी ने अपने पिता को स्वर्गवासी घोषित कर दिया है... आम की गुठली से बबूल पनपते मैंने पहली बार देखा। यह सब काका सुनेंगे, तो उन पर क्या बीतेगी?

लेकिन काका सब कुछ जानते हुए भी चुप थे...अपनी बेटी के ब्याह के समय भविष्य-निधि से ऋण लेने के सिलसिले में उनका आरा आना हुआ था। अम्माँ ने काका से यूँ ही पूछ लिया था,"सुजीत ने कोई मदद...?"

"सुजीत का जीवन बन गया भौजी, मेरे लिए इतना ही बहुत है। मुझे उससे या अपनी किसी संतान से मदद की कोई अपेक्षा नहीं। अपनी ओर से जन्म देने का ऋण यथासंभव चुका देना चाहता हूँ, बस।"

काका के आग्रह पर अम्माँ ब्याह में शामिल होने के लिए उनके घर गई थीं। उन्हीं से पता चला कि सुजीत अपनी बहन के ब्याह में निहायत औपचारिक तौर पर शामिल हुआ था। बरात वाले दिन पहुँचा और विदाई के दूसरे दिन ही वापस चला गया। कन्यादान के समय हाथ में कुश लेकर निस्तब्ध बैठे आशुतोष काका की निरीह मुद्रा अब भी अम्माँ की आँखों में थी। धूल के रंग की खादी का लंबा कुरता और पीली धोती। कंधे से झूलते जनेऊ में वही काला सूता, गले में काली ताबीज़ और उँगली में घोड़े की नाल की अँगूठी...ज़िंदगी को अपनी मुट्ठी में जकड़ने के कितने टोटके काका ने किए थे, लेकिन... ज़िंदगी ने कभी उन्हें खुलकर हँसने तक का मौका नहीं दिया। मिडिल-स्कूल की हेडमास्टरी से अवकाश पाने के बाद उनका एक पत्र बाबूजी के नाम आया था, बरसों की मेहनत ने बहुत थका दिया था भैया, अब आराम करूँगा। वैसे भी अब कोई बोझ सिर पर बाकी नहीं रहा। बेटियों का कर्ज़ उतार ही चुका हूँ, छोटा अजित भी इंजीनियर हो गया। हम दोनों के गुज़ारे के लिए गाँव की थोड़ी-बहुत ज़मीन काफ़ी है... विकास बेटे के ब्याह में नहीं आ सका, कभी आऊँगा।

अम्माँ ने पोते के जन्म पर आशुतोष काका को बुलाया था। उन्होंने काका के पास गाँव के सबसे अधिक बुज़ुर्ग रामकिरपाल बाबा की देह का उतरन लेते आने की फ़रमाइश लिखवा भेजी थी। बच्चा सतइसा में पड़ा था , अम्माँ उसे सत्ताईस दिनों तक उसी पुराने कपड़े का झबला पहनाने पर तुली बैठी थीं।

जल्दी में काका अम्माँ की फ़रमाइश पूरी किए बगैर ही चले आए थे... विकास ने बड़े अनोखे ढंग से अम्माँ की समस्या का हल ढूँढ़ निकाला था,"मेरे लिए

काकाजी से बढ़कर दूसरा कोई पूज्य नहीं। बच्चे को इनकी पुरानी धोती के टुकड़े में लपेटा जाए... मैं अभी काकाजी से कहता हूँ।"

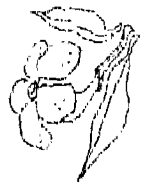
विकास के हठ के सामने काका की एक नहीं चल सकी थी। वह उनके लिए बाज़ार से नए कपड़े ले आया था। कपड़े बदलकर काका ओसारे में आए तो विकास ने उनकी पुरानी धोती के आधे हिस्से में लिपटे हुए नन्हें शिशु को उनके चरणों पर लिटा दिया था, "इसे आशीर्वाद दीजिए काका, यह आपकी तरह बन सके।"

गोद में लेटे बच्चे के उजले माथे पर अपनी थरथराती उँगलियों से असीस बिखेरते काका किसी तरह इतना भर ही कह सके थे, " इतना सुख कैसे झेला जाता है, इसका मुझे कोई अभ्यास नहीं है, बेटे ! किसी जन्म का मेरा कोई ऋण ज़रूर तुम पर रहा होगा, तभी तो..." और काका की आवाज़ उनके गले में ही रुँधकर रह गई और उनकी आँखों के सामने सहसा सब कुछ धुँधला गया।

बोध-प्रश्न

1. लेखिका ने आशुतोष काका का प्रथम परिचय किन शब्दों में दिया है?
2. आशुतोष काका विकास की माता द्वारा दिए गए वस्त्रों को लेने में क्यों आनाकानी कर रहे थे?
3. आशुतोष काका अपने सारे रिश्तों को मजबूरी का नाम क्यों देते हैं?
4. आशुतोष काका ने विकास द्वारा दिए गए रुपए स्वीकार क्यों नहीं किए? इससे उनके चरित्र की कौन-सी विशेषता उभरकर सामने आती है?
5. "आम की गुठली से बबूल पनपते मैंने पहली बार देखा।" विकास ने यह बात किस प्रसंग में कही और क्यों?
6. विकास ने अपने पुत्र को आशुतोष काका की पुरानी धोती के टुकड़े में क्यों लपेटना चाहा?
7. विकास ने आशुतोष काका से अपने पुत्र के लिए क्या आशीर्वाद माँगा? काका की इस पर क्या प्रतिक्रिया हुई?
8. कहानी में वर्णित प्रसंगों के आधार पर सुजीत एवं विकास के चरित्र की तुलना कीजिए।
9. इस कहानी में किसने किसका ऋण चुकाया है और किस प्रकार?

5 मुगलों ने सल्तनत बख्श दी



भगवतीचरण वर्मा

हीरो जी को आप नहीं जानते, और यह दुर्भाग्य की बात है। इसका यह अर्थ नहीं कि केवल आपका दुर्भाग्य है, दुर्भाग्य हीरो जी का भी है। कारण, वह बड़ा सीधा-सादा है। यदि आपका हीरो जी से परिचय हो जाए, तो आप निश्चय समझ लेंगे कि आपका संसार के एक बहुत बड़े विद्वान से परिचय हो गया। हीरो जी को जानने वालों में अधिकांश का मत है कि हीरो जी पहले जन्म में विक्रमादित्य के नव-रत्नों में एक अवश्य रहे होंगे और अपने किसी पाप के कारण उनको इस जन्म में हीरो जी की योनि प्राप्त हुई।

हीरो जी ने दुनिया देखी है। यहाँ यह जान लेना ठीक होगा कि हीरो जी की दुनिया मौज और मस्ती की ही बनी है। हीरो जी के दर्शन प्रायः चाय की दुकान पर हुआ करते हैं। जो पहुँचता है, वह हीरो जी को एक प्याला चाय अवश्य पिलाता है। उस दिन जब हम लोग चाय पीने पहुँचे, तो हीरो जी एक कोने में आँखें बंद किए हुए बैठे कुछ सोच रहे थे। हम लोगों में बातें शुरू हो गईं, और हरिजन-आंदोलन से घूमते-फिरते बात आ पहुँची दानवराज बलि पर। पंडित गोवर्धन शास्त्री ने आमलेट का टुकड़ा मुँह में डालते हुए कहा "भाई, यह तो कलियुग है। न किसी में दीन है न ईमान। कौड़ी-कौड़ी पर लोग बेईमानी करने लग गए हैं। अरे, अब तो लिखकर भी लोग मुकर जाते हैं। एक युग था, जब दानव तक अपने वचन निभाते थे, सुरों और नरों की तो बात ही छोड़ दीजिए। दानवराज बलि ने

वचनबद्ध होकर सारी पृथ्वी दान कर दी थी। पृथ्वी ही काहे को, स्वयं अपने को भी दान कर दिया था।"

हीरो जी चौंक उठे। खाँसकर उन्होंने कहा " क्या बात है? ज़रा फिर से तो कहना !"

सब लोग हीरो जी की ओर घूम पड़े। कोई नई बात सुनने को मिलेगी, इस आशा से मनोहर ने शास्त्री जी के शब्दों को दुहराने का कष्ट उठाया "हीरो जी! ये गोवर्धन शास्त्री जी हैं, सो कह रहे हैं कि कलियुग में धर्मकर्म सब लोप हो गया। त्रेता में तो दैत्यराज बलि तक ने अपना सब कुछ केवल वचनबद्ध होकर दान कर दिया था।"

हीरो जी हँस पड़े, "तो यह गोवर्धन शास्त्री कहने वाले हुए और तुम लोग सुनने वाले, ठीक ही है। लेकिन हमसे सुनो, यह तो कह रहे हैं त्रेता की बात, अरे, तब तो अकेले बलि ने ऐसा कर दिया था ; लेकिन मैं कहता हूँ कलियुग की बात। कलियुग में तो एक आदमी की कही हुई बात उसकी सात-आठ पीढ़ी तक निभाती गई और यद्यपि वह पीढ़ी स्वयं नष्ट हो गई, लेकिन उसने अपना वचन नहीं तोड़ा।"

हम लोग आश्चर्य में आ गए। हीरो जी की बात समझ में नहीं आई, पूछना पड़ा – " हीरो जी , कलियुग में किसने इस प्रकार अपने वचनों का पालन किया है?"

"बच्चे हो न!" हीरो जी ने मुँह बनाते हुए कहा –"जानते हो मुगलों की सल्तनत कैसे गई?"

"हाँ ! अंग्रेज़ों ने उनसे छीन ली।"

"तभी तो कहता हूँ कि तुम सब लोग बच्चे हो। स्कूली किताबों को रट-रट कर बन गए पढ़े लिखे आदमी। अरे, मुगलों ने अपनी सल्तनत अंग्रेज़ों को बख्श दी थी।"

हीरो जी ने यह कौन-सा नया इतिहास बनाया? आँखें कुछ अधिक खुल गईं। कान खड़े हो गए। मैंने कहा –"सो कैसे?"

"अच्छा तो फिर सुनो!"– हीरो जी ने आरंभ किया –"जानते हो शहंशाह शाहजहाँ की लड़की शहज़ादी रौशनआरा एक दफे बीमार पड़ी थी, और उसे एक अंग्रेज़ डॉक्टर ने अच्छा किया था। उस डॉक्टर को शहंशाह शाहजहाँ ने हिंदुस्तान में तिजारत करने के लिए कलकत्ते में कोठी बनाने की इज़ाज़त दे दी थी।"

"हाँ, यह तो हम लोगों ने पढ़ा है।"

"लेकिन असल बात यह है कि शहज़ादी रौशनआरा, वही शहंशाह शाहजहाँ की लड़की, हाँ वही शहज़ादी रौशनआरा एक दफे जल गई। अधिक नहीं जली थी। अरे, हाथ में थोड़ा-सा जल गई थी, लेकिन जल तो गई थी और थी शहज़ादी। बड़े-बड़े हकीम और वैद्य बुलाए गए। इलाज किया गया; लेकिन शहज़ादी को कोई अच्छा न कर सका – न कर सका। और शहज़ादी को भला अच्छा कौन कर सकता था? वह शहज़ादी थी न ! सब लोग लगाते थे लेप, और लेप लगाने से होती थी जलन। और तुरंत शहज़ादी ने धुलवा डाला उस लेप को। भला शहज़ादी को रोकनेवाला कौन था। अब शहंशाह सलामत को फ़िक्र हुई! लेकिन शहज़ादी अच्छी हो तो कैसे? वहाँ तो दवा असर करने ही न पाती थी।"

उन्हीं दिनों एक अंग्रेज़ घूमता-घामता दिल्ली आया। दुनिया देखे हुए, घाट-घाट का पानी पिए हुए, पूरा चालाक और मक्कार ! उसको शहज़ादी की बीमारी की खबर लग गई। नौकरों को घूस देकर उसने पूरा हाल दरियाफ़्त किया। उसे मालूम हो गया कि शहज़ादी जलन की वजह से दवा धुलवा डाला करती है। सीधे शहंशाह सलामत के पास पहुँचा। कहा कि डॉक्टर हूँ। शहज़ादी का इलाज उसने अपने हाथ में ले लिया। उसने शहज़ादी के हाथ में एक दवा लगाई। उस दवा से जलन होना तो दूर रहा, उलटे जले हुए हाथ में ठंडक पहुँची। अब भला शहज़ादी उस दवा को क्यों धुलवाती। हाथ अच्छा हो गया। जानते हो वह दवा क्या थी? हम लोगों की ओर भेदभरी दृष्टि डालते हुए हीरो जी ने पूछा।

"भाई, हम दवा क्या जानें?" कृष्णानंद ने कहा।

"तभी तो कहते हैं कि इतना पढ़-लिखकर भी तुम्हें तमीज़ न आई। अरे, वह दवा थी वेसलीन – वही वेसलीन, जिसका आज घर-घर में प्रचार है।"

"वेसलीन ! लेकिन वेसलीन तो दवा नहीं होती।" मनोहर ने कहा।

हीरो जी सँभलकर बैठ गए। फिर बोले–"कौन कहता है कि वेसलीन दवा होती है? अरे, उसने हाथ में लगा दी वेसलीन और घाव आप-ही-आप अच्छा हो गया। वह अंग्रेज़ बन बैठा डॉक्टर – और उसका नाम हो गया। शहंशाह शाहजहाँ बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने उस फिरंगी डॉक्टर से कहा – "माँगो।" उस फिरंगी ने कहा – "हुज़ूर, मैं इस दवा को हिंदुस्तान में रायज करना चाहता हूँ, इसलिए हुज़ूर, मुझे हिंदुस्तान में तिजारत करने की इज़ाज़त दे दें।" बादशाह सलामत ने जब यह सुना कि डॉक्टर हिंदुस्तान में इस दवा का प्रचार करना चाहता है, तो बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा –"मंज़ूर ! और कुछ माँगो।" तब उस चालाक डॉक्टर ने जानते हो क्या माँगा? उसने कहा – "हुज़ूर मैं एक तंबू तानना चाहता हूँ, जिसके नीचे इस दवा के पीपे इकट्ठे किए जाएँगे। जहाँपनाह यह फ़रमा दें कि उस तंबू के नीचे जितनी ज़मीन आएगी, वह जहाँपनाह ने फिरंगियों को बख्श दी।" शहंशाह शाहजहाँ थे सीधे-सादे आदमी, उन्होंने सोचा, तंबू के नीचे भला कितनी जगह आएगी। उन्होंने कह दिया –"मंज़ूर।"

"हाँ, तो शहंशाह शाहजहाँ थे सीधे-सादे आदमी, छल-कपट उन्हें आता न था। और वह अंग्रेज़ था दुनिया देखे हुए। सात समुद्र पार करके हिंदुस्तान आया था न ! पहुँचा विलायत, वहाँ उसने बनवाया रबड़ का एक बहुत बड़ा तंबू और जहाज़ पर तंबू लदवाकर चल दिया हिंदुस्तान। कलकत्ते में उसने वह तंबू लगवा दिया। वह तंबू कितना ऊँचा था, इसका अंदाज़ आप नहीं लगा सकते। उस तंबू का रंग नीला था। तो जनाब वह तंबू लगा कलकत्ते में, और विलायत से पीपे-पर-पीपे लद-लद कर आने लगे। उन पीपों में वेसलीन की जगह भरा था एक-एक अंग्रेज़ जवान, मय बंदूक और तलवार के। सब पीपे तंबू के नीचे रखवा दिए गए। जैसे-जैसे पीपे ज़मीन घेरने लगे, वैसे-वैसे तंबू को बढ़ा-बढ़ाकर ज़मीन घेर दी गई। तंबू तो रबड़ का था न, जितना बढ़ाया, बढ़ गया। अब जनाब तंबू पहुँचा प्लासी। तुम लोगों ने पढ़ा होगा कि प्लासी का युद्ध हुआ था। अरे सब झूठ है। असल में तंबू बढ़ते-बढ़ते प्लासी पहुँचा था, उस वक्त मुगल बादशाह का हरकारा

दौड़ा था दिल्ली। बस यह कह दिया गया कि प्लासी की लड़ाई हुई। जी हाँ, उस वक्त दिल्ली में शहंशाह शाहजहाँ की तीसरी या चौथी पीढ़ी सल्तनत कर रही थी। हरकारा जब दिल्ली पहुँचा उस वक्त बादशाह सलामत की सवारी निकल रही थी। हरकारा घबराया हुआ था। वह इन फिरंगियों की चालों से हैरान था। उसने मौका देखा न माहौल, वहीं सड़क पर खड़े होकर उसने चिल्लाकर कहा "जहाँपनाह, गज़ब हो गया। ये बदतमीज़ फिरंगी अपना तंबू प्लासी तक खींच लाए हैं और चूँकि कलकत्ते से प्लासी तक की ज़मीन तंबू के नीचे आ गई है, इसलिए इन फिरंगियों ने उस ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया है। जो इनको मना किया तो इन बदतमीज़ों ने शाही फ़रमान दिखा दिया।" बादशाह सलामत की सवारी रुक गई थी। उन्हें बुरा लगा। उन्होंने हरकारे से कहा "म्याँ हरकारे, मैं कर ही क्या सकता हूँ। जहाँ तक फिरंगियों का तंबू घिर जाए, वहाँ तक की जगह उनकी हो गई, हमारे बुज़ुर्ग यह कह गए हैं।" बेचारा हरकारा अपना-सा मुँह लेकर वापस आ गया।

"हरकारा लौटा, और इन फिरंगियों का तंबू बढ़ा। अभी तक तो आते थे पीपों में आदमी, अब आने लगा तरह-तरह का सामान। हिंदुस्तान का व्यापार फिरंगियों ने अपने हाथ में ले लिया। तंबू बढ़ता ही रहा और पहुँच गया बक्सर। इधर तंबू बढ़ा और उधर लोगों की घबराहट बढ़ी। यह जो किताबों में लिखा है कि बक्सर की लड़ाई हुई, यह गलत है भाई, जब तंबू बक्सर पहुँचा, तो फिर हरकारा दौड़ा।"

"अब ज़रा बादशाह सलामत की बात सुनिए। वह जनाब दीवान खास में तशरीफ़ रख रहे थे। उनके सामने सैकड़ों, बल्कि हज़ारों मुसाहिब बैठे थे। बादशाह सलामत हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे – सामने एक साहब जो शायद शायर थे, कुछ गा-गाकर पढ़ रहे थे और कुछ मुसाहिब गला फाड़-फाड़कर 'वाह-वाह' चिल्ला रहे थे। कुछ लोग तीतर और बटेर लड़ा रहे थे। हरकारा जो पहुँचा तो यह सब बंद हो गया। बादशाह सलामत ने पूछा – "म्याँ हरकारे, क्या हुआ–इतना घबराए हुए क्यों हो?" हाँफते हुए हरकारे ने कहा – "जहाँपनाह इन बदज़ात फिरंगियों ने अंधेर मचा रखा है। वह अपना तंबू बक्सर खींच लाए।" बादशाह सलामत को बड़ा

ताज्जुब हुआ। उन्होंने अपने मुसाहिबों से पूछा – "म्याँ, हरकारा कहता है कि फिरंगी अपना तंबू कलकत्ते से बक्सर तक खींच लाए। यह कैसे मुमकिन है?" इस पर एक मुसाहिब ने कहा – "जहाँपनाह, ये फिरंगी जादू जानते हैं, जादू !" दूसरे ने कहा –"जहाँपनाह, इन फिरंगियों ने जिन्नात पाल रक्खे हैं – जिन्नात सब कुछ कर सकते हैं।" बादशाह सलामत की समझ में कुछ आया नहीं। उन्होंने हरकारे से कहा – "म्याँ हरकारे, तुम बतलाओ यह तंबू किस तरह बढ़ आया।" हरकारे ने समझाया कि तंबू रबड़ का है। इस पर बादशाह सलामत बड़े खुश हुए। उन्होंने कहा – "ये फिरंगी भी बड़े चालाक हैं, पूरे अक्ल के पुतले हैं।" इस पर सब मुसाहिबों ने एक स्वर में कहा – "इसमें क्या शक है, जहाँपनाह बजा फ़रमाते हैं।" बादशाह सलामत मुसकराए – "अरे भाई, किसी चोबदार को भेजो, जो इन फिरंगियों के सरदार को बुला लाए। मैं उसे खिलअत दूँगा।" सब मुसाहिब कह उठे – "वल्लाह ! जहाँपनाह एक ही दरियादिल हैं इस फिरंगी सरदार को ज़रूर खिलअत देनी चाहिए।" हरकारा घबड़ाया। वह आया था शिकायत करने, यहाँ बादशाह सलामत फिरंगी सरदार को खिलअत देने पर आमादा थे। वह चिल्ला उठा – "जहाँपनाह ! इन फिरंगियों ने जहाँपनाह की सल्तनत का एक बहुत बड़ा हिस्सा अपने तंबू के नीचे करके उस पर कब्ज़ा कर लिया है। जहाँपनाह, ये फिरंगी जहाँपनाह की सल्तनत छीनने पर आमादा दिखाई देते हैं।" मुसाहिब चिल्ला उठे – "ऐ, ऐसा गज़ब।" बादशाह सलामत की मुसकराहट गायब हो गई। थोड़ी देर तक सोचकर उन्होंने कहा – "मैं क्या कर सकता हूँ? हमारे बुज़ुर्ग इन फिरंगियों को उतनी जगह दे गए हैं, जितनी तंबू के नीचे आ सके। भला मैं कर ही क्या सकता हूँ, फिरंगी सरदार को खिलअत न दूँगा?" इतना कहकर बादशाह सलामत फिरंगियों की चालाकी अपनी बेगमात से बतलाने के लिए हरम के अंदर चले गए। हरकारा बेचारा चुपचाप लौट आया।"

"जनाब ! उस तंबू ने बढ़ना जारी रक्खा। एक दिन क्या देखते हैं कि विश्वनाथपुरी काशी के ऊपर वह तंबू तन गया। अब तो लोगों में भगदड़ मच गई। उन दिनों राजा चेतसिंह बनारस की देखभाल करते थे। उन्होंने उसी वक्त बादशाह सलामत के पास हरकारा दौड़ाया। वह दीवानेखास में हाज़िर किया गया। हरकारे ने

बादशाह सलामत से अर्ज़ की कि वह तंबू बनारस पहुँच गया है, और तेज़ी के साथ दिल्ली की तरफ़ आ रहा है। बादशाह सलामत चौंक उठे। उन्होंने हरकारे से कहा – "तो म्याँ हरकारे, तुम्हीं बतलाओ, क्या किया जाए?" वहाँ बैठे हुए दो-एक उमराओं ने कहा – "जहाँपनाह, एक बड़ी फौज़ भेजकर इन फिरंगियों का तंबू छोटा करवा दिया जाए और कलकत्ते भेज दिया जाए। हम लोग जाकर लड़ने को तैयार हैं। जहाँपनाह का हुक्म भर हो जाए। इस तंबू की क्या हकीकत है, एक मर्तबा आसमान को भी छोटा कर दें।" बादशाह सलामत ने कुछ सोचा, फिर उन्होंने कहा – "क्या बतलाऊँ, हमारे बुज़ुर्ग शहंशाह शाहजहाँ इन फिरंगियों को तंबू के नीचे जितनी जगह आ जाए, वह बख्श गए हैं। बख्शीशनामा की रूह से हम लोग कुछ नहीं कर सकते। आप जानते हैं, हम लोग अमीर तैमूर की औलाद हैं। एक दफा जो ज़बान दे दी वह दे दी। तंबू का छोटा कराना तो गैरमुमकिन है। हाँ, कोई ऐसी हिकमत निकाली जाए, जिससे ये फिरंगी अपना तंबू आगे न बढ़ा सकें। इसके लिए दरबारे आम किया जाए और यह मसला वहाँ पेश हो।"

"इधर दिल्ली में तो यह बातचीत हो रही थी और उधर इन फिरंगियों का तंबू इलाहाबाद, इटावा ढँकता हुआ आगरे पहुँचा। दूसरा हरकारा दौड़ा। उसने कहा – "जहाँपनाह, वह तंबू आगरे तक बढ़ आया है। अगर अब भी कुछ नहीं किया जाता, तो ये फिरंगी दिल्ली पर भी अपना तंबू तान कर कब्ज़ा कर लेंगे।" बादशाह सलामत घबराए, दरबारे आम किया गया। सब अमीर-उमरा इकट्ठा हो गए तो बादशाह सलामत ने कहा – "आज हमारे सामने एक अहम मसला पेश है। आप लोग जानते हैं कि हमारे बुज़ुर्ग शहंशाह शाहजहाँ ने फिरंगियों को इतनी ज़मीन बख्श दी थी, जितनी उनके तंबू के नीचे आ सके। इन्होंने अपना तंबू कलकत्ते में लगवाया था; लेकिन वह तंबू है रबड़ का, और धीरे-धीरे ये लोग तंबू आगरे तक खींच लाए। हमारे बुज़ुर्गों से जब यह कहा गया, तब उन्होंने कुछ करना मुनासिब न समझा; क्योंकि शहंशाह शाहजहाँ अपना कौल हार चुके हैं। हम लोग अमीर तैमूर की औलाद हैं और अपने कौल के पक्के हैं। अब आप लोग बतलाइए, क्या किया जाए।" अमीरों और मनसबदारों ने कहा "हमें इन फिरंगियों से लड़ना चाहिए और इनको सज़ा देनी

चाहिए। इनका तंबू छोटा करवाकर कलकत्ते भिजवा देना चाहिए।" बादशाह सलामत ने कहा –"लेकिन हम अमीर तैमूर की औलाद हैं। हमारा कौल टूटता है।" इसी समय तीसरा हरकारा हाँफता हुआ बिना इत्तला कराए ही दरबार में घुस आया। उसने कहा – "जहाँपनाह, वह तंबू दिल्ली पहुँच गया। वह देखिए, किले तक आ पहुँचा।" सब लोगों ने देखा। वास्तव में हज़ारों गोरे खाकी वरदी पहने और हथियारों से लैस बाजा बजाते हुए तंबू को किले की तरफ़ खींचते हुए आ रहे थे। उस वक्त बादशाह सलामत उठ खड़े हुए। उन्होंने कहा – "हमने तै कर लिया। हम अमीर तैमूर की औलाद हैं। हमारे बुज़ुर्गों ने जो कुछ कह दिया, वही होगा? उन्होंने तंबू के नीचे की जगह फिरंगियों को बख्श दी थी। अब अगर दिल्ली भी उस तंबू के नीचे आ रही है, तो आए! मुगल सल्तनत जाती है, तो जाए, लेकिन दुनिया यह देख ले कि अमीर तैमूर की औलाद हमेशा अपने कौल की पक्की है।" – इतना कह बादशाह सलामत मय अपने अमीर-उमरावों के दिल्ली के बाहर हो गए और दिल्ली पर अंग्रेज़ों का कब्ज़ा हो गया। अब आप लोग देख सकते हैं, इस कलियुग में भी "मुगलों ने अपनी सल्तनत बख्श दी।"

हम सब लोग थोड़ी देर तक चुप रहे। इसके बाद मैंने कहा – "हीरो जी, एक प्याला चाय और पियो।"

हीरो जी बोल उठे– "इतनी अच्छी कहानी सुनाने के बाद भी एक प्याला चाय !"

बोध-प्रश्न

1. लोगों की यह धारणा क्यों थी कि हीरो जी पहले जन्म में विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक अवश्य रहे होंगे?
2. लेखक दानवराज बलि के उदाहरण से किस ओर संकेत कर रहा है?
3. अंग्रेज़ को कलकत्ता में तंबू लगाने की अनुमति बादशाह शाहजहाँ ने क्यों दी?
4. हीरो जी के अनुसार अंग्रेज़ों ने भारत में अपना राज्य-विस्तार कैसे किया?

5. प्लासी और बक्सर के युद्ध के बारे में हीरो जी की व्याख्या ऐतिहासिक तथ्यों से किस प्रकार भिन्न है?
6. तंबू के दिल्ली पहुँचने पर बादशाह सलामत ने क्या निर्णय किया?
7. अपनी सल्तनत छिनती देखकर भी बादशाह सलामत ने कोई कदम क्यों नहीं उठाया? इससे अंतिम मुगल बादशाहों की क्या तसवीर उभरती है?
8. इस कहानी के माध्यम से लेखक द्वारा किए गए व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

6 समानांतर सरल रेखाएँ



विभूति पटनायक

अपनी उन्नति से देश की उन्नति होगी, यह बात नारायण बाबू ने कभी नहीं मानी। आज भी वे अपनी बात पर अटल हैं, अचल हैं। मगर उनके खून से पैदा होकर भी सनातन उनके आदर्श की ज़रा भी परवाह नहीं करता। बाप-बेटे दोनों समानांतर सरल रेखाओं की तरह रुचि, आदर्श, जीवन-यापन के तौर-तरीके किसी में भी नहीं मिलते। पर इस सनातन के प्रति पुत्र-स्नेह ने उस दिन उनके देश-प्रेम के स्थिर पात्र को हिला कर रख दिया।

सन 1942 के दिनों की बात है। महात्माजी तथा स्वतंत्रता आंदोलन के अन्य नेता गिरफ़्तार हो चुके थे। ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध जन-चेतना को जगाने का व्रत लेकर वे भूमिगत हो चुके थे और छद्मवेश में घूमते फिर रहे थे, उड़ीसा के एक छोर से दूसरे छोर तक। उन पर अंग्रेज़ सरकार ने हज़ार रुपए के इनाम की घोषणा कर रखी थी।

घर पर अकेली पत्नी सौदामिनी और दो वर्ष का सनातन। पुलिस बार-बार आकर सौदामिनी से पूछताछ कर जाती। पर इन दो-तीन महीनों में आधी रात में घंटे-दो-घंटे के लिए एक-दो बार ही वे आए। स्त्री और बेटे को देखकर, दो बोल हिम्मत और सांत्वना के देकर, चले गए।

उस दिन भी इसीलिए घर आए थे आधी रात को। कुल घंटेभर के लिए। पर वहाँ जाकर देखा तो सनातन बुखार में बेहाल। सौदामिनी ने छलछलाए नेत्रों से

कहा, "तवे-सी तपती इसकी देह छोड़ कर कैसे जाओगे? रात बीतती तो डॉक्टर या वैद्य को दिखा देते, अब इस रात में क्या करूँ? मुझे बहुत डर लगता..."

आकाश में मेघ घिर रहे थे। परत-दर-परत अँधेरा सारे परिवेश को आशंका और भय से व्यग्र किए दे रहा था। कोई आवारा कुत्ता भौंक रहा था रात के सूने रास्ते पर। ऐसे में अकेली सौदामिनी के पास बीमार बच्चे को छोड़ कर देश-प्रेम की जलती आग में कूदने की हिम्मत नहीं हो रही थी। सनातन अपनी नन्ही हथेलियों में नारायण बाबू का हाथ पकड़े था। बुखार तेज़ था। उसके साथ पुत्र-स्नेह की ऊष्मा मिल गई। आधे घंटे में वह जगह छोड़ अन्यत्र चले जाना था। वे निर्देश भूल गए। सनातन को गोद में लेकर रात भर बैठे रहे। सुबह पुलिस की व्हिसल सुनकर दूसरी जगह जाने की बात याद आई। मगर अब समय न था। मकान पुलिस के घेरे में था। पकड़े गए। चार वर्ष जेल के अँधेरे में सड़ना पड़ा।

महात्मा गांधी के आह्वान पर नौकरी छोड़ दी। स्वतंत्रता की लड़ाई में कूद पड़े। अपने जीवन में स्वतंत्रता देखेंगे या जेल से छूट बेटे-पोतों, बहू-नातियों को लेकर घर बसाएँगे, यह सपने में भी नहीं सोचा। मगर एक बात मन में ज़रूर थी कि जेल में यदि पहली महारणा की तरह बीमार पड़ कर बिना इलाज के मर गया, या फिर गोकुल भोल की तरह जेल वालों के दुर्व्यवहार के प्रतिवाद में आमरण अनशन कर शहीद हो गया तो सनातन ज़रूर ब्रिटिश सरकार से लड़ेगा...उनके जीवन का आदर्श उनके खून से बनी संतान को रास्ता दिखाएगा ...

मगर हो गया सब उलट-पलट।

देश स्वतंत्र हुआ। पत्नी के चल बसने के बाद उन्होंने बड़ी मुश्किल से सनातन को वकालत पढ़ाई। उसे स्वाधीनचेता, सच्चा आदमी बनाने की पुरज़ोर कोशिश की, मगर वह अलग ही राह चल पड़ा। किसी भी तरह पैसे कमा कर अपना घर चलाना, अपनी उन्नति में ही देश की उन्नति है यह गलतफ़हमी लेकर वह स्वाधीनोत्तर भारत का नकली क्रांतिकारी बन बैठा। अपने श्रम से नहीं, श्रमिकों के कंधे चढ़ कर बड़ा दिखने की चेष्टा करने लगा।

शराब की दुकान के आगे पिकेटिंग कर दो-दो बार जेल गए थे नारायण दास। उन्हीं का लड़का उनके सामने औरों के साथ शराब पीने लगा। अंग्रेज़ी की जगह स्वदेशी बेसिक तालीम के सपने देखे थे उन्होंने, मगर उनके दोनों पोते-पोती अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ रहे हैं। सनातन की पत्नी मधुमिता खादी देखते ही नाक-भौं सिकोड़ने लगती है। पति की कमाई घर चलाने में पूरी नहीं पड़ी, सो वह भी एक दिन मास्टरनी बन गई।

महात्मा गांधी की हत्या के बाद भारत में ऐसा कुछ हो-सकता है, नारायण दास ने थोड़ा-बहुत अनुमान कर लिया था; मगर देखते-ही-देखते उनकी आँखों के सामने भोग ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य बन जाएगा, जबकि त्याग की बातें सिर्फ़ औरों को उपदेश देने के लिए ही रह जाएँगी, यह सोचने में भी उन्हें काफ़ी तकलीफ़ हो रही थी। तभी अनेक स्वतंत्रता सेनानी आज़ादी के बाद देश की सत्ता हथियाने के लिए चुनावी लड़ाई में उतरे, मगर वे उससे अलग ही रहे। बगीचे में पौधे उगाना, सूत कातना, अखबार और किताब पढ़ना – इसी में निमग्न होकर रह गए।

अचानक एक दिन सनातन आकर कहने लगा,"बापू! हमारी यूनियन के एक लेबर लीडर चार दिन से आमरण अनशन पर हैं। सरकार हमारी एक भी माँग स्वीकार करने को तैयार नहीं। उधर उनका स्वास्थ्य गिर गया है। एक भी माँग पूरी न होने पर श्रमिकों की आस्था हमारी यूनियन में नहीं रह जाएगी। वे दूसरी यूनियन में चले जाएँगे... आप ज़रा मंत्री से कह देते तो..चालीस में से कम-से-कम एक माँग ही कोई सरकार मान लेती तो..अनशनकारी नेता की हालत खराब हो गई.."

फल का रस पीकर अनशन तोड़ने का लक्ष्य लेकर जो अनशन शुरू करते हैं, उनके लिए नारायण दास के मन में अकुंठ घृणा है। सनातन की बात सुनकर उनके चेहरे पर वही घृणा उभर आई।

पूछा "मैं कौन होता हूँ? मंत्री मेरी बात क्यों रखेंगे?"

सनातन ने याद करा दिया, "मंत्री भी स्वतंत्रता सेनानी थे। एक साथ जेल में थे। देश के लिए तीन बार सात साल की जेल भोगी है। आपकी बात ज़रूर रखेंगे।"

बेटे की बात सुन गुस्से से लाल हो गए नारायण दास। चीखते-से कहने लगे, "अपने फ़ायदे के लिए जेल गया था? देश की सेवा की, उसकी क्या मजूरी माँगी जाती है? पता है – गोकुल भोल आमरण अनशन कर शहीद हो गया जेल में, उसके जीवन का मूल्य चुकाया किसी ने? क्षुद्र स्वार्थ के लिए और अनशन तोड़ने का दिन तय कर जो लोग आमरण अनशन करते हैं, उन्हें क्या सत्याग्रही कहा जाता है? ...बोलो.. चुप क्यों हो गए?"

सनातन बाहर से चुपचाप दिख रहा था, मगर भीतर-ही-भीतर क्रोध से थर्रा रहा था। उसे लग रहा था – यह आदमी उसका बाप नहीं, कोई शत्रु है, प्रतिद्वंद्वी लेबर यूनियन का कोई दलाल है। उसके नेतृत्व की असफलता सिद्ध करने के लिए ही वह मंत्री से कुछ नहीं कहना चाहता।

सनातन चला आया।

उसकी चाल से नारायण दास को अनुमान हो गया था कि बेटे के साथ संबंध बस टूट गया है यहीं।

आजकल अपने बेटे, बहू,संगी, साथी किसी को नहीं समझ पाते नारायण दास। मानो सब किसी 'सुख' नामक तोते को किसी तरह अपने पिंजड़े में भर लेने के लिए दौड़-धूप में लगे हैं। क्या न्याय है, क्या अन्याय, यह समझने की उन्हें फ़ुरसत कहाँ? इन अपने-अपने मतलब में डूबे लोगों के बीच उन्हें बहुत अकेला-अकेला लगता है। निहायत अपने लोग भी बेगाने-पराए जैसे दिखते हैं। उन्हें लगता है – पहली महारणा या गोकुल भोल की तरह जेल में शहीद हो जाते तो बच जाते। महात्मा गांधी भी आतताई की गोली से मर कर उबर गए और मैं जी रहा हूँ सिर्फ़ मरण-वेदना सहने के लिए !

जेल में सुबह उठते ही और रात में सोने के पहले 'इंकलाब ज़िंदाबाद' का नारा लगाना गोकुल भोल का रोज़ का अभ्यास था। जेलर ने इस पर गुस्सा होकर

उसका राशन आधा कर दिया। इस अन्याय के खिलाफ़ गोकुल ने कर दिया आमरण अनशन। इक्कीसवें दिन उपवास में ही 'इंकलाब ज़िंदाबाद' का नारा लगा कर उसने आँखें मूँद ली, शहीद हो गया। अगले दिन जेल के चार सौ इक्यानबे लोगों की ज़बान पर 'इंकलाब ज़िंदाबाद' गूँज रहा था। पता नहीं वह आवाज़ जेल की मोटी चारदीवारी लाँघ बाहर की दुनिया के कानों तक पहुँची या नहीं, मगर जेल सुपरिटेंडेंट की छाती दब गई। अगर गोकुल का रास्ता पकड़ सब बंदी अनशन पर उतर आएँ, शहीद हो जाएँ, तब तो परिणाम भयंकर होगा। गोरा सुपरिटेंडेंट अच्छी तरह समझ गया था कि इस सत्याग्रह का क्या परिणाम हो सकता है ! अतः गोकुल के बाद कैदियों की नारेबाज़ी पर कोई ध्यान नहीं देता। छूट मिल गई ! मगर यह बात क्या जान सका था गोकुल?

जेल में गोकुल के आत्मत्याग के कारण नारे लगाने की स्वतंत्रता जिस दिन मिली थी, नारायण दास खुद लेटे-लेटे वैसी ही मृत्यु का सपना देख रहे थे। देश के लिए शहीद होने के विचार में ही एक तरह की पवित्र तृप्ति और स्निग्ध आनंद से मन भर जाता है – यह बात उस दिन पहली बार अनुभव कर रहे थे। मगर अब तो लोग बेमतलब लड़ाई-झगड़ा कर छुरेबाज़ी कर बैठते हैं, सड़क पर दुर्घटना में मर जाते हैं, मगर देश या जाति के लिए मरने की बात सोचते ही चारों ओर अँधेरा-अँधेरा नज़र आता है ! यह सोच कर मन में दुख भर जाता है। तब उन्हें छियासठ वर्ष का जीवन एक बड़ा बोझ-सा लगने लगता है।

उस दिन आकर मधुमिता बोली, "पिताजी, मेरा ट्रांसफ़र कोरापुट के पहाड़ी, जंगली इलाके में हो गया है। ज़रा मंत्री के आगे मुँह खोल देते, कैंसल हो जाता!"

नारायण दास ने विस्मय से कहा, "बहू ! शिक्षक बनी हो, बदली तो होगी ही। मैं मंत्री से क्या कह सकता हूँ? वैसे भी कोरापुट तो बहुत अच्छी जगह है!"

मधुमिता खीझ पड़ी, "जो आज़ादी के लिए जेल गए थे, आज कहाँ-से-कहाँ पहुँच गए हैं ! क्या कुछ नहीं मिला उन्हें ! अपने बेटे-पोतों के लिए बहुत कुछ कर दिया...और आप ! न खुद कुछ करेंगे, न हमें चैन से जीने देंगे?"

नारायण दास यह सुनकर तैश में आ गए। बोले,"आज़ादी के लिए जेल गया था तो आज़ादी के बाद उससे फ़ायदा उठाऊँ? मुनाफ़ा लूँ? छिः छिः ! जिनके नेतृत्व में आज़ादी मिली, वे महात्मा अपने लिए क्या कुछ चाहते थे? कोई पद-पदवी ली? बोलो, जवाब दो!"

मधुमिता चुप नहीं रही। ससुर को सुना दिया, "रोज़ एक गिलास दूध के लिए कहा था डॉक्टर बाबू ने। मैं नौकरी छोड़ दूँगी तो दूध वाले के पैसे क्या आज़ादी चुकाने आएगी? मैं बच्चों को छोड़ कोरापुट नहीं जा सकती।"

नारायण दास मांस-मछली नहीं खाते। अतः उसी का ताना मारा। दूधवाला रोज़ आधा किलो दूध उनके लिए दिया करता। अगले दिन से खुद ही दूध छोड़ दिया। बहू या बेटे किसी ने उस बात का ज़िक्र तक नहीं किया। बेटे से संपर्क पहले ही टूट चुका था। उस घटना के बाद बहू ने भी ममता का बंधन शिथिल कर लिया।

अपने परिवार में नारायण दास बिलकुल निःसंग, अनावश्यक और फालतू चीज़ की तरह उपेक्षित पड़े रहे। अपने ही घर में वे पराए बन गए ! तबीयत बिगड़ने पर वे किसी से कुछ नहीं कहते। समझ गए कि इस युग में पैसा ही सब कुछ है। जिसमें पैसा कमाने की कला नहीं, उसके जीवन का कोई मूल्य नहीं। पैसे न होने पर साधु-सच्चे आदमी को यहाँ कोई नहीं पूछता। कमाऊ न होने पर परिवार में भी कोई नहीं पूछता।

बेटा, बहू, पोता, पोती किसी का इसमें दोष नहीं। उन्होंने अपनी आँख से देखा है – जिन्होंने आज़ादी के लिए ज़रा भी त्याग किया है, उसके बल पर बाद में काफ़ी कुछ बटोरा है। मकान से लेकर पद-पदवी तक अनेक चीज़ों के लिए श्रम किया है, प्राप्त भी किया है। उस दृष्टि से स्वयं वे नालायक हैं, असफल हैं। अतीत के त्याग को पूँजी बना कर भोग की सामग्री जुटाने में वे कभी सफल नहीं हो पाए।

कई बार स्वयं से पूछा है क्या इसलिए दरोगा की नौकरी छोड़ी थी कि आज़ादी के बाद मौज उड़ाएँगे? इसी लोभ से गांधीजी के असहयोग आंदोलन में कूदे...दुख सहे? क्या हो गया उनके सपनों के भारत को? कहाँ गया त्याग, देशप्रेम?

उनकी आँखें आँसुओं से धुँधला गईं। जीने का लोभ फीका होता जा रहा है। पहली महारणा, गोकुल भोल जैसे गांधीवादी सैकड़ों लोग उनकी आँखों के आगे उभर रहे हैं। मन-ही-मन उनसे ईर्ष्या हो आती है। स्वागत में कहते 'आप सब भाग्यवान हैं, देश का अधःपतन देखने से पहले ही चले गए ! देशवासियों को प्रेम ही देते रहे। मेरी तरह उनके लिए संताप का दुर्भाग्य कभी नहीं आया।'

मधुमिता को कोरापुट में अखबार पढ़कर पता चला कि ससुर बीमार हैं। अखबार के अंदर कहीं छोटी-सी खबर छपी थी छोटे-छोटे अक्षरों में 'नारायण दास अस्वस्थ हैं।' पढ़कर मधुमिता चौंक उठी। छुट्टी लेकर वह कुछ फल, दवा आदि सहित कटक आ पहुँची।

पत्नी को अचानक देख सनातन चौंक उठा। पूछा, "छुट्टी तो नहीं थी। अचानक कैसे?"

मधुमिता ने संक्षेप में बताया, "अखबार में पिताजी की बीमारी की बात पढ़ी। मैं समझ गई, हालत नाज़ुक है, वरना अखबार में नहीं छपती। कैसे हैं वे?"

सनातन ने निर्लिप्त भाव से कहा, "यह बीमारी कोई अचानक हुई है? कई दिन से वे खाट पकड़े हैं। फिर वैसे भी उमर हो गई। घिसटने से बेहतर चले जाना होगा। फालतू में ज़रा-सी बात पर छुट्टियाँ खर्च कर आई !"

मधुमिता के चेहरे पर रंग नहीं था। दबे स्वर में कहा, "क्या कह रहे हैं! देश के वे गौरव हैं। केंद्रीय सरकार ने सात वर्ष जेल भोगने पर उन्हें पाँच सौ रुपए भत्ता मंजूर किया है...देखिए, यह पत्र आया है दिल्ली से।"

पाँच सौ मासिक भत्ता !

अब सनातन भी चौंक उठा। बहुत दिन पहले उसी ने जबरन बापू की इच्छा के विरुद्ध उनके दस्तखत लेकर एक दरख्वास्त दिल्ली भेज दी थी। मगर वह दरख्वास्त बिना सिफ़ारिश के मंजूर कैसे हो गई!

मधुमिता ने कागज़ दिखाया। चार-पाँच दिन पहले उसी की मार्फ़त पत्र आया है। केंद्रीय सरकार ने खुशी से स्वाधीनता सेनानी नारायण दास को जीवन-भर के लिए पाँच सौ रुपए का भत्ता मंजूर किया है।

उस कागज़ पर मधुमिता और सनातन की चारों आँखें खुशी में भर कर नाच रही हैं। मानों पहली बार यह कागज़ पढ़कर वे जान पाए हैं कि नारायण दास सचमुच स्वाधीनता सेनानी थे! देश के लिए सात वर्ष जेल गए थे!

मधुमिता ने कहा, "छिः छिः...जो हो गया छोड़ो। अब देर न करो। जल्दी डॉक्टर बुलाओ। हर हालत में पिताजी को बचाना होगा। वे देश के गौरव हैं, जाति के आदर्श हैं। जाओ।"

सनातन तेज़ी से उठ खड़ा हुआ। डॉक्टर को तुरंत बुलाना है। देर न हो जाए !

नारायण दास आँखें मूँदे बिस्तर पर लेटे हैं। दर्द से सारी देह बेचैन है। साँस लेने में भी कष्ट हो रहा है। अचानक किसी ने पाँव सहलाए। पूछा, "कौन, गोकुल?"

"नहीं, पिताजी! मिता हूँ ! आपकी तबियत नरम जानकर कोरापुट से चली आई।"

बहू की ही आवाज़ है। मगर बहू पाँव सहला रही है! उन्हें विश्वास नहीं हुआ।

जेल के दिनों में बीमार होने पर एक और राजबंदी उनकी सेवा करता था। गोकुल मन लगाकर सारे काम कर देता। तेल लगा देता तलवे में, फिर दबाकर उँगलियाँ चटखा देता। अब कभी पाँव पिराने या हाथ मे दर्द होने पर गोकुल याद आ जाता है। मरते समय का उसका चेहरा झलक उठता है। अतः पाँव किसी ने छुए कि गोकुल समझ वे चौंक उठे।

मधुमिता ने कहा, "पिताजी ! मैं आ गई हूँ। आप ठीक हो जाएँगे। उन्हें डॉक्टर बुलाने भेजा है। आप के स्वस्थ न होने तक मैं कोरापुट नहीं जाऊँगी।"

तो यह सपना नहीं था। नारायण दास ने आँखें खोल क्षीण स्वर में पूछा, "बहू है !"

सिरहाने तक आने को कहा। मधुमिता की आँखें पता नहीं, क्या सोच कर छलछला आई हैं। कहा, "पिताजी! डर की कोई बात नहीं। डॉक्टर बुलाने गए हैं वे। दो-चार दिन में स्वस्थ हो जाएँगे।"

नारायण दास ने स्थितप्रज्ञ की तरह कहा, "नहीं बेटी ! मरण से डर नहीं है। सचमुच, देश आज़ाद होने के बाद मेरी ज़रूरत पूरी हो गई है।"

मधुमिता सँभाल नहीं पाई। कहने लगी, "बाबा ! पिताजी ! ऐसा न कहें। देश गुमराह हो रहा है। अभी आप को जीना होगा। बहुत दिन रहना होगा। सरकार ने पाँच सौ रुपए का मासिक भत्ता मंजूर किया है ! ... मैं आपकी सेवा करूँगी..."

बहू की बात सुनकर नारायण दास की छाती में हूक-सी उठी। दर्द से भर गए। चेहरे पर हलकी-सी मुसकान लाते हुए कहा, "बेटी ! सरकारी भत्ते की तरह तेरा स्नेह मुझे बहुत देर से मिला। मैं उसका उपभोग कर नहीं पाया... "

मधुमिता ने देखा, ससुर के चेहरे का रंग अचानक बदल रहा है। आँखें मुँद गई हैं। चेहरा सचमुच किसी शहीद की तरह है, उन शहीदों की तरह जिनके चेहरे मधुमिता ने सिर्फ़ किताब के पन्नों में देखे हैं।

बोध-प्रश्न

1. किस घटना ने नारायण बाबू के देश-प्रेम के स्थिर पात्र को हिलाकर रख दिया?
2. नारायण बाबू ने अपने पुत्र सनातन को लेकर क्या स्वप्न सँजोए थे? वे स्वप्न चूर-चूर क्यों हो गए?
3. लेखक ने सनातन को स्वाधीनोत्तर भारत का नकली क्रांतिकारी क्यों कहा है?
4. नारायण बाबू को यह कब लगा कि बेटे के साथ अब संबंध टूट ही गया है?
5. अपने ही घर में नारायण बाबू किस तरह पराए हो गए?
6. 'अतीत के त्याग को पूँजी बनाकर भोग की पूँजी जुटाने' से क्या आशय है?
7. नारायण बाबू को पहली महारणा, गोकुल भोल जैसे सैंकड़ों लोगों से मन-ही-मन ईर्ष्या क्यों हो आती थी?
8. मधुमिता हर हालत में नारायण बाबू को क्यों बचाना चाहती थी?
9. लेखक ने नारायण बाबू और उनके पुत्र को समानांतर सरल रेखाएँ क्यों कहा है?
10. "सब किसी 'सुख' नामक तोते को किसी तरह पिंजड़े में भर लेने के लिए दौड़-धूप में लगे हैं। क्या न्याय है, क्या अन्याय, यह समझने की उन्हें फ़ुरसत कहाँ?" वर्तमान संदर्भ में इस कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

लेखक-परिचय

सियारामशरण गुप्त (1895-1963)

गांधीवादी विचारक लेखक। काव्य रचनाओं के साथ-साथ गद्य की विभिन्न विधाओं में रचनाएँ की हैं। गद्य कृतियाँ: पुण्य पर्व (नाटक), गोद, नारी, अंतिम आकांक्षा (उपन्यास), मानुषी (कहानी संग्रह) और झूठ-सच (निबंध संकलन)। काव्य कृतियाँ: विषाद, अनाथ, आर्द्रा, उन्मुक्त, मृण्मयी, गोपिका आदि।

सुभाष चंद्र बोस (1887-1945)

देश के शीर्षस्थ नेता। छात्रावस्था से ही मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए वे राजनीति में भाग लेने लगे। 1942 में नजरबंदी के दिनों में अंग्रेज़ों से आँख बचाकर देश से बाहर चले गए। सिंगापुर में उन्होंने आज़ाद हिंद फौज़ की स्थापना की और अंग्रेज़ी सेना से डटकर लोहा लिया।

सुभाष चंद्र बोस ने राजनीति के साथ-साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काम किया। वे दैनिक 'फारवर्ड' के संपादक रहे। वे एक अच्छे लेखक थे। उनकी कई पुस्तकें भी प्रकाशित हुईं।

श्रीलाल शुक्ल (1925)

प्रशासनिक सेवा से निवृत्त। इन्होंने उपन्यासकार और व्यंग्यकार के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त की है। प्रमुख रचनाएँ हैं – सूनी घाटी का सूरज, अज्ञातवास, रागदरबारी, सीमाएँ टूटती हैं, मकान, आदमी का ज़हर, पहला पड़ाव (उपन्यास), अंगद का पाँव, यहाँ से वहाँ, उमराव नगर में कुछ दिन (व्यंग्य संग्रह)। 'रागदरबारी' उपन्यास के लिए 1969 में 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार से सम्मानित।

ऋता शुक्ल (1950)

संवेदनशील महिला लेखिका। मुख्यतः कहानीकार। 1977 में पहली कहानी 'आत्मदाह' प्रकाशित हुई। देश की विभिन्न प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में अनेक कहानियाँ प्रकाशित।

भगवतीचरण वर्मा (1903-1981)

कवि के रूप में साहित्यिक जीवन का प्रारंभ। बाद में कथा साहित्य में वे पूरी तरह से रम गए और इसमें उन्हें लोकप्रियता भी मिली। उनका पहला उपन्यास 'चित्रलेखा' कथावस्तु और उनकी विशिष्ट शैली के कारण बहुचर्चित हुआ। उनके प्रमुख उपन्यास हैं – टेढ़े-मेढ़े रास्ते, भूले-बिसरे चित्र, सीधी-सच्ची बातें, सबहि नचावत राम गोसाईं।

विभूति पट्टनायक

प्रसिद्ध उड़िया कथाकार एवं शिक्षक, मानव की मूल संवेदनाओं के कुशल चितेरे। उल्लेखनीय रचनाएँ – श्रेष्ठ गल्प कलिकाल, राजकन्यार दुख, मन भुले नाहिं (कहानी संग्रह) तथा चपल छंपा, बधु निरूपमा, नायिकार नाम श्रावणी (उपन्यास)। उड़िया साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित। उड़िया त्रैमासिक पत्रिका 'गल्प' के संपादक।

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो० क० गांधी

Krech and others (1962, p.177) consider attitude as "an enduring system of positive or negative evaluations, emotional feelings, and pro or con action tendencies with respect to a social object."

From the foregoing definitions it is clear that professional use and definition of the term "attitude" range widely. Despite the variations in the definition of the term, the existing definitions agree upon are common characteristic. "Attitude", remarks Cardno (1955, pp. 345-352),"entails an existing predisposition to respond to social objects, which, in interaction with situational and other dispositional variables, guides and directs the overt behaviour of the individual".

The variations in definitions of the term attitude, may be attributed to the epistemological issue of specificity versus generality in the determination of the behaviour. In this context, the issue concerns the degree to which attitudes may be considered to have specific referents or while others tend to make attitudes a generalized disposition of the person.

A second source of variation in definition of the term "attitude" results from the tendency to generalize the construct to include any predisposition to respond. As the term is used it involves only predispositions to respond to social and allied aspects of the environment. It is generally considered to include interactions with persons and person produced objects, events and situations.

Another difference lies in the theoretical conception of the composition of an attitude. Krech and others (1964, p. 172) have conceptualized attitudes as consisting of three components- an affective component, a cognitive component and a behavioural component. Triandis (1964, pp. 420-430) has suggested that the term attitude sub-sumes evaluations, behavioural intentions, and opinions. An attitude is considered to be an evaluative reaction based upon concepts which are closely related to other cognitions and to overt behaviour.

The present study accepts Krech's definition of the term "attitude" which according to them is (i) an enduring system (ii) of positive or negative evolutions (iii) emotional feelings (iv) pro and con action tendencies (v) with respect to a social object. In the present context, as applied to the investigation in hand, it is an enduring system of favourable or unfavourable evaluations, feelings and action tendencies with respect to the teaching profession and allied areas. The Teacher Attitude Inventory (TAI), which has been prepared in this study to measure the favourableness or unfavourableness of the reactions of teachers towards the teaching profession and areas connected with it. Thus in the present study the term "attitude" is meant Student-teacher's evaluations, feelings and action tendencies concerning the teaching profession and allied aspects.

To conclude, "attitudes", in the words of Shaw and Wright (1967, p.10), "are a relatively enduring system of affective, evaluative reactions based upon and reflecting the evaluative

concepts or beliefs which have been learned about the characteristics of a social object or class of social objects".

<u>Student-Teachers</u>

An individual who is undergoing teacher training is labelled as "student-teacher". The student-teacher are also referred as prospective teachers or future (would be) teachers. A person who has received teacher-training and is serving in a school is called "practising teacher". In the context of this study student-teachers are those who were pursuing the B.Ed. or L.T. course of study in different secondary teacher training institutions of the different Hindi-speaking states in the year 1971-72 or in the year 1973-74 in Uttar Pradesh, to become teachers in the future. The terms'student-teachers, teacher-trainees, teachers under training' and prospective teachers are used synonymously.

<u>Teacher-Training</u>

There are many types of training courses meant for teachers such as B.Ed. (Bachelor of Education and L.T. (Licentiate of Teaching) and so on. In this study all types of secondary teacher training programmes have been included. The minimum qualification for admission to these courses is a Bachelor's degree in Arts, Science, or Commerce and so on. This training includes instruction in theory papers and practice in teaching skill. It is a programme of one year duration. To specific, of one academic session i.e. from July to the end of April.

Professional Attitudes

Attitudes directed toward professional objects, values, issues, groups, and institutions are "professional attitudes". The individual forms attitudes, some of which may be highly idiosyncratic. However the psychology of attitude formation and functioning applies equally to social, professional and more idiosyncratic subject-object relation-ships. In this study professional attitude is used to indicate the attitude of prospective teachers towards teaching profession and its various aspects.

Attitude Inventory/ Attitude Scale

These are psychological instruments devised to measure the attitudes of an individual or a group toward an object or an idea. An attitude inventory may consist of different sub-scales. They are constructed using a variety of techniques. Thurstone and Likert techniques are quite popular. Recently Guttman's Scalogram analysis, Stephensonꞌs Q methodology, and Osgood and his associates' Semantic differential are being increasingly used. In the present study, the term teacher attitude inventory if not otherwise made specific means the TAI developed by the researchers.

ORGANIZATION OF REPORT

The present report has been presented in three parts besides a routine section on appendices.

Part I has two chapters. Chapter 1 discusses the need and importance of this study keeping in view the meaning and nature

of teacher education and role of professional preparation of teachers in improving the quality of education. In addition to starting the problem, it highlights the objectives, delimitations and principal assumptions of the study in hand. It also defines the terms frequently used in the body of this report. Chapter 2 surveys selected relevant studies on measurement of teacher attitudes conducted in the Western countries as well as in India. It not only reviews the available attitude measuring tools but also presents a critique of studies on teacher attitude change.

Part II contains three chapters. Chapter 3 describes the plan, procedure, and strategy of the study. Chapter 4 provides a description of the method of construction, development and standardization of the Teacher Attitude Inventory. Chapter 5 deals with the analysis and interpretation of the data on change in professional attitudes of student-teachers as a consequence of undergoing a course of teacher-preparation of the duration of one academic year. It also makes an attempt to interpret the findings and to discuss the obtained results critically.

Part III has only one chapter. Chapter 6 summarizes the findings and results of this investigation. It pinpoints the limitations of the study and presents some general conclusions. It makes an attempt to highlight the usefulness and implications of the present study. It makes some suggestions for improving the existing programmes of teacher-preparation and

trainee-admission . Lastly, it suggests some possibilities for further research in the area of attitude measurement and teacher attitude change. At the end of the sixth chapter, there is a bibliography of selected works, periodical articles and allied material about attitude assessment, appraisal, and change of teachers.

There are some important appendices in the end.

Appendix - I. Teacher Attitude Inventory-Preliminary Form

(a) Bilingual Test Booklet

(b) Answer - sheet

Appendix - II. Teacher Attitude Inventory - Final Form

(a) Bilingual Re-usable Test Booklet

(b) General Information sheet

(c) Answer-sheet

(d) Scoring Keys

(e) Manual

In addition to the above, there are other appendices which give information about the institutions contacted for try-out study, norming study, and attitude change study.

CHAPTER - 2

SURVEY OF RELATED LITERATURE

It is always helpful to get an acquaintance with the field in which one wants to work. Knowing about the developments, new trends, and the type of work that already exists in the field is the first essential step one should take while initiating a study. Such a review gives the researcher a perspective of the overall field, or "the feel of the field" as they call it. The following pages are the result of attempts in this direction.

MEASUREMENT OF TEACHER ATTITUDES:

The issue of measuring attitudes poses many problems. Scott (1968, pp. 204-273) while reviewing the current status of attitude measurement points out that the construct "attitude" has become so complex that one can no longer tell clearly about "measuring an attitude". The past and present attempts to assess teachers' attitudes, according to Loree (1971, pp. 99-118), can be explained as: use of (a) Self-reporting inventories, (b) Systematic observations, (c) Projective techniques, and (d) Semantic differential. Q methodology is another new approach. Each approach poses a different problem and solves the issues partly.

Not many self-reporting inventories are available for use. Among the available self-reporting instruments, the most widely used tool for the measurement of teacher attitudes is the MTAI- Minnesota Teacher Attitude Inventory (Callis, Cook and Leeds, 1951). In addition to the possibility of faking, the self-reporting inventories have another limitation.

The respondents generally give socially-desirable response and that explains why the actual behaviour and belief assessment often do not correspond. The problem of acquiescence also is present.

There are many approaches to the development of self-reporting inventories viz. Thurstone's Equal Appearing Interval method, Likert's Summated Rating method, various combinations and modifications of Thurstone and Likert techniques, Guttman's Scalogram analysis and such other procedures. Thurstone and Likert techniques are more popular and have been widely used.

Studies of attitudes through systematic observations are difficult. Such studies give rise to many problems which have been discussed by Anderson and Brewer (1945), Remmers (1963), Medley and Mitzel (1966), Weick (1968), and Fuller (1969). Not much research has been conducted on systematic observation as a method of attitude assessment.

Projective techniques are not easy to use for assessing teacher attitudes as they are complicated and require special training and talent for their proper interpretation and use. But they have a specific advantage over other methods and techniques. Their use yields a rich variety of information though it is hard to objectify the obtained data. Getzels and Jackson (1963) and Wehling and Charters (1969) have reviewed the literature on the use of projective techniques in the analysis of teacher personality including teacher attitudes.

Studies of Semantic Differential have become popular in the recent past with the writings of Osgood, Suci and Tannenbaum (1957). This approach is a new technique of observing and measuring the psychological meaning of things, usually concepts. It can be and has been used in attitude studies as it has a particular merit when unconscious shifts occurring in the connotations attached to an attitude object are planned to be measured. Not much work has been done on problems and use of semantic differential as a technique of attitude assessment.

Q methodology as developed by Stephenson (1953) is another set of psychometric and statistical procedures to assess attitudes. Kerlinger (1960) used this technique for studying educational attitudes. This approach has not been perhaps used in India.

Many of the personality and attitude tests employed in research on attitudes of prospective teachers or student-teachers and the effect of training have been American in origin. Some workers have questioned the administration of such tests to British teachers or students. Referring to the Minnesota Teacher Attitude Inventory (MTAI), Evans (1966, pp.134-141) comments; " All who have used it in this country agree that the American norms are not applicable here and it is also probable that some rewording of items would be desirable ".

Herbert and Turnbull (1963, pp.24-31) regarded the

Minnesota Teacher Attitude Inventory as a successful predictor of college teaching and educational assessments.

However it seems that the MTAI cannot be employed as a satisfactory instrument for use in research or selection of students without modification. Herbert and Turnbull recommended restandardization of the Inventory and rewording of the items. Evans (1966, pp. 134-141) has pointed out that even though differences in mean scores of more and less successful students may be significant, "there is generally considerable overlapping of scores in the two groups and consequent difficulty of discrimination among individuals members". She has analysed and criticized the form of the MTAI, and has recommended that it should be improved and standardized in Britain.

One of the earliest and best known of these attitude scales was drawn up by Yeager (1935 , pp. 1-40) and it measures attitude towards teachers and teaching profession. Results obtained by Mathews (1940), Rostker (1945), Rolfe (1945) and La Duke (1945) suggest that the Yeager scale may have a limited usefulness in identifying teachers of different levels of efficiency. This work was all carriedout in America.

Similar work in Britain, using the attitude scale Teachers and Teaching, supported the view that there is little, if any connection between attitude scores and practical teaching marks in the case of student teachers. (Evans, 1952 and

1953) Reflection suggests that this is not a really surprising result.

Another approach is found in a test, designed to predict how well a teacher will get along with his pupils and indirectly how satisfied he will be with teaching as a career, which was constructed by Cook, Leeds and Callis (1951). The items used in Minnesota Teacher Attitude Inventory deal with matters which are frequently listed in courses in the theory of education, and scores on the Inventory have been found to show a small correlation with students' marks in a written examination on this subject (Evans, 1958). In spite of claims made for its value in America, no correlation was found between Inventory Scores and student's practical teaching marks. This result taken in conjunction with evidence that students can fake high scores on the Inventory with great success, suggests that it is not a good instrument for use in the selection of teacher-training students in any country, though according to Arvidson (1958) it seems to be more useful with experienced teachers. A paper by Herbert and Turnbull (1963), provides evidence that the Inventory used at intervals during training, can give indications of the probable success of students, and can also show how their attitudes develop during training. To make effective use of it in any country, re-standardization and some rewording would be necessary, as American norms bear little relation to scores obtained by students here.

To sum up, there are some tools available for measu-

ring of attitudes of teachers. Most of them are largely developed in the West, specially in the United States of America. A good number of them have become out of date or are culturebound. Some of these tools have been adapted in India, but they are poor adaptation because the persons preparing them have not bothered to maintain high standards of expertness and exactness. Joshi (1960) has adapted the widely used MTAI but has not succeeded in developing its manual containing details of reliability, validity and norms. Not a single psychometrically "good" Indian attitude measuring tool for prospective and practising teachers is available which is systematically constructed and scientifically developed and standardised. This explains why in this project an attempt has been made to design and develop a teacher attitude inventory (TAI) based on summated rating technique of Likert (1932, pp. 1-55).

STUDIES ON TEACHER ATTITUDES:

(a) SOME FOREIGN STUDIES:

A good many studies on teachers attitudes relate MTAI scores to a variety of teacher characteristics. In a study, Della Piana and Gage (1955, pp. 167-78) investigated the hypothesis that pupil's liking of teachers is a function of the interaction between pupil values and teacher attitudes. Maudt (1954, pp. 418-22) studied attitudes of outstandingly poor and good teachers as nominated by their principals and arrived at the result that good elementary teachers expressed

more favourable attitudes in general than did good secondary teachers. Information compiled by Seeger (1955, pp. 43-48) from periodicals covering a twenty-year period showed that teachers' attitudes toward administration changed in this period from subservient acceptance to desire for active and democratic participation in curriculum and policy.

Ryans and his associates (1960) conducted about 100 projects, involving 6000 teachers, 1700 schools and 450 school systems spread over a period of six years for identifying and analyzing some of the patterns of classroom behaviours, attitudes, viewpoints and intellectual and emotional qualities which characterize teachers. He found no significant differences in teacher's attitudes towards pupils and towards democratic class-room procedures due to variations in teaching experience and age. Secondary women teachers were reported to have attained significantly higher scores than secondary men teachers on scale measuring favourable attitude toward pupils and toward democratic class-room practices.

Horn and Morrison (1965, pp. 118-25) conducted a factor-analytic study of MTAI using responses of 306 college students enrolled in education courses which yielded evidence contrary to the hypothesis of one factor suggesting instead of the existence of 5 covarying patterns of items.

Sprinthal, Whiteley and Mosher (1966, pp. 93-106) supported the hypothesis that cognitive flexibility (an attitude) and effective teaching (behaviour) are related.

Silberman (1969, pp. 402-07) studied whether teacher attitudes towards their students are reverted in teachers' classroom behaviour and found that teachers' attitudes significantly affected the distribution of each observed teacher behaviour.

Pidgeon (1970, pp. 11-27) and Burstall (1970, pp.19-25) also support the hypothesis that a teacher's attitudes influence the behaviour and ability of his pupils.

Nash (1973, pp.141-48) used Repertory Grid Technique and obtained constructs employed by individual teachers in their perceptions of their pupils and derived from these a rank order of pupils. He found that in the classroom situation the teacher's perception of her pupils is of greater importance than the pupils' social class.

(b) STUDIES IN INDIA

"A perusal of the work done in India in the area of attitudes", observes Buch, (1972, pp. 81-82), "compels one to remark that most of the work done in this area is of an elementary type. No centre or institution has undertaken sustained work in this area over a period of time".

Some studies deal with the attitudes of teachers and teacher trainees towards teaching profession and teaching as a career. Most of them are conducted by the M.Ed. students. These have not been included here because they are neither

important nor relative from the points of view of generalizability and application.

Buch (1952) surveyed the attitude of teachers towards the profession. The results indicated that, in general, training has a favourable effect on the attitude of teachers towards their jobs, except when experience exceeds five years after training.

Adaval (1958, pp. 137-138) has reviewed a number of attitude studies and concluded that "All these studies indicate one general trend, namely, that the attitude of teachers to their profession is not favourable".

Pandey (1958) reports that women-teachers have taken teaching as a profession because they are genuinely interested in it and because it affords them opportunities they cannot otherwise get. Rastogi (1956) indicates the same attitude. Kothari (1958) and Thakkar (1959) have also shown that teachers like their profession but there is positive dis satisfaction with pay scales.

Verma (1958) has concluded that attitude of student teachers towards the child and school work was not significantly related to their theoretical, economic, aesthetic and religious values, but it was significantly and positively related to social values and significantly and negatively related to political values.

Kuppuswamy and Tapan (1968, pp. 9-16) constructed a Likert-type scale to measure the attitude of teachers towards moral and religious instructions in schools and found that there were significant differences between the scores of women and men teachers, and married and unmarried teachers.

Agrawal (1966) found that training college teachers have a favourable attitude towards the profession and that factors like 'designation', 'age', 'sex' and 'experience' do not influence the attitudes.

A perusal of the preceding paras shows that there is a strong need to do careful and cautious studies in the area of measurement of teacher attitudes.

STUDIES OF CHANGE OF TEACHER ATTITUDES

Although many attitudes are acquired during childhood as a result of home influences, these are not necessarily immutable. If they were, schools would have very little chance of doing anything more than teaching their pupils a certain amount of academic subject-matter, and the concept of education would have to be changed. Fortunately attitudes change and develop throughout life, and helping in this process is an important part of the work of the teachers as well as of parents.

A great many studies have been made of the changes that have occured in the attitude of students during their

college courses. Students as a body are unusually available for testing as well as unusually amenable to it, and this probably accounts for the large number of experiments to which they have been subjected.

Often all that has been alone is to estimate the attitudes of students at the beginning, and again at the end, of a period in a particular college, the implication being that any change observed is due to the influence of the college. Studies of this type were made by Jones (1938), Lentz (1938) and New Comb (1943 and 1947).

There are two approaches to the problem of changing the attitude of teachers.

(1) <u>Changing Attitudes through Information Input:</u>

In the first approach, the student teacher is provided with information. This information may be imparted through a variety of media-lectures, readings, television, films, demonstrations and the like. The newly acquired information is expected to change the belief system of the learner.

(2) <u>Changing Attitude through Experiences:</u>

The attitude changes occurring as a result of certain experiences may be explained and predicted through conditioning. An Attitude elicits feeling of pleasantness or unpleasantness. This feeling tone aspect of an attitude may be explained in terms of classical conditioning whereas the behavioural component of an attitude may be learned through

instrumental conditioning. Hence prediction of the kind of attitude changes that are likely to occur during student teaching or other experiences in working with children depends on two factors:

(1) Pleasantness or unpleasantness of experience

(2) Consequences of the student teacher's behaviours as she interacted with children.

(a) [illegible]

Most of the studies in the field of teacher education aim at finding whether the attitudes of prospective and practising teachers are favourable or not. Few attempts have been made to find the change in the attitudes of the prospective teachers in the desired or expected direction due to training.

An exhaustive study of students in teachers' colleges by Hale (1964, pp. 102-4) in New South Wales revealed little change in a wide range of attitudes assessed at the beginning and the end of a two-year course. Symonds ([illegible], pp. 7[illegible]-83) concluded that methods and procedures learned during college preparation may influence teaching superficially but they do not determine the nature of the relation of a teacher to his students or the teachers' basic attitude with regard to teaching. Cox (1960, pp. 89-94) found that although the field experience of one group of pre-student teaching students did not increase their positive attitudes towards education, it did change their attitudes measurably.

Some studies have demonstrated that it is possible to modify the belief system of teachers through course work. Leton (1951, pp. 118-22) reported that the attitudes towards children of elementary education students become significantly more favourable during a course in child development.

Newcomb (1952) investigated the change in the attitudes of college girls (Bennington) between the years 1935 and 1939. He found that girls who had spent three to four years in college showed changed attitudes, and these changed attitudes persisted for a long time even after leaving the college. Those who had spent only one or two years in college had not changed their attitudes to any considerable extent.

Jacob (1964) in a study of attitude change in teacher education found that modifications in attitude were accomplished in the initial courses of professional Education offered by the institutions but not in student teaching semesters. He further elaborated that student-teachers preparation of the student-teaching situation has a greater relationship. Newsome and others (1965, pp.319-23) in a study found that student-teachers showed a significant decrease in consistency of ideas about education after they had completed student teaching. According to Wilk (1964, pp. 375-80) positive changes in MTAI scores, indicative of positive feelings towards children, were related to grade

placement of student-teachers and their choice of school.

Some studies report the effects of a teacher education programme upon M T A I scores.

Rocchio and Kearney (1956, pp. 91 - 94) have reported that teachers recently completing a course in mental hygiene scored higher on the M T A I than teachers not recently taking such a course. Brim (1955, pp.441 - 45) tested 950 undergraduate students in a teacher training programme at various levels in their programme at the beginning and end of a fall quarter and found that the total group gained significantly and at each succession level of the programme student means on the M T A I became higher.

In various studies reporting positive effects of teacher education on the MTAI scores, higher scores of students may reflect their improved perception of "acceptable beliefs" rather than their own firmly held convictions. Rabinowitz (1954) and Kliemantier and Ferguson (1950) have reported studies showing markedly altered scores on the MTAI when college students and teachers were instructed to stimulate the attitudinal oreintations of particular types of teachers.

The belief of students can be changed by college course for exposure to information can serve to form or to alter attitudes under certain conditions. Change is facilitated in many conditions some of which are :

(1) When the source of information is respected

(2) When the initial attitude is not firmly entrenched

(3) When the communication reflects attitudes that are consistent to the needs of the receiver

(4) When the communication is acceptable to important reference groups of the receiver.

Possibly most, if not all, of these conditions are perhaps met in courses of teacher education programme in some institutions.

Student teaching is one of the important aspects of teacher training programme. As the cooperating teachers play the central role in guiding student teaching experiences, they naturally influence the attitudes and behaviour of student teachers. Moreover the influence may occur because the cooperating teacher is a source of information to the student-teacher. Yee (1969, pp. 327-32) has reported studies supporting this hypothesis.

Studies by Gilbink (1967) on the relationship between MTAI scores and teacher behaviour have yielded discouraging results. However this failure of the MTAI to predict teacher behaviour is not really surprising. The reinforcement learning theory may confirm this fact.

It would be a mistake to over-generalise from studies reporting a poor relationship between attitude and

behaviour measures. Under certain conditions attitude measures predict behaviour satisfactorily. Gough, Durflinger and Hill (1968, pp. 119-27) were able to predict teaching effectiveness from certain scales of the California Psychological Inventory.

Walberg (1968) has reported that participation in student teaching may have an adverse effect on attitudes towards self and children. When the teaching efforts of the student teacher are met with much less success than hoped for, the student teachers self-esteem may suffer and the collective halos may be figuratively removed from atop the heads of her pupils. Dills, Facagnoni, and Elliott (1964) found significant negative changes in the openness of both elementary and secondary student-teachers during their student teaching. The negative changes were greater for the student-teachers who were initially more open. Presently it is not clear whether the adverse effects on attitudes resulting from a teacher training experience persist over a long time period or whether the effects are merely of a temporary nature.

Besides traumatic experiences, favourable shifts may occur in the attitudes of student teachers as they learn a new responsible role in their interactions with children and youth. Nagle (1959, pp. 355-57) and Cox (1960, pp.89-94) report significant improvement in attitudes of teachers.

Mazer (1969, pp. 116-20) has reported on attitude

and personality Changes in student-teachers of disadvantaged youth. Semantic differential scales were used to assess attitude shifts and were administered in the beginning, after seven weeks, and at the end of the programme. During the course of 15 week program, rather substantial favourable shifts were noted in the attitudes of student-teachers towards disadvantaged children and the parents of disadvantaged children.

Studies are lacking in which systematic observation is used to assess the effects of experiences on attitudes. Joyce and Hodges (1966, pp. 409-415) reported an instructional procedure designed to increase teaching flexibility. But there has been no concomitant efforts to measure the behavioural manifestation of a belief that more efficient learning becomes possible when a teacher can purposefully exhibit a wide range of teaching styles.

Lantz (1964) studied the change in the concept of student-teachers about self and others and found that there was a significant change in the concept of student-teachers about self and others. Student teaching experiences tempered their idealism regarding their self-picture. The changes in the concept were qualitative as well as quantitative.

Brim (1966) conducted a study to determine the effect of a teacher education programme upon the attitudes of undergraduate students towards children. At the beginning and

end of a fall quarter, the MTAI was administered to [illegible]50 undergraduate teacher education students in the various levels of the professional programmes at the University of Denver. Pre-test and Post-test scores were compared and differences were obtained (t= .01 level). Student attitudes were reported to have changed while in the teacher education programme by influences within and outside the programme.

Lipscomb (19[illegible]) reveals the attitudes of student-teachers in elementary education before and after their student teaching experience in an effort to determine whether the attitudinal change had occured and showed that significant changes occured in the expressed attitudes of student-teachers during their student teaching experience.

Campbell (1967, pp.160-162) investigated the change in attitudes in five dimensions as determined by pre- and post-test responses to MTAI. Except principles of child development no significant change occured in other dimensions. In the case of principles of child development an attitude change from agreement to disagreement took place.

Horowitz ([illegible]) in his study of student-teachers and their class room experiences found that after experiences in schools student-teachers perceive co-operative teachers as being more idiographic and less transactional than they perceived them to be prior to student teaching.

Muss (1963) in order to measure attitude changes as a function of studying and teaching administered MTAI to 52 students in an experimental fifth-year graduate programme in elementary education on three occassions (1) before classes began (2) after completing the academic programme and (3) following a 12 months internship. During the academic programme MTAI scores were found to have increased significantly and attitudes became more tolerant and more child-centred. In contrast, the attitudes during the internship declined. Furthermore frustration in the internship was found to be significantly correlated with a decrease in the MTAI Scores.

Greene (1972, pp. 343-347) administered MTAI to a group of prospective teachers in February and again in May to determine the significance of change in mean gains between the experimental and control groups. The results desclosed that there was a mean gain in attitude scores of students significant at .05 level.

Butts and Raun (1973) conducted a study of the teachers of the Austin Independent School District using the Semantic Differential method. Regression analysis of covariance showed that grade level was a relevant contribution to a positive change in the attitude of primary level teachers but not for those teaching at the intermediate level. Previous course hours in Science were also found to make a relevant contribution to more positive attitude for those teachers who had

no teaching experience. Pre-teaching experience and location of the school where the teacher teaches did not appear to be relevant contributors to attitude change.

(b) STUDIES IN INDIA

Educational research in India is of recent origin. Even then some studies have been made by Ph.D. scholars, M.Ed. students and by some educational institutions. Studies in the area of Teacher Education and attitudinal changes are very few even then an attempt was made to gather some information about these studies. Like the Western studies they also largely aim at finding whether the attitudes are favourable or not, or they look for change in attitudes as a consequence of teacher training or through some sort of a treatment. No attempt has been made to find suitable programmes or techniques to change the attitudes of teachers or teacher trainees.

Srinivaslu (1964) studied the attitudinal changes of graduate student-teachers during the training course.

Verma (1968) investigated into the impact of training on the values, attitudes, personal problems and adjustment of teachers with a major aim to study whether teacher training made a favourable impact on the values, attitudes, personal problems and adjustment of student-teachers and how these variables were related to one another. The impact of teacher

training programme on the attitude of student teachers towards children and school work were found to have been consistently favourable, witnessing a significant gain in scores at almost all points of the scale.

Pasrija (1970, pp.6-8) and Kakkar (1970, pp.106-13) studied the impact of the teacher training programme upon the attitudes of teacher trainees towards children but found no noticeable change in their attitude at the end of the training period.

Raina and Raina (1968, pp.125-18) in their study of 140 graduate student-teachers found that the teacher training programme did not lead to any significant shift of attitudes in a favourable direction. Raina (1971) also studied the effect of internship on attitude change.

Gil (1971) investigated the impact of training on the attitude of teacher-pupils towards the main aspects of the teaching of the adolescents. The test was administered first before the session started and again before the session closed on a sample of 100 B.Ed. trainees. The results revealed that a fairly considerable degree of change in outlook was made possible by training in case of both sexes of teacher-pupils with different teaching experience.

Mehrotra (1973, pp.27-34) conducted a study to see the impact of B.Ed. course on the attitudes of those who have gone through it. The study was based on the data collected from the full time and correspondence course B.Ed. students

of Central Institute of Education, Delhi. Five-point 30-item Likert type Summated Rating Scale was prepared and administered at the beginning and end of the session. In all cases, the attitude scores of teacher-trainees were found to have been declined instead of improving as the course proceeded.

Mulla and Singh (1974, pp.439) while reviewing research on teacher education in India reiterate that "it is in the fitness of things that more and more research studies are focussed on the problems of teacher education in India and abroad". "The present teacher education practices", they observe, "are now challenged and the role of the teacher in a changing society is reassessed from a scientific viewpoint." The concepts have gradually undergone a change. Jangira and Sharma (1974, p.421) remark that "teaching is a series of events wherein teacher attempts to change the behaviour of students along the intended direction". "The neglect of research on teaching and teacher behaviour", according to them, "may be attributed to the complexity of the problem, absence of adequate-tools of observation and the high cost involved in observational studies".

The preceding review, analysis and discussion indicates that there is an imperative need to develop a Teacher Attitude Inventory for measuring and identifying the attitude patterns of prospective and practising teachers in India with greater dependability, higher reliability, and increased validity as no such tool is available in the country though

there is a persistent demand for it.

Furthermore, though some attempts at assessing attitude change have been made in India they are mostly sketchy, unsystematic, and unscientific. No Indian research scholar has studied consistently and cautiously the effectiveness, of teacher-preparation programmes interms of changing beliefs, values, and attitudes though there is often a cry that teacher-training institutions have become obsolete.

The foregoing survey and description has shed light on many useful studies conducted on related themes in the West and India and has brought into sharp focus the need for undertaking the present project. Perhaps, this endeavour equipped the research team to prepare a systematic plan, to formulate a healthy structure and to design a worthwhile strategy for successfull completion of the project.

To be precise, such an analytical exercise perhaps helped in eliminating certain grosser imperfections of the present report.

PART - II

Section-3

PLAN AND PROCEDURE

It was planned that the present study which had two clear-cut and well-defined parts would be carried out in two phases.

[illegible]

In the first phase an attempt was made to construct, develop and standardise a new tool for assessing professional attitudes of prospective and practising secondary school teachers. This tool has been named as Teacher Attitude Inventory (T.A.I.). It was decided to construct this tool following the Likert procedure. It was thought that Likert technique would meet the purposes of the study.

The second phase made an endeavour to highlight the possibilities of the wide scale use and application of the newly developed tool for measuring changes in the professional attitudes of student-teachers as a consequence of one year of training dependably.

PART - I: Teacher Attitude Inventory: Its Construction and Standardization:

The construction and standardization of the Teacher Attitude Inventory was the first major step involved. A number of attitude scales and inventories were procured, their contents were analyzed and thoroughly scrutinized as to the attitudes studied, types of items and other technical details. The literature pertaining to attitudes and test construction was also studied. Finally, it was decided to prepare items for the TAI

for assessing attitude towards teaching profession, class-room teaching, child-centred practices, educational process, pupils and teachers. The rationale for the choice of these attitude areas was that these were significant and needed careful study. Furthermore, it was decided to develop the inventory on the lines of Likert method. It was also thought that it would be possible to validate it against any dependable criterion.

Items were constructed in the form of statements requiring preferences to be made in the form of strongly agree (SA), agree (A), undecided (U), disagree (D), and strongly disagree(SD). The items in the beginning, 300 that covered all the sub-scales, fifty on each of the six sub-scales were written in Hindi and English language in the beginning. Ten from each of the six sub-scales, which were weak and faulty were dropped outrightly. The first pool of remaining 240 items (40 on each sub-scale) was scrutinized by a group of some judges-specialists in Research, methodology and Teacher Education. These items were, later on, studied by a group of some M.Ed. students. In the light of the discussions 150 psychometrically "good" statements, twenty-five statement in each of the six sub-scales of the TAI were selected for inclusion in the preliminary form for try-out.

The preliminary form of the bilingual inventory (TAI) was administered to B.Ed. students about 1500 in number three training institutions of each of the five Hindi-speaking states of Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Bihar, Haryana and Rajasthan for try-out. A set of twelve scoring keys was devised. The scoring of 1400 answer sheets was completed and the remaining

38 cases were dropped as they were either carelessly filled-out or were incomplete. The scored answer sheets were arranged in descending order. Out of 1409 cases 764 cases were selected for thorough scrutiny. There were 382 cases in upper 27% and 382 cases in lower 27% for item analysis. The t value of each of the 120 items of the six sub-scales in the TAI were computed. For the final form of the inventory only those items were retained which have a t value of 1.75 or greater than it. The final form of the inventory consists of 90 items, fifteen in each of the six sub-scales, out of which 43 are favourable and 47 are unfavourable.

The inventory was standardized on a group of 2139 student-teachers i.e. about 5% of the total population of B.Ed. student-teachers in the Hindi-speaking states viz. Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Rajasthan, Bihar and Haryana. The group was randomly selected on the basis of proportionate stratified random sampling where sex (male and female) and type of institution was used as criteria for stratification. The reliability of the inventory was determined using the "test-retest" and "split-half" methods. The inventory was validated through the application of "known groups" and "stimulus group" techniques. The validity and reliability of the TAI appears to be satisfactory. Norms were prepared for student-teachers based on sex only as data on other variables was inadequate. More details on the construction and standardization of the TAI have been discussed in chapter 4. A manual for the TAI has also been prepared.

Part 8- III Studying Change in Professional Attitudes of Student Teachers: Procedure and Problem-

Attitude change is a complex area, where interactive relationships are common, and where change in one variable may have wide spread results in many other variables with in the system. The question is if student-teachers change, or if there occurs a change in the professional attitudes of student-teachers as a result undergoing a course of one-year training how much of this can be attributed to the impact of the teacher preparation programme provided by the different training institutions.

It could be visualized that a gigantic experiment would be undertaken where by student-teachers would be assigned to a few major types of teacher training institutions differing in a planned way according to curriculum and mode of instruction, while a matched control group was sent out to work upon completion of their first degree in Arts, Science or Commerce. Then, possibly, the researchers might be in a position to say with some certainty what changes are due to simple maturation and progress into adult-social roles, what changes are due to attendance in the teacher preparation institutions and what kind of changes each type of training institution produces. Such inhuman manipulation of human beings, it is feared, cannot be done in a free, "democracy loving" country like India atleast by educational scientists. Student-teachers and their families make their own choices of training institutions.

That's why people who attend one institution are perhaps different, on the average, from those who do not join any training institution or join any selected institution. Moreover admission requirements, selection procedures, and the like also differ from one institution to the other. This tendency toward self-selection of educational institutions especially teacher-preparation programmes leaves the researcher with the need to exercise great ingenuity in collecting data and making comparisons so as to approximate as closely as possible the logic of the controlled experiment. Great care, hence, must be taken in analysis to avoid completely erroneous interpretations of changes from one time to another.

The second phase of the present study does not intend to be a controlled experiment. The study is, in a way, quasi experimental in nature and has a pre-test, post-test-design. Anyway, it is a pseudo-experiment with teacher-training as a treatment.

The newly-developed Teacher Attitude Inventory (TAI) was administered twice, firstly in the beginning in July/August and secondly in the end of the session in April/May. Thus it was tried to find out the nature and extent of change in professional attitudes of selected groups of student-teachers as a result of undergoing training on the basis of analysis of data collected on the inventory administered on the two occassions.

Due to the inapplicability of the tools developed and

standardized in foreign countries, the newly developed Teacher Attitude Inventory was used. This inventory consists of 90 attitude statements, 13 favourable and 17 unfavourable. It measures attitudes of student-teachers towards (i) teaching profession, (ii) class-room teaching, (iii) child-centred practices (iv) teachers. It was a Likert type scale in which marking was to be done according to the code prescribed for. The code ranged from, strongly agree (SA), to strongly disagree (SD). Checking, "strongly disagree" in a favourable item was given lowest score and vice versa; whereas checking "strongly disagree" in an unfavourable item was given highest score and vice versa. The weights were 4, 3, 2, 1, and 0. The maximum possible score was 330 and the minimum possible score was 0.

The interpretation of the findings of a research study depends in part upon the nature of population studied. Hence an attempt was made to restrict the study to about ten percent of the total population of B.Ed. student teachers of Uttar Pradesh. The TAI was administered in eleven colleges which are enlisted elsewhere in the report. For selecting the sample of student-teacher the procedure of stratified random sampling was followed where sex and type of institution was the basis adopted for stratification. In the end 518 common names of student-teachers were identified who had appeared in the pre-test as well as in the post-test. These common cases constituted the subjects for further analysis to appraise the change in professional attitudes of student-teachers.

The details of the second phase of the study are given in Chapter 5.

DATA COLLECTION AND DATA ANALYSIS

In the first phase the stress was on tool-construction. A 90 item Likert type self-reporting inventory was constructed, developed and standardized following a strictly scientific and systematic procedure. The details of the tool construction are given in chapter 4.

In the second phase the study was, in a way, quasi-experimental in nature and hence had a pre-test post-test design. The nine-month teacher education programme run by a particular training institution was considered as an experimental treatment for the purpose.

Permission was sought from the principals of the concerned training institutions for contacting the students in their classes for administration of the TAI in July/August and in April/May.

The student-teachers had to be contacted in groups. After a short introduction they were given instructions as to how to fill-out the TAI. They filled-out the proforma seeking information about the respondent and recorded their responses in the answersheet of the TAI. The teacher attitude inventory was administered at the begining as well as at the end of the training to all the B.Ed. students of the selected eleven colleges of the Uttar Pradesh.

There were many difficulties in collectior of data. The students of some colleges were either on strike or were irregular in attendance. Some of them were indifferent to and disinterested in teaching as well as testing. The necessary data had been collected from all the institutions, selected randomly for this purpose. The pre-test and post-test were given to more than 1,000 student teachers each but with great difficulty only 348 common cases could be identified who had taken both the tests.

For the study of change in professional attitudes of student-teachers as a consequence of training some statistical measures such as Mean, Standard Deviation, Standard Error of Mean and S.D. were calculated for the various sub-groups of student-teachers for score on each attitude sub-scale as well as the total attitude score. For highlighting intra-institutional and inter-institutional differences, the mean-differences of different dichotomous groups were calculated for comparison. The significance of mean differences was studied through the application of the " t " test.

CHAPTER-4

TEACHER ATTITUDE INVENTORY:
CONSTRUCTION & STANDARDIZATION

The construction and standardization of Teacher Attitude Inventory (TAI) forms an important part of the present study. After a thorough scrutiny of all the available attitude measuring instruments it was decided to construct the TAI covering six important areas of professional interest to the teachers. In tool construction, to a large extent, the pattern of the Minnesota Teacher Attitude Inventory (MTAI) was followed. The review of the available inventories shows that most of them either measure attitude towards (i) teaching profession, (ii) pupils, (iii) class-room teaching, (iv) teachers, (v) educational process and (vi) child-centred practices or some combinations of these. For the present study it was thought best to confine the TAI to the above-noted six areas. The rationale behind this decision was:

(1) These are the most important and widely used areas of professional attitudes of prospective and practising teachers, and

(2) It will be possible to validate the TAI scores against any test/tool or criterion of established reputation and recognized value.

COLLECTION AND PREPARATION OF ATTITUDE STATEMENTS:

A number of attitude scales and inventories were procured, their contents were analyzed and thoroughly scrutinized as to the attitudes studied, types of items and other technical details. The literature pertaining to attitudes and test construction was also studied. Finally, it was decided to prepare items for the Teacher Attitude Inventory for six areas viz. attitude towards teaching profession, class-room teaching,

educational process, child-centred practices, teachers and pupils.

Items were constructed in the form of statements requiring preferences to be made in the form of strongly agree (SA), agree (A), undecided (U), disagree (D), and strongly disagree (SD). Items were classified into two classes, favourable and unfavourable. A variety of items numbering 300 were prepared to cover all the six sub-scales. Approximately half of the attitude statements were favourable and the other half were unfavourable.

EDITING THE ATTITUDE STATEMENTS:

The editing process is more important for Likert scales, as there is no objective check on the ambiguity of the statements, analogous to the quartile deviation in the Thurstone method. The criteria suggested by Edwards were adhered to in editing the items. Out of an initial collection of 300 items, 240 statements 40 on each sub-scale were retained, of which 140 were positive and 100 negative. These represented varying shades of favourable and unfavourable attitudes towards the different aspects of the professional components.

The items were written both in Hindi and English because it was planned to develop a billingual tool.

PREPARING THE PRELIMINARY DRAFT OF THE INVENTORY:

The first pool of items numbering 240 was revised, modified and improved after the first thorough reading and

editing. Fifty attitude statements, ten from each of the six sub-scales, which were poor and weak were dropped on editing. The retained 240 attitude statements were given to a group of specialists in attitude measurement and test construction, all teachers of Education, Psychology and Sociology in a seminar situation for opinion. On the basis of discussion 210 attitude statements, 35 of each of the six sub-scales were selected for further scrutiny. These 210 attitude statements were given to a group of M.Ed. trainees, all post-graduates in English, Hindi, Psychology or Sociology for opinion in a seminar situation. On its basis 180 good attitude statements, 30 on each sub-scale were tentatively finalised.

The draft of the inventory (TAI) was then mailed to 35 judges who consisted of specialists in Research Methodology and Teacher Education from various Indian universities located in Hindi-speaking areas, specially their Departments of Education and Psychology. In all 15 test-technicians, returned the draft with their comments, analysis and suggestions. After receiving the comments from the judges, which were thoroughly studied, scanned and scrutinized, necessary modifications were incorporated in the exploratory draft and 150 psychometrically "good" attitude statements were 25 on each sub-scale were retained. In the light of the suggestions the preliminary draft of the TAI was prepared. Items were either modified or deleted altogether if they were not suitable. The preliminary draft of the TAI thus contained 150 attitude statements, 25 on each of the six sub-scales.

It was decided to prepare the TAI as a re-usable tool hence a separate answer sheet was devised. After deciding on the directions for the respondents of the inventory, the tool was prepared and printed for the pilot testing. A 'General Information Sheet about the Respondent' was also evolved.

PILOT TESTING OF THE INVENTORY:

The preliminary draft was given to 57 student-teachers of the Faculty of Education, Banaras Hindu University, for detecting any linguistic errors or mistakes of expression. They were also asked to tell whether the nature of the attitude statements suited their level of reading skills, knowledge and so on. Further on, they were asked to attempt the inventory and time taken in completing it was noted. In about 45 minutes time more than 75% of the student-teachers could finish the assigned task. This pilot testing helped in editing the attitude statements, evaluating and deciding the time limit and in the preparation of the directions for test administration.

TRY-OUT OF THE PRELIMINARY FORM OF THE INVENTORY:

The student-teachers of three colleges from each of the five Hindi-speaking states viz. Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Rajasthan, Bihar and Haryana were selected randomly for the try-out of the preliminary form of the Teacher Attitude Inventory. The inventory was tried out in these States because it was decided earlier to conduct the study on the student-teachers of these States only. These colleges were not included in the standardization sample, i.e. the sample that formed

the nursing population.

The information about the name of the State, the number of colleges and the data collected from these is given in Table 4.1.

TABLE 4.1

Try-out Sample (N = 1402)

Name of State, Number of Colleges, and Number of Subjects

S. No.	State	Colleges	Subjects
1	Uttar Pradesh	3	230
2	Madhya Pradesh	3	294
3	Bihar	3	308
4	Haryana	3	248
5	Rajasthan	3	292
	Total:	15	1402

ITEM ANALYSIS AND ITEM SELECTION:

A set of twelve scoring keys, two for each sub-scale, were devised and the answer sheets were scored and the scores for the six- sub-scales and the total inventory were found out. The total score thus obtained by each subject gave an indication of his/her professional attitude. The incomplete and carelessly filled-out answersheets were precluded from item-analysis. The item analysis was carried out on selected 1402 cases.

In order to determine the discriminating value of the different items the cases lying in the upper 27% and

lower 27% of the total group of 1402 cases were taken. Thus there were 378 cases in the upper 27% and 378 cases in the lower 27% for item analysis. The Mean of both the groups (lower and higher) and their Mean-differences were calculated.

Table 4.2 shows the Means of all the statements in upper 27% and lower 27% cases and their differences of the Mean as well. Table 4.3 shows at a glance the frequency distribution of the mean-difference of 150 attitude statements.

TABLE - 4.2

MEANS OF UPPER AND LOWER GROUPS ON 150 ATTITUDE STATEMENTS

Statement number	Mean: Upper 27%	Mean: Lower 27%	Difference
1	2	3	4
1.	2.43	1.81	.62
2.	2.08	2.39	.39
3.	2.85	2.30	.55
4.	3.20	2.35	.85
5.	2.85	2.62	.23
6.	3.04	2.62	.42
7.	2.70	1.78	.92
8.	2.58	2.40	.18
9.	1.19	1.65	.46
10.	3.19	2.34	.36
11.	2.47	1.96	.51
12.	1.98	1.50	.32
13.	3.34	2.97	.67
14.	2.60	2.35	.71
15.	3.13	2.32	.81

Table 4.9 (continued)

1	2	3	4
16.	1.37	1.87	.20
17.	3.78	3.22	.56
18.	2.52	1.34	.38
19.	2.30	1.45	1.15
20.	2.95	2.33	0.33
21.	2.22 3.71	4.13	0.38
22.	2.71	2.38	0.05
23.	1.75	1.28	0.19
24.	3.10	2.95	.54
25.	3.26	2.89	.37
26.	[illegible].17	3.12	.35
27.	3.37	3.02	.35
28.	2.79	1.93	.83
29.	2.32	1.93	.93
30.	3.03	2.27	.73
31.	1.97	1.19	.78
32.	2.60	2.68	.21
33.	3.73	[illegible].25	.63
34.	1.29	1.25	.03
35.	1.96	1.32	.63
36.	2.73	1.87	.34
37.	2.94	2.01	.93
38.	1.88	1.07	.61
39.	1.65	1.46	.19
40.	3.19	2.30	.89
41.	3.00	2.00	1.00
42.	1.34	0.90	.44
43.	3.65	1.23	.42
44.	1.88	2.32	.34
45.	3.63	3.09	.54
46.	3.86	2.89	.33
47.	2.16	1.58	.88

(Cont......p.56)

Table 4.2 (continued)

1	2	3	4
48.	2.63	1.69	.94
49.	2.60	3.17	.43
50.	1.42	0.94	.48
51.	1.89	1.18	.71
52.	3.38	2.20	1.16
53.	0.87	1.57	.70
54.	2.10	2.16	.63
55.	2.85	2.14	.39
56.	2.55	1.53	.27
57.	2.04	1.51	.53
58.	3.11	2.98	.13
59.	3.81	3.17	.14
60.	3.59	2.69	.90
61.	2.91	2.87	.04
62.	2.53	1.90	.66
63.	3.53	3.11	.42
64.	3.65	3.24	.31
65.	2.08	2.58	.60
66.	2.56	2.11	.45
67.	3.49	2.50	.99
68.	2.91	2.73	.48
69.	2.09	2.43	.34
70.	3.63	3.18	.45
71.	3.29	2.98	.31
72.	1.37	0.91	.46
73.	2.54	1.80	.74
74.	1.40	1.27	.13
75.	0.86	1.11	.26
76.	3.37	3.13	.24
77.	3.06	1.67	1.38
78.	3.10	2.74	.36
79.	3.29	2.31	.93
80.	2.30	2.30	.10

(Contd........ 67.

Table 4.2 (continued)

1	2	3	4
81.	3.27	2.88	.39
82.	2.37	3.24	.13
83.	2.30	1.86	.71
84.	2.65	2.33	.72
85.	1.80	1.16	.44
86.	3.37	3.04	.33
87.	3.26	1.61	1.15
88.	3.74	3.25	.19
89.	3.44	2.38	1.03
90.	1.92	1.19	.13
91.	2.33	1.62	.71
92.	2.19	1.49	.70
93.	0.95	0.98	.03
94.	1.75	2.32	.57
95.	2.01	1.13	.58
96.	1.31	1.59	.28
97.	3.25	2.08	1.18
98.	1.32	1.58	.34
99.	.12	2.64	.58
100.	2.85	2.00	.85
101.	1.37	1.02	.35
102.	2.62	2.10	.22
103.	1.51	1.56	.23
104.	1.61	1.40	.21
105.	3.34	3.13	.21
106.	2.57	3.02	.55
107.	2.29	2.01	.28
108.	2.28	2.47	.41
109.	3.34	2.83	.71
110.	2.43	2.38	.05
111.	3.37	2.04	.13
112.	0.31	0.81	.23
113.	2.03	1.75	.31

(Cont.....P.68)

Table 4.2 (continued)

1	2	3	4
114.	2.27	2.31	.96
115.	3.44	2.14	1.30
116.	2.79	1.88	.81
117.	3.78	3.11	.64
118.	0.93	1.73	.33
119.	1.34	1.17	.17
120.	2.75	1.78	1.18
121.	3.50	2.30	.30
122.	1.57	1.15	.12
123.	3.50	3.12	.38
124.	2.91	2.13	.78
125.	1.31	1.36	.05
126.	1.84	1.29	.55
127.	1.19	1.09	.10
128.	1.20	1.19	0.01
129.	[illegible]	2.36	.84
130.	3.04	2.18	.86
131.	2.33	1.59	.77
132.	2.23	1.50	.73
133.	3.21	2.19	1.02
134.	1.43	1.26	.17
135.	3.55	2.90	.67
136.	2.41	2.37	.04
137.	3.49	3.08	.41
138.	1.87	1.23	.64
139.	2.13	2.59	.46
140.	3.05	2.76	.29
141.	1.74	1.41	.33
142.	2.41	1.08	.73
143.	2.99	2.27	.77
144.	3.20	2.84	.38
145.	2.81	1.56	.95

(Cont.......P. 69)

Table 4.2 (continued)

1	2	3	4
146.	2.74	2.60	.14
147.	3.51	2.96	.55
148.	3.52	2.92	.30
149.	2.57	2.41	.16
150.	2.45	2.04	.41

The statements were distributed according to their mean-difference in the different class intervals. Table 4.3 shows the frequency distribution of mean-differences of six sub-scales, intervals being .00 - .19 to 1.40 - 1.59.

<u>TABLE - 4.3</u>

FREQUENCY DISTRIBUTION OF MEAN-DIFFERENCES OF 150 OPINION STATEMENTS

C-I	Sub-Scale I	Sub-Scale II	Sub-Scale III	Sub-Scale IV	Sub-Scale V	Sub-Scale VI	Total
1.40 - 1.59			1				1
1.20 - 1.39	1					1	2
1.00 - 1.19	4	1		1	1	1	8
.80 - .99	5	1	2	5	4	5	22
.60 - .79	8	2	2	3	6	5	26
.40 - .59	4	6	10	7	4	7	38
.20 - .39	1	11	7	4	7	5	35
.00 - .19	2	4	3	5	3	1	18
Totals	25	25	25	25	25	25	150

In order to find out psychometrically good attitude statements, mean-differences of high and low scores on the TAI were studied, scrutinized and compared. Further-on the t value of each of the 100 items of the six sub-scales in the TAI was computed in order to find out the discriminating value of each item. Table 1.4 shows the 150 statements in the six sub-scales with their mean-differences and t values.

On the basis of mean-differences the t-value of each attitude statement was calculated using the formula as given by Edwards (19[illegible]):

$$t = \frac{\bar{X}_H - \bar{X}_L}{\sqrt{\frac{s_H^2}{n_H} + \frac{s_L^2}{n_L}}}$$

Items having t-value above 1.75 were taken as discriminating on a statistically significant level. Thus 80 out of 150 attitude statements were selected for inclusion in the final form to facilitate the task of item selection tables keeping the two dimensions viz. positive - negative and favourable - unfavourable were prepared. Table 1.5 and 1.6 show at a glance distribution of 150 and 80 attitude statements on the two continua viz. favourable - unfavourable, and positive - negative.

An attempt was made to select the favourable and unfavourable items in the proportion of 50:50. Moreover it was also attempted to select items in such a way that only those items which were highly discriminating and represent the four dimensions, positive-negative, favourable-unfavourable were selected in adequate number. Tables 1.6, 1.7 and 1.8 present

at a glance the number of items selected and their distribution according to the two dimensions positive-negative and favourable-unfavourable.

<u>TABLE - 3.1</u>

MEAN DIFFERENCES AND t-VALUES OF 150 ATTITUDE STATEMENTS

Statement No.	Mean Difference	t-Value	Remarks
1	2	3	4
1	.62	6.2	S*
2	.39	3.9	S
3	.55	9.16	S
4	.95	10.54	S
5	.23	2.87	S
6	.42	5.95	S
7	.92	7.13	R*
8	.18	1.8	R
9	.46	-4.18	R
10	.96	10.55	S
11	.51	5.36	R
12	-.22	-2.44	R
13	.67	9.57	S
14	.34	4.85	S
15	.81	8.67	S
16	-.20	-2.50	R
17	.56	8.00	S
18	.68	6.12	S
19	1.15	12.78	S
20	.33	4.12	S
21	.58	9.66	S
22	.06	.75	R
23	.49	5.44	R
24	.54	7.71	S
25	.37	5.03	S

(Cont.....P.72)

Table 4.4 (Continued)

1	2	3	4
26	.35	6.00	R
27	.85	5.83	R
28	.83	11.85	S
29	.93	10.33	S
30	.70	4.43	S
31	.78	7.8	R
32	.21	7.33	R
33	.53	8.83	S
34	.03	. 33	R
35	.63	7.32	S
36	.34	3.78	S
37	.93	11.32	S
38	.61	8.71	R
39	.19	2.11	R
40	.89	5.66	S
41	1.00	12.06	S
42	.44	4.88	R
43	.42	4.88	R
44	.34	-3.78	R
45	.54	8.70	S
46	.66	5.8	S
47	.88	11.00	S
48	.94	10.44	S
49	.43	10.75	R
50	.48	3.00	R
51	.71	8.87	S
52	1.16	23.2	S
53	-.60	-8.88	R
54	-.08	- .69	R

Table 4.4 (Continued)

1	2	3	4
55	.39	7.37	S
56	.57	10.77	S
57	.53	6.6	S
58	.13	1.32	R
59	.41	7.33	S
60	.90	11.25	S
61	.04	0.4	R
62	.36	8.25	S
63	.44	11.00	S
64	.31	6.2	R
65	-.50	-5.55	R
66	.45	5.00	S
67	.99	12.37	S
68	.48	6.85	S
69	-.34	-3.78	R
70	.45	7.50	S
71	.31	4.43	S
72	.40	5.75	R
73	.74	9.25	S
74	.13	1.62	R
75	-.24	-3.25	S
76	.24	4.00	S
77	1.38	17.25	R
78	.36	5.14	S
79	.98	12.12	S
80	.10	1.00	R
81	.39	4.87	S
82	.43	7.16	S
83	.74	8.22	S
84	.22	2.75	S

Table 4.4 (Continued)

1	2	3	4
85	.54	6.00	R
86	.33	2.20	S
87	1.45	11.13	S
88	.49	7.00	S
89	1.06	13.25	S
90	.43	5.37	R
91	.71	7.80	S
92	.70	7.77	S
93	-.03	-0.40	R
94	.57	-6.33	R
95	.58	9.66	S
96	.28	-3.11	R
97	1.16	13.11	S
98	.34	3.78	S
99	.58	3.44	S
100	.86	9.44	S
101	.36	4.25	R
102	.22	2.75	R
103	.23	2.55	R
104	.21	2.62	R
105	.21	3.00	R
106	.55	7.86	S
107	.88	9.78	S
108	.41	5.12	R
109	.71	8.87	S
110	.05	0.55	R
111	.43	7.16	S
112	-.23	-3.29	R
113	.31	3.45	R
114	.96	10.66	S

Table 4.4 (Continued)

1	2	3	4
115	1.30	16.25	S
116	.81	10.12	S
117	.64	10.12	S
118	.33	4.12	R
119	.17	2.12	R
120	1.18	14.75	S
121	.50	8.57	R
122	.42	4.07	S
123	.38	6.33	R
124	.78	8.66	S
125	.05	.56	R
126	.55	4.58	R
127	.10	1.43	R
128	.01	0.12	R
129	.84	12.00	S
130	.86	8.65	S
131	.77	8.55	S
132	.73	8.11	S
133	1.02	11.33	S
134	.17	1.66	R
135	.37	4.47	S
136	.04	0.45	R
137	.41	6.83	S
138	.64	7.11	R
139	-.46	-6.57	R
140	.29	3.62	S
141	.33	4.12	S
142	.73	8.11	S
143	.75	9.12	S

Table 4.4 (Continued)

1	2	3	4
144	.28	4.00	R
145	.36	10.66	S
146	.14	1.75	R
147	.55	7.86	S
148	.60	8.57	S
149	.16	2.00	S
150	.41	4.1	S

S* = Selected (Included in the final form)

R* = Rejected (Not included in the final form)

TABLE - [illegible].5

TOTAL ATTITUDE STATEMENTS IN THE SIX SUB-SCALES AND THEIR CLASSIFICATION

Scale I: Attitude Toward Teaching Profession:

Item Nos.: 1,7,13,19,30,42,43,55,53,31,67,79,85,96,97,108,109,120,121,127,133,143,145,77 = 25

	Positive	Negative	
Favourable	1,13,55,61,67,108,109, = 7	30,43,96,121,143, = 5	=12
Unfavourable	19,42,53,79,85,97,120,127,77 = 9	7,31,133,145 = 4	=13
	= 16	9	=25

Scale II: Attitude Toward Classroom Teaching:

Item nos.: 2,9,14,20,26,32,111,44,54,57,62,68,78,80,95,98,107,112,119,122,128,134,142,144,86 = 25

	Positive	Negative	
Favourable	9,14,20,26,32,111,38,78,80,144,86 = 11	2,44,54 = 3	=14
Unfavourable	57,95,112,122,128 = 5	62,98,107,119,134,142 = 6	=11
	=16	=9	=25

Scale: III- Attitude Toward Child-Centred Practices:

Item Nos: 3,8,17,24,26,33,40,45,53,58,63,69,76,81,87,94,99,106,123,129,135,141,146,150,118 = 25

	Positive	Negative	
Favourable	3,8,17,26,33,45,76,94,99,106,123,135,146 = 13	24,53,58,63,69,81, =6	=19
Unfavourable	141,150,118 = 3	40,87,129 = 3	=6
	= 16	=9	=25

Cont.....page78

Table 4.5 (continued)

Scale IV: Attitude Toward Educational Process:

Item Nos: 4, 10, 15, 21, 27, 34, 39, 46, 52, 59, 64, 70, 75, 82, 88, 93, 100, 105, 110, 117, 124, 130, 136, 147 = 25

	Positive	Negative	
Favourable	21, 27, [illegible], 88, 100, 117, 136 = 10	13, 70, 110, 147 = 4	=14
Unfavourable	39, 75, 93, 100, = 4	4, 10, 15, 34, 52, 124, 130 = 7	
	= 14	= 11	= 25

Scale V: Attitude Toward Pupils:

Item Nos: 5, 11, 16, 23, 28, 35, 38, 47, 51, 60, 66, 71, 74, 83, 89, 92, 101, 104, 113, 116, 125, 131, 137, 140, 149 = 25

	Positive	Negative	
Favourable	5, 35, 71, 137, 140, = 5	16, 149 = 2	= 7
Unfavourable	23, 38, 47, 51, 83, 92, 104, 113, 116, 125 = 11	11, 28, 35, 60, 89, 101, 131 = 7	= 18
	= 16	= 9	= 25

Scale VI: Attitude Toward Teachers:

Item Nos.: 6, 12, 18, 22, 29, 36, 37, 48, 50, 66, 72, 73, 84, 90, 91, 102, 103, 114, 115, 126, 132, 138, 139, 148, 41 = 25

	Positive	Negative	
Favourable	6, 22, 36, 84, 102, 139, 148, = 7	12, 66 = 2	= 9
Unfavourable	29, 37, 48, 72, 103, 126, 138, = 7	18, 50, 73, 90, 91, 114, 115, 138, 41, = 9	= 16
	= 14	= 11	=25

Total:

	Positive	Negative	
Favourable	53	22	=75
Unfavourable	39	36	=75
	92	58	= 150

TABLE - A.3

ATTITUDE STATEMENTS SELECTED FOR THE FINAL FORM AND THEIR CLASSIFICATION

Scale I: Attitude Toward Teaching Profession:

Items Nos: 57,143,30,109,55,13,1,77,97,120,
19,133,53,145 = 15

	Positive		Negative		
Favourable	57,109,55,13,1	= 5	30,143	= 2	=7
Unfavourable	77,97,120,19, 79,53	= 6	133,145	= 2	=8
		11		4	15

Scale II: Attitude Toward Classroom Teaching:

Item Nos: 36,111,2,25,78,14,83,20,107,142,
62,95,57,122,98 = 15

	Positive		Negative		
Favourable	36,111,25,78, 14,83,20	= 7	2,	= 1	= 8
Unfavourable	95,57,122	= 3	107,142,62,98	= 4	=7
		= 10		=5	15

Scale III: Attitude Toward Child-centred Practices:

Item Nos: 135,92,17,3,106,24,45,33,63,81,87,
40,129,150,141 = 15

	Positive		Negative		
Favourable	135,92,17,3,106, 45,33	= 7	24,63,81	= 3	=10
Unfavourable	150,141	= 2	87,40,129	= 3	=5
		9		6	15

Cont......P. 180

Table 4.4 (continued)

Scale IV: Attitude Toward Educational Process:

Item Nos: 46,117,21,147,88,70,59,82,52,10,
130,4,100,15,124 = 15

	Positive		Negative		
Favourable	117,21,88,59,82	= 5	46,147,70	= 3	= 8
Unfavourable	100	= 1	52,10,130,4,15,124	= 6	= 7
		6		9	=15

Scale V: Attitude Toward Pupils:

Item Nos: 137,71,140,5,149,89,80,47,98,116,
131,83,61,92,35 = 15

	Positive		Negative		
Favourable	137,71,140,5	= 4	149	= 1	= 5
Unfavourable	47,116,83,61,92	= 5	89,80,98,131,35	= 5	=10
		9		6	=15

Scale VI: Attitude Toward Teachers:

Item Nos: 148,66,6,33,84,115,41,18,114,
46,29,37,73,142,91 = 15

	Positive		Negative		
Favourable	148,6,33,84	= 4	66	= 1	=5
Unfavourable	46,29,37,142	= 4	115,41,18,114,73,91	=6	=10
		8		7	=15

Total:

	Positive	Negative	
Favourable	32	11	43
Unfavourable	21	26	47
	53	37	90

TABLE- 4.7

DISTRIBUTION OF SELECTED 90 ATTITUDE STATEMENTS ON THE DIRECTION, POSITIVE-NEGATIVE ATTITUDE STATEMENTS

Sub-Scale	Positive	Negative	Total
I	11	4	15
II	10	5	15
III	9	6	15
IV	6	9	15
V	9	6	15
VI	8	7	15
Total	53	37	90

TABLE - 4.8

DISTRIBUTION OF SELECTED 90 ATTITUDE STATEMENTS ON THE DIRECTION, FAVOURABLE-UNFAVOURABLE ATTITUDE STATEMENTS

Sub-Scale	Favourable	Unfavourable	Total
I	7	8	15
II	8	7	15
III	10	5	15
IV	8	7	15
V	5	10	15
VI	5	10	15
Total	43	47	90

A casual look at the Tables 4.7 and 4.8 shows the distribution of the selected 90 attitude statements. As is evident from Table 4.8 the favourable and unfavourable items are 43 and 47 respectively. Thus out of 150 statements, 90 statements, 15 in each of the six sub-scales, were selected for the final form of the TAI. Table 4.6 shows which 90 attitude statements have been selected for inclusion in the final

form of T.A.I. The selected 90 items were seen and scrutinized and were rearranged.

Determination of Reliability:

The concept of reliability is a complex one. There are three empirical methods of estimating the reliability of an attitude scale:

Test-retest method: In this method correlation between scores on the same test given at different times are found out.

Equivalent-forms method: In it correlation between two equivalent forms of the same scale are computed.

Split-half method: The reliability is determined between two comparable parts of the same scale. But it is not so much useful as in the case of the intelligence or achievement test. Moreover there is need of treating each item as a separate scale, or randomly selecting items to constitute the sub scales.

The reliability of T.A.I was determined by test retest and split-half methods. As each item measures all the six attitudes the inventory was divided into two sub-scales. All the even-numbered items formed one sub-scale and all the odd-numbered formed the other. As there are 90 items in the inventory each sub-scale thus constituted 45 items.

For a sample group of 239 prospective teachers (student-teachers) under the split-half (odd-even) method the

reliability coefficient was found to be .79 corrected to .88 by using the Spearman-Brown prophecy formula. The reliability of the TAI was also determined by the test-retest method. For this purpose the TAI was administered at the interval of three months and again at the interval of nine months after the administration of the TAI for the first time. The correlation of scores obtained at the first administration of the test and scores obtained after 3 and 9 months intervals was computed. The reliability coefficients came out to be .58 (N=102) and .64 (N=230). The details of reliability coefficients, indices of reliability, and so on are given in table 4.9:

TABLE- 4.9

RELIABILITY COEFFICIENTS, INDICES OF RELIABILITY, CORRECTED COEFFICIENTS, AND STANDARD ERROR OF MEASUREMENT

S.No.	Method	Reliability Coefficients		Index of Reliability $r_{1\infty}$	Standard Error of Measurement
		Obtained r_{11}	Corrected r		
1.	Split-half (odd-even)	.79	.88	.89	11.37
2.	Test-retest (3 months)	.58	.75	.76	16.17
3.	Test-retest (9 months)	.64	.73	.80	15.16
4.	Rational Equivalence (KR21)	.54	.70	.73	20.10

DETERMINATION OF VALIDITY:

The concept of validity is also complicated. There are four general procedures for estimating the validity viz. predictive validity, concurrent validity, content validity, and construct validity.

Predictive validity: Predictive validity is estimated by showing how accurately future performance on an external criterion can be guessed from a knowledge of the attitude score. The usual procedure is to measure the attitude and predict the future behaviour on the basis of these scores. The future behaviour is then measured at an appropriate time and the obtained scores correlated (or otherwise compared) with the predicted scores. The degree of correspondence is taken as the estimate of validity.

Concurrent validity: In it the criterion measure and attitude scale are administered at approximately the same point in time. But the danger is that the data collection operation will influence the other, thus yielding a spuriously high or low estimate.

Content validity: It determines the degree to which the items of the scale sample the content of the attitude domain. This should not be confused with so-called face validity which refers to the superficial appearance of the items.

Construct validity: It is more complex and probably more meaningful for theoretical purposes. As such it calls for the investigation of the psychological qualities which the scale

measures and a demonstration that certain exploratory constructs account to some degree for the attitude scores.

There are many methods of estimating construct validity. Perhaps the most familiar approach is the "known-groups" technique. If the definition of the underlying attitude leads one to expect that two or more groups should hold different attitudes toward a given object, it follows that a valid scale to measure the attitude in question should yield different scores for these groups (Cronbach and Meehl, 1955).

A variation of the "known-groups" approach is "stimulus-group" validity. The question asked by this method is whether respondents discriminate among groups to which attitudinal statements may be applied. To be precise if one wishes to validate a scale to measure attitude towards teaching, subjects would be asked to respond to the statements with several different groups as the referrent including practising teachers. If the scale is a valid measure of attitudes toward teaching, the attitude scores should vary with the stimulus group in theoretically expected ways (Axelrod and Eisendorfer, 1961). Another approach involves correlation matrices. This is exemplified most clearly by the multi-trait multi-method matrix technique proposed by Camp bell and Fiske (1959). The general assumption as that different methods of measuring same trait (or attitude) should yield similar results, whereas different traits would yield diferent scores regardless of the method of measurement. In some cases, internal consistency

measures may be evidence of validity. If the underlying theory of the attitude being measured suggests high item inter correlations then measures of internal consistency may be interpreted as evidence of construct validity. The stability (test-retest reliability) of attitude scores may be important for construct validation. The determination of validity of an attitude inventory like TAI is a hard task. The inventory appears to have face validity. It also has content validity, and the method of selecting items (attitude statements) supports this supposition. In addition, means and standard deviations of some selected "known" and "stimulus" groups were computed and compared. The observed differences were found to be in the expected direction. Table 4.10 presents at a glance a summary of the analyzed data.

TABLE – 4.10

MEAN, STANDARD DEVIATION AND OTHER MEASURES OF SOME SELECTED GROUPS

S.No.	Group	N	M	SE_M	SD	SZ_{SD}
1.	B.A. Part I (Not offering Education Elective)	56	230.53	2.94	21.98	2.09
2.	B.A. Part II (Not Offering Education Elective)	53	230.73	3.44	28.74	2.44
3.	B.A. Part I (Offering Education Elective)	70	237.98	3.41	23.36	2.41
4.	B.A. Part II (Offering Education Elective)	47	252.91	4.65	33.91	3.30
5.	Practising Teachers	122	251.41	2.78	30.70	1.97
6.	Prospective Teachers (At the time of B.Ed. admission)	86	251.45	3.36	31.12	2.39
7.	Prospective Teachers (After 9 months of B.Ed. training)	86	256.97	3.00	33.48	2.56

For determining the concurrent validity of the TAI the scores obtained on TAI by a group of 79 B.Ed. teacher trainees were correlated with scores obtained by them on the Hindi adaptation of the Minnesota Teacher Attitude Inventory as developed and modified by Dr. Mohan C. Joshi. The obtained correlation coefficients are given in Table 4.11.

TABLE- 4.11

CORRELATION BETWEEN SCORES ON TAI AND THE MTAI SCORES (N = 79)

Variables	Correlation Coefficient
MTAI Scores and Scores on Factor I of TAI	+.42
MTA I Scores and Scores on Factor II of TAI	+.32
MTAI Scores and Scores on Factor III of TAI	+.03
MTAI Scores and scores on Factor IV of TAI	+.27
MTAI Scores and Scores on Factor V of TAI	+.23
MTAI Scores and Scores on Factor VI of TAI	+.07
MTAI Scores and TAI Scores	+.23

An inspection of Table 4.11 shows that the obtained correlation coefficients are all positive. They are very low on factors III and VI. They are moderate on other factors and the total attitude score. The correlation between factor I i.e. attitude toward teaching profession and the MTAI scores is high. The observed results may be due to the fact that the Hindi adaptation is neither standardized nor widely tried-out. Moreover, the original MTAI is meant for mainly elementary school teachers, is largely culture-based and has become perhaps out of date to some extent.

NORMING POPULATION AND NORMS

The sample for standardization of the TAI consists of 2169 prospective teachers (B.Ed. teacher trainees) studying in 21 secondary teacher training institutions of the five Hindi-speaking States viz. Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Rajasthan, Bihar and Haryana. As has been explained earlier these prospective teachers were selected on the basis of stratified random sampling from 21 training institutions or B.Ed. departments of colleges. The institutions were selected propotionately from all the five Hindi-speaking states, and were either single-sex or co-educational. In all, the inventory was administered to about 2,200 student-teachers but the inventories which were hurriedly filled, wrongly filled and incompletely filled out by the respondents were rejected and were not included in the norming sample. Some respondents marked in two or three sub-scales only and some others ticked on more than one alternatives. A few of them forgot to mention the age, sex and so on. The number of such cases comes to about 31. The standardization, thus, is based on 2169 cases. A detailed description of the norming population from the five Hindi-speaking States is presented in Table 4.12.

(Table o n the next page)

TABLE - 1.12

FORMING POPULATION (N = 2159)

State & Institution	Place	Total Enrolled	Data Collected: M	+	F	= Total
A. HARYANA						
1. M.M. College of Education	Bhiwani	70	32	+	38	= 70
2. D.A.V. College of Education for women	Karnal	100	0	+	78	= 78
3. S.D. College of Education	Ambala	150	39	+	40	= 79
4. C.R. College of Education	Rohtak	300	48	+	45	= 93
			119	+	199	= 318
B. RAJASTHAN						
1. Basic Teachers' Training College	Sardar Shahar	175	98	+	16	= 114
2. Govt. Teachers' Training College	Ajmer	120	75	+	37	= 112
3. Govt. Teachers' Training College	Bikaner	100	37	+	29	= 66
			210	+	82	= 292
C. MADHYA PRADESH						
1. Govt. College of Education	Sagar	160	88	+	59	= 147
2. Govt. T.T. College	Chhatarpur	110	93	+	4	= 97
3. Govt. College of Education	Bhopal	110	41	+	40	= 81
4. Govt. College of Education	Jabalpur	100	14	+	21	= 35
5. Hitkarni City College	-do-	100	15	+	28	= 43
			281	+	152	= 433
D. BIHAR						
1. Govt. T.T. College	Bhagalpur	300	214	+	33	= 247
2. Govt. Teachers' Training College	Deoghar	120	90	+	8	= 98
3. Govt. Teacher' Training College	Ranchi	100	51	+	39	= 90
			355	+	80	= 435
E. UTTAR PRADESH						
1. Agra College of Education	Agra	180	134	+	30	= 164
2. A.N.D.M.M. College	Kanpur	150	0	+	146	= 146
3. K.P. Training College	Allahabad	100	40	+	53	= 93
4. Department of Education Banaras Hindu University	Varanasi	80	50	+	22	= 72
5. Degree College	Pratapgarh	150	100	+	31	= 131
6. T.D. College	Jaunpur	100	34	+	21	= 55
			358	+	303	= 691
		Total:	1350	+	819	= 2169

Norms were computed state-wise for the five Hindi-speaking States viz. Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Bihar, Haryana and Rajasthan. Their means and standard deviations along with their standard errors have been reported in Table 4.13.

TABLE 4.13

MEAN, STANDARD DEVIATION, AND OTHER MEASURES OF NORMING POPULATION (N = 2169)

S.No.	State	Prospective Teachers (N = 2169)				
		N	M	SE_M	S.D.	SE_{SD}
1.	Uttar Pradesh	591	248.78	2.86	33.20	1.82
2.	Madhya Pradesh	433	240.71	1.30	26.97	0.92
3.	Bihar	435	240.22	1.37	28.60	0.97
4.	Haryana	318	240.98	1.55	27.70	1.10
5.	Rajasthan	392	237.77	1.87	31.92	1.33
	Total:	2169	242.73	0.64	30.00	0.45

In addition to it, factor wise and State wise means and standard deviations were also computed. Table 4.14 shows at a glance, the analyzed data for the different States and the total group on different sub-scales of the Teacher Attitude Inventory.

Furtheron, State-wise and sex-wise percentile norms were also calculated and computed. Table 4.15 presents a summary of the results.

(Table on next page)

TABLE - 4.14

[illegible], STANDARD DEVIATION, [illegible] (N = 2169)
[illegible] SUB-SCALES OF TAI

Sl. No.	State	N	M I	M II	M III	M IV	M V	M VI	M T	SE$_M$ I	SE$_M$ II	SE$_M$ III	SE$_M$ IV	SE$_M$ V	SE$_M$ VI	SE$_M$ T
1.	Uttar Pradesh	601	40.34	40.07	39.85	45.0[illegible]	38.77	[illegible].30	248.79	0.34	0.25	0.22	0.25	0.30	0.24	[illegible].56
2.	Madhya Pradesh	433	37.93	37.31	46.45	43.72	36.43	35.83	240.71	0.39	0.31	0.28	0.27	0.29	0.34	1.30
3.	Bihar	435	37.01	37.22	45.94	43.28	36.52	37.25	240.22	0.44	0.31	0.28	0.27	0.29	0.31	1.37
4.	Haryana	318	36.80	36.46	46.74	48.36	36.30	35.82	240.28	0.47	0.29	0.34	0.37	0.54	0.37	1.55
5.	Rajasthan	282	34.43	36.39	46.75	43.89	36.93	34.36	237.77	0.55	0.43	0.35	0.38	0.86	0.40	1.87
	Total	2169	38.12	37.92	44.32	43.35	37.24	37.33	242.73	0.19	0.23	0.14	0.13	0.15	0.16	0.34

Table 4.14 cont....p. 92

TABLE 4.14 (Continued)

Sl.No.	State	M		S.D.							S.E. SD				T
		I	II	III	IV	V	VI	T	I	II	III	IV	V	VI	T
1.	Uttar Pradesh	8.83	6.88	5.72	3.34	7.85	6.39	33.20	0.24	0.19	0.15	0.18	0.21	0.17	1.82
2.	Madhya Pradesh	8.18	5.33	5.75	5.54	5.97	7.04	26.77	0.29	0.22	0.20	0.19	0.20	0.24	0.92
3.	Bihar	9.22	8.37	5.61	5.7	6.14	6.48	28.50	0.31	0.22	0.20	0.19	0.21	0.22	0.97
4.	Haryana	8.43	6.15	3.06	3.53	9.70	3.35	27.70	0.34	0.21	0.24	0.23	0.39	0.26	1.10
5.	Rajasthan	9.41	7.27	5.93	3.41	3.54	3.85	31.22	0.39	0.30	0.25	0.27	0.27	0.28	1.33
	Total:	8.85	10.79	5.58	5.38	7.02	7.02	30.00	0.13	0.15	0.10	0.09	0.10	0.10	0.45

Table - 4.15

STATE-WISE AND SEX-WISE PERCENTILES OF [illegible] POPULATION

Percentiles	States								
	Uttar Pradesh			Madhya Pradesh			Bihar		
	M	F	T	M	F	T	M	F	T
P_{100}	324	326	326	327	333	333	310	298	310
P_{95}	238	263	254	251	256	253	257	245	255
P_{90}	254	249	253	237	238	235	238	236	238
P_{85}	239	238	239	233	233	231	233	232	233
P_{80}	234	231	235	229	229	228	228	228	228
P_{75}	231	230	231	225	224	224	224	224	224
P_{70}	227	227	227	220	220	220	219	220	219
P_{65}	223	223	223	216	216	215	214	216	214
P_{60}	219	213	219	212	211	211	209	211	209
P_{55}	214	215	216	208	207	207	204	207	205
P_{50}	210	211	211	204	202	202	199	203	200
P_{45}	206	208	207	199	198	199	194	198	195
P_{40}	202	204	203	194	193	193	190	193	190
P_{35}	197	200	198	188	188	188	185	188	185
P_{30}	190	194	192	183	183	183	180	183	181
P_{25}	184	189	186	177	179	178	176	178	176
P_{20}	178	182	179	171	174	172	171	173	171
P_{15}	171	175	173	166	169	168	166	168	167
P_{10}	166	169	167	160	164	162	162	163	162
P_{5}	159	155	150	152	153	152	145	152	145
P_{0}	137	141	145	146	149	146	141	146	141

Table 4.15 cont.....p. 94

TABLE - 4.15 (Continued)

Percentiles	States								
	Haryana			Rajasthan			Total		
	M	F	T	M	F	T	M	F	T
P_{100}	303	309	309	303	309	309	327	333	333
P_{95}	237	292	243	255	246	284	259	243	259
P_{90}	232	238	233	239	236	238	239	239	239
P_{85}	226	234	232	233	231	233	235	235	235
P_{80}	221	230	228	229	226	228	230	231	231
P_{75}	216	226	224	224	221	223	226	227	226
P_{70}	210	223	220	219	216	219	221	223	222
P_{65}	205	220	216	215	212	214	217	219	218
P_{60}	203	216	212	210	207	209	213	215	214
P_{55}	201	212	208	206	202	206	208	211	209
P_{50}	199	207	204	201	197	202	204	207	205
P_{45}	194	203	200	196	190	196	199	203	201
P_{40}	188	199	195	192	184	191	194	198	196
P_{35}	183	193	189	186	178	184	189	193	190
P_{30}	178	187	183	181	173	179	183	187	185
P_{25}	173	181	178	176	166	174	178	181	179
P_{20}	167	175	172	171	160	168	172	175	173
P_{15}	163	169	166	166	149	163	167	170	168
P_{10}	151	163	160	161	137	141	162	164	162
P_{5}	135	146	140	153	126	135	145	152	146
P_{0}	116	122	122	143	122	122	116	122	116

DESCRIPTION OF THE TEACHER ATTITUDE INVENTORY

The TAI is a self-reporting inventory consisting of six sub-scales designed to measure the attitude of prospective and practising teachers towards teaching profession, class-room teaching, educational process, child-centred practices, teachers and the pupils developed on Likert's method of Summated Ratings. The complete set of the TAI consists of a re-usable test booklet, an answersheet, a set of six scoring keys and the manual. The inventory is ~~ma~~ bilingual. Its Hindi and English versions have been provided in one single bookle t.

The inventory as a whole has 90 items, 15 in each sub-scale. It has favourable - unfavourable as well as positive-negative items numbering 43 and 47 and 56 and 34 respectively. Each item has five alternatives ranging from strongly agree (SA) to strongly disagree (SD). For favourable items the strongly agree (SA) response is given the ~~gk~~ highest score of 4, the agree (A) response a score of 3, the undecided (U) response a score of 2, the disagree (D) response a score of 1 and the strongly disagree (SD) response a score of zero. For unfavourable items the scoring is reversed, i.e. the strongly disagree (SD) response is given the score of 4 and the strongly agree (SA) response the score of zero. Thus in the scales the scores and attitudes are directly related. In other words higher is the score of a respondent, higher is the existence of favourable attitude in him. For each subject a total score on each sub-scale is obtained by summating his scores for the individual items. The instructions for administering the inventory and scoring the responses have been given in the manual. For scoring, a set of six scoring keys, one for each attitude ~~xxx~~

sub-scale has been prepared to facilitate hand scoring. There is no time-limit but normally it takes 25 to 30 minutes to complete the CAI and less than 10 minutes to score each answer-sheet.

CHAPTER - 5

STUDYING CHANGE IN INTELLECTUAL ATTITUDES OF STUDENT-TEACHERS

There was a question with a capital Q- how to study and measure the change in professional attitudes of the student-teachers? Various methods were examined. Some of them appeared to be unsound while others seemed impracticable. Still others required rigid controls and statistical sophistication. Considering the demands and limitations of this study it was thought desirable to follow a systematic procedure which may resemble an experiment.

This brings into sharp focus one of the most puzzling elements of the whole issue. If student-teachers change, or if there occurs a change in the professional attitudes of student-teachers, how much of this can be attributed to the impact of the teacher preparation programme provided by a particular educational institution It could be visualized that a gigantic experiment would be undertaken wherein student-teachers would be assigned to a few major types of teacher preparation institutions differing in a planned way according to curriculum and mode of instruction, while a matched control group would be sent out to work upon completion of their first degree in Arts, Science or Commerce. Hopefully, then one might be in a position to say with some certainty what changes are due to simple maturation and growth into adult social and professional roles, what changes are due to attendance and active participation in the teacher-preparation programmes of the training institutions and what kind of changes a particular tupe of teacher-preparation institution brings about or produces. As such a manipulation of human beings cannot be done in a free, "democracy-loving" country like India, the idea of a controlled experiment was dropped.

Furtheron, student-teachers and sometimes their parents and guardians make their own choices of teacher-preparation institutions. That's why persons who attend one institution are perhaps different on the average from those who do not join any such institution or join different institutions as admission requirements, selection procedures, and the preferences also vary. The self-selection of a teacher-preparation institution makes things difficult and demands great ingenuity in collecting experiment. There is need to exercise restraint and caution in data-analysis so that completely erroneous interpretations of differences between groups or changes from one time to another are avoided.

The present study thus did not intend be a controlled experiment. It perhaps even did not aim to meet the requirements of a quasi-experiment. However, it is hoped, that this pseudo-experiment, a simple study having pretest- post test measurement design wherein the teacher-preparation programme has been taken as an experimental treatment would break some new ground in the research area of attitude change and measurement.

The general procedure used in this study has been described in Chapter 3. The Teacher Attitude Inventory (TAI), a 90 item Likert-type scale was administered to L.T. or B.Ed. trainees of 11 selected teacher-preparation institutions of Uttar Pradesh. Two of these institutions were single-sex i.e. only for girls, and nine were coeducational i.e. for both sexes. The pre-test was conducted within the first three weeks of the commencement of the academic session in July or August, 1973. The post-test

was conducted in the last three weeks of the close of the academic session in April or May, 1974.

The PAI was administered to all the teacher-trainees present on the days of pre and post-tests in a particular institution. The common cases, persons who took both the pre-test and post-test were identified for analyzing data on change in professional attitudes. There number came out to be 648. The mean-scores were computed institution-wise, sex-wise and sub-scale wise for pretest and post-test data. The mean differences of various dichotomous groups were compared and their significance was tested through the application of "t" test.

SAMPLE AND POPULATION

The interpretation of the findings of a study depends in part upon the nature of sample and population studied. There are about 100 teacher-preparation institutions in Uttar Pradesh. The study was restricted to 11 randomly selected institutions which represented 8 universities or examining bodies in the State. Table 5.1 presents at a glance information about the selected institutions, the trainees who appeared in the pre-test and the post-test, the common cases selected for study.

Table 5.2 shows distribution of 648 selected common cases with respect to the variable of sex, age and teaching experience.

A casual look at Table 5.1 shows that though the pre-test and the post-test were taken by 1257 and 1249 persons respectively, only 648 common cases, a little more than 50%,

were found. This shows how difficult it is to find common cases in large number even when rigid controls are not imposed. A perusal of Table 5.2 shows that except on the variable of sex, on other variables such as age and teaching experience, the distribution is neither fair nor even. This explains why sex-differences alone were studied and other variables were not taken into account for further probe.

TABLE - 5.1

NAME OF INSTITUTION, PLACE OF LOCATION, NUMBER OF STUDENTS APPEARING IN PRE-TEST AND POST-TEST, AND COMMON CASES

S. No.	Name of institution	Place	Appeared		Common cases
			Pre-test	Post-test	
1.	N.A.S. College	Meerut	107	101	60
2.	Degree College	Pratapgarh	131	121	48
3.	K.S.S. Mahavidyalaya	Faizabad	106	98	54
4.	T.D. College	Jaunpur	85	89	70
5.	N.R.E.C. College	Khurja	81	79	61
6.	D.S. College	Aligarh	118	112	49
7.	V.T. College, Dayalbagh	Agra (1)	164	161	73
8.	R.B.S. College	Agra (2)	164	159	86
9.	A.P. Training College	Allahabad	93	86	47
10.	A.N.D. Mahila Mahavidyalaya	Kanpur	146	133	63
11.	Education Department, Banaras Hindu University	Varanasi	79	130	34
	Total:		1257	1249	648

TABLE-5.2

(on next page)

TABLE - 5.2

DISTRIBUTION OF 648 CASES ON THE VARIABLES OF SEX, AGE, & TEACHING EXPERIENCE

			No.	%
1.	Sex	Male	311	48.00
		Female	337	52.00
		Total	648	100.00
2.	Age	Less than 20 years	96	14.8
		21 to 30 years	519	80.0
		31 to 40 years	31	4.9
		Above 41 years	2	0.3
		Total	648	100.00
3.	Teaching Experience	No experience	470	72.5
		Less than 3 years	103	15.9
		4 to 9 years	66	10.2
		10 to 15 years	6	0.9
		Above 15 years	3	0.5
		Total	648	100.00

ANALYSIS AND INTERPRETATION OF DATA

In order to find out the change in professional attitudes of student-teachers of 11 selected institutions, their obtained pre-test and post-test mean-scores were compared and their mean-differences were studied through the application of "t" test. Table 5.3 presents at a glance details about the institution number, number of common cases, pretest and post-test mean scores, standard deviations and standard errors of means. Table 5.4 presents in a summary form information about the mean differences, "t"'s, degrees of freedom and interpretation of the observed values of "t".

INSTITUTION AND CHANGE IN PROFESSIONAL ATTITUDES

An inspection of Table 5.3 shows that in 2 out of

11 institutions the increase in mean attitude scores, though small, is in the expected direction, these are institutions no. 8 and 9. In 9 institutions the mean attitude scores have gone down. It may hence be surmised that the change in attitude scores is perhaps to some extent determined by the type of institution attended by a particular group. If the total group of 548 cases is taken as a whole even then there is decrease in the mean attitude score though the mean difference appears to be small i.e. 6.18.

TABLE - 5.3

NUMBER OF INSTITUTIONS, NUMBER OF CASES, MEANS, STANDARD DEVIATIONS, & STANDARD ERRORS OF MEANS

Institution No.	N	M		S.D.		SEM	
		T_1	T_2	T_1	T_2	T_1	T_2
1	30	254.60	247.05	25.51	27.38	3.29	3.53
2	48	242.92	239.83	25.80	35.23	3.71	5.08
3.	54	249.33	243.57	26.31	28.90	3.58	3.93
4.	70	240.30	229.11	26.89	42.24	3.21	5.05
5.	31	243.63	240.36	23.10	39.79	2.96	5.09
6.	49	243.10	235.24	42.14	30.75	6.02	4.39
7.	76	247.45	235.85	31.65	38.02	3.63	4.36
8.	83	251.45	253.29	31.12	33.38	3.36	3.60
9.	47	250.70	257.40	25.56	59.19	3.73	8.63
10.	33	255.73	239.29	25.52	26.02	3.21	3.28
11.	34	259.83	259.24	38.43	34.21	6.68	5.87
Totals 11	548	248.70	242.52	29.95	37.98	1.17	1.49

TABLE- 5.4

(On next page)

TABLE - 5.4

MEAN DIFFERENCES, STANDARD ERRORS OF MEAN-DIFFERENCES, t, DEGREES OF FREEDOM, AND INTERPRETATION

Institution No.	M_D	SE_{MD}	t	df	Interpretation .05	Interpretation .01
1	7.55	4.83	1.56	118	NS	NS
2.	3.09	6.31	0.49	94	NS	NS
3	6.06	5.32	1.14	106	NS	NS
4	11.19	5.98	1.87	138	NS	NS
5	12.90	5.89	2.20	120	S	NS
6	7.86	7.45	1.06	96	NS	NS
7	10.57	5.67	1.86	150	NS	NS
8	4.89	4.92	0.99	170	NS	NS
9	6.70	9.40	0.71	92	NS	NS
10	13.44	4.59	3.58	124	S	S
11	0.58	8.89	0.07	66	NS	NS
Total: 11	6.18	1.89	3.23	1294	S	S

A close and critical analysis of Table 5.4 indicates that the mean-differences in all cases except in the case of institution No. 5 and 9 are statistically non-significant at both .05 and .01 levels. Only in the case of institution No. 9 the mean-difference is statistically significant at both .05 and .01 levels and whereas in the case of institution No. 5 the mean-difference is statistically significant at .05 level only. The obtained results, hence, make it clear that the observed differences may be due to chance alone. This perhaps pinpoints to the need of conducting rigorously controlled experimentation where intervening variables are properly controlled experimentation where intervening trolled after careful identification. It is possible that variables such as socio-economic status, level of intelligence, level of motivation,

level of aspiration, family back-ground, age and other allied factors may be important determinants of change in professional attitudes. To arrive at dependable results, there is need to control certain variables and by keeping them constant to vary the experimental treatment and study its influence on change in professional attitudes of student-teachers.

It is possible that the observed differences in the opposite direction are due to defective sampling design, lack of proper control on experimental treatment, and the disinterest of the respondents.

It is notable that the mean-difference in attitude scores of the total group (N=348) is statistically significant at both .05 and .01 levels. This should cause concern to all teacher-education this establishes that the observed decrease is neither marginal nor accidental but is perhaps real. Healthy attitudes, it is known, go a long way in strengthening the teaching profession and in promoting better and efficient learning. There is need to devise programmes of teacher preparation which may develop favourable and healthy attitudes in prospective teachers as it is well-said: "As is the teacher so is the nation".

DIFFERENT AREAS AND CHANGE IN PROFESSIONAL ATTITUDES

In order to further probe into the pattern of attitude changes in different areas, the mean scores on six different sub-scales of the Teacher Attitude Inventory were analyzed.

The mean-differences on pre-test and post-test scores were compared and the significance of the obtained results was tested through the application of the "t" test. Tables 5.5 and 5.6 present the analyzed data in a summary form.

A cautious look at Tables 5.5 and 5.6 indicates many interesting things. The general pattern of decrease in mean-scores in the case of atleast eight institutions is maintained with some fluctuations. To be precise, on sub-scale I, the increase is revealed only by institution Nos. 8, 9 and 11 in mean attitude score. On sub-scale II, all institutions show a down ward trend. On sub-scale III institution Nos. 2,6,8, and 9 show an increase in the positive direction whereas other seven institutions maintain the downward trend. On sub-scale IV, institutions Nos. 1,2,6,7, and 9 reveal increase whereas other six institutions show the decline in mean-scores. On sub-scales V and VI, excluding institution Nos. 3,8,and 9 all other eight institutions show decrease in mean-scores. When the total group (N=348) is taken, on all the sub-scales excluding sub-scale III the mean-differences are in the opposite direction though their values are small. This analysis helps in making a surmise that the teacher-preparation Programmes are perhaps failing in changing the professional attitudes of student-teachers and their impact is doubtful and dubious.

An examination of Table 5.6 indicates that on sub-scale I, the mean-differences of 9 institutions are statistically non-significant at both .05 and .01 levels. In the case of

TABLE - 5.5

NUMBER OF INSTITUTIONS, NUMBER OF CASES, MEANS AND STANDARD ERRORS OF MEANS ON SIX DIFFERENT SUB-SCALES OF THE TEACHER ATTITUDE INVENTORY

Institution No.	N	MEAN											
		I		II		III		IV		V		VI	
		T_1	T_2	T_1	T_2	T_1	T_2	T_1	T_2	T_1	T_2	T_1	T_2
1.	60	41.13	40.62	40.63	38.47	43.50	45.82	45.77	46.02	39.32	37.82	41.25	38.55
2.	48	38.27	37.83	40.73	35.90	43.85	45.88	43.19	43.83	38.02	36.94	39.56	39.23
3.	54	43.00	40.11	39.78	37.76	44.37	44.31	44.44	40.13	37.74	38.56	40.19	42.44
4.	70	39.50	37.91	38.97	36.14	43.27	42.16	41.67	41.43	37.13	34.31	39.14	36.89
5.	61	39.31	36.59	38.21	35.36	45.43	43.20	44.57	43.61	37.52	34.28	37.69	36.34
6.	49	39.71	36.65	39.20	37.73	44.33	45.33	44.33	44.84	37.53	34.45	37.49	36.35
7.	76	40.53	37.14	39.34	37.01	44.92	44.43	44.16	44.24	39.05	36.37	39.39	37.66
8.	86	41.21	43.37	39.98	38.22	45.30	47.38	45.65	47.76	37.93	39.56	40.27	40.59
9.	47	39.19	40.02	39.32	38.71	47.21	47.62	46.53	44.13	39.28	40.34	38.96	40.81
10.	63	40.48	36.59	41.46	38.33	45.75	45.29	45.98	45.21	39.89	35.57	41.17	37.11
11.	34	42.53	42.71	41.24	40.29	45.79	46.18	48.00	47.15	41.03	40.62	44.21	41.71
Total: 11	648	40.42	39.02	39.82	37.63	45.22	45.16	44.79	44.38	38.47	37.11	39.82	38.72

Table 5.5(cont....p. 107)

Table 5.5 (continued)

Institution No.	N	SE_M											
		I		II		III		IV		V		VI	
		T_1	T_2	T_1	T_2	T_1	T_2	T_1	T_2	T_1	T_2	T_1	T_2
1.	60	1.00	1.15	.82	.76	.80	.67	.83	.86	.75	.80	.82	.87
2.	48	1.56	1.70	.74	.85	.91	.92	.94	1.28	.97	1.03	1.09	1.22
3.	54	1.24	1.09	.83	.84	1.35	.77	.76	1.09	.74	.86	.93	.97
4.	70	1.17	.78	.22	.81	.74	.95	.82	1.02	.74	1.05	.74	1.06
5.	61	1.07	1.19	.80	.93	.54	.56	.79	1.05	1.27	1.00	.79	1.00
6.	49	1.06	1.64	.99	.93	.97	.84	1.07	1.10	1.19	.63	1.39	1.06
7.	76	.92	1.08	.77	.66	.71	.86	.78	.94	.70	.80	.85	.99
8.	86	1.10	.93	.72	.73	.71	.63	.75	.63	.73	.67	.81	.75
9.	47	1.33	1.34	.83	.79	.84	.80	.93	.90	.91	.86	.96	1.17
10.	63	1.04	1.04	.75	.70	.77	.74	.84	.88	.77	.69	.68	.85
11.	34	1.60	1.69	1.31	1.25	.71	1.32	1.20	1.18	1.05	1.16	1.15	1.44
Total: 11	648	.37	.37	.23	.24	.25	.24	.26	.30	.27	.27	.28	.31

N.B.: Names of Institutions, according to Sl.No. 1-11 are given on page No. 100 in Table 5.1

TABLE - 5.3

MEAN DIFFERENCES, STANDARD ERRORS OF MEAN-DIFFERENCE, t, DEGREES OF FREEDOM, AND INTERPRETATION

Inst. No.	MD I	MD II	MD III	MD IV	MD V	MD VI	SE_{MD} I	SE_{MD} II	SE_{MD} III	SE_{MD} IV	SE_{MD} V	SE_{MD} VI
1.	.51	2.16	.68	.25	1.5	2.7	1.52	1.12	1.04	1.20	1.20	1.20
2.	.44	4.83	2.03	.34	1.08	.33	2.31	1.13	1.29	1.59	4.01	1.64
3.	2.89	2.02	.06	4.31	.83	3.25	1.65	1.18	1.55	1.36	1.13	1.34
4.	1.64	2.83	[illegible]	.24	2.82	2.25	1.41	.84	1.20	1.31	1.28	1.29
5.	2.72	1.55	2.23	.96	3.24	1.35	1.60	1.23	.98	1.31	1.62	1.27
6.	3.06	1.47	.70	1.00	3.08	1.14	1.95	1.36	1.28	1.53	1.35	1.75
7.	3.39	2.33	.49	.08	2.38	1.73	1.42	1.01	1.12	1.22	1.06	1.30
8.	2.16	1.7	1.78	2.11	1.63	.32	1.44	1.03	.95	.98	.99	1.10
9.	.83	.58	.41	2.40	1.05	1.65	1.89	1.15	1.16	1.29	1.25	1.51
10.	3.89	3.13	.46	.77	3.32	4.06	1.47	1.03	1.07	1.22	1.03	1.09
11.	.18	.96	.61	.85	.41	2.50	2.33	1.81	2.25	1.68	1.56	1.84
Total: 11	1.40	2.19	.06	.41	1.36	1.10	.50	.31	.33	.38	.37	.40

Table 5.3 cont....p. 109.

Table 5.5 (Continued)

Inst. No.	t: I	t: II	t: III	t: IV	t: V	t: VI	df	Interpretation: I	Interpretation: II	Interpretation: III	Interpretation: IV	Interpretation: V	Interpretation: VI
1.	0.34	1.93	0.65	0.21	1.25	2.25	118	NS	NS	NS	NS	NS	S (.05)
2.	0.19	4.27	1.57	0.40	0.27	0.20	94	NS	S (.05 & .01)	NS	NS	NS	NS
3.	1.75	1.71	0.04	3.24	0.73	1.68	106	NS	NS	NS	S (.05 & .01)	NS	NS
4.	0.18	3.37	0.93	0.18	2.20	1.74	138	NS	S (.05 & .01)	NS	NS	S (.05)	NS
5.	1.70	1.26	2.42	0.73	2.00	1.05	120	NS	NS	S (.05)	NS	S (.05)	NS
6.	1.57	1.08	0.55	0.65	2.28	0.65	96	NS	NS	NS	NS	S (.05)	NS
7.	2.39	2.31	0.44	0.07	2.53	1.33	150	S (.05)	S (.05)	NS	NS	S (.05)	NS
8.	1.50	1.65	1.87	2.15	1.35	0.29	170	NS	NS	NS	S (.05)	NS	NS
9.	0.44	0.50	0.35	1.83	0.85	1.23	92	NS	NS	NS	NS	NS	NS
10.	2.66	3.04	0.43	0.63	3.22	3.72	124	S (.05&.01)	S (.05 & .01)	NS	NS	S (.05&.01)	S (.05&.01)
11.	0.07	0.52	0.27	0.51	0.26	1.36	36	NS	NS	NS	NS	NS	NS
Total: 11	2.80	7.06	0.18	1.07	3.67	2.76	1294	S (.05&.01)	S (.05&.01)	NS	NS	S (.05&.01)	S (.05&.01)

institution No. 7 the observed difference is statistically significant at .05 level only and in the case of institution No. 10 significant at both .05 and .01 levels. On sub-scale II, the mean-differences of seven institutions are statistically non-significant. Only in the case institution Nos. 3,4, and 10 they are statistically significant at both .05 and .01 levels and in the case of institution No. 7 significant at .05 level only. On sub-scale III, excluding institution No. 5 in all other institutions the mean-differences are statistically non-significant. Only in the case of institution No. 5 the observed difference is significant at .05 level. On sub-scale IV, leaving two institutions, in all other institutions the observed differences are statistically non-significant. In the case of institution No. 3 the mean-difference is statistically significant at both .05 and .01 levels and in the case of institution No. 8 it is significant at .05 level. On sub-scale V, in the case of eight institutions the observed differences are statistically non-significant. In the case of institution Nos. 1,5,6 and 7 the observed mean-difference is significant at .05 level only. In the case of institution No. 10, the obtained mean-difference is statistically significant at both .05 and .01 levels. On sub-scale VI, excluding two institutions, in all other institutions the observed mean-differences are statistically non-significant. In the case of institution No. 10 the obtained value of mean-difference is statistically significant at both .05 and .01 levels whereas in the case of institution No. 1, the obtained value is significant at .05 level alone.

When the total group (N=648) is taken, the mean-differences in the case of sub-scales I, II, V, and VI are statistically significant at both .05 and .01 levels whereas in the case of sub-scales III and IV they are found to be non-significant at both the levels.

The foregoing analysis reveals that institution-wise and sub-scale-wise mean-differences are interesting. They do not reveal much as most of them are statistically non-significant. However on some sub-scales and in the case of some institutions the mean-differences are statistically significant . This raises many doubts about the type of teacher-preparation programme that is being provided by the different training institutions. Perhaps, the quality of programme differs from one college to another and its impact also varies from institution to institution. The results for the total group (N=648) do give an indication of the change in opposite direction in professional attitudes of the student-teachers on four of the six sub-scales. However, it is needless to highlight that training programmes really need a radical overhaul sothat they succeed in changing the professional attitudes of student-teachers in the desired direction. The general finding that the attitude scores decline at the end of a teacher education programme should cause concern to all teacher-educators. This worry should attract the attention of people who matter because the decreases or gains are mostly found to be statistically non-significant on testing which denotes that the observed differences are either marginal or accidental or mere chance occurrences. The causes of this sad state of affairs

need be probed and looked into seriously.

SEX AND CHANGE IN PROFESSIONAL ATTITUDES

An attempt was made to find out whether the variable of sex has any role in making the differences in mean attitude scores of pretest and post test data of 9 coeducational institutions. Table 5.7 and 5.8 presents in a summary form the results of this data-analysis.

Table 5.7 shows that in the case of male student-teachers all institutions except institution Nos. 2,7 and 8 show a decrease in the opposite direction though the range of decrease is varied and small. In the case of female student-teachers all institutions except institution Nos. 6 and 9 indicate a decrease in mean professional attitude scores. Table 5.8 makes it clear that though at the time of the pre-test and post-test the mean attitude scores of male and female student-teachers differ but the mean-differences are all except one statistically non-significant at both the levels. Only in the case of institution No. 6 the mean-difference in the post-test between male and female student-teachers is statistically significant at .05 level alone. Even when the group as a whole is taken into consideration, the mean-differences are found to be statistically non-significant. This helps in making a conclusion that differences in mean attitude scores are only marginal or accidental or due to chance in almost all cases except one. This finding should impel teacher-educators to think of ways and

TABLE - 5.7

NUMBER OF INSTITUTIONS, NUMBER OF MALES AND FEMALES, MEANS AND STANDARD ERRORS OF MEANS

Institution No.	N_M	M_M		N_F	M_F		SE_{M_M}		SE_{M_F}	
		T_1	T_2		T_1	T_2	T_1	T_2	T_1	T_2
1.	35	253.00	250.08	25	255.74	244.89	5.06	5.08	4.33	4.81
2.	31	242.97	245.06	17	242.82	230.35	4.71	5.62	6.15	7.12
3.	27	253.85	244.06	27	245.38	243.11	4.70	5.11	5.41	5.96
4.	49	243.33	238.61	21	233.94	218.62	3.83	5.56	8.59	10.36
5.	39	246.51	234.79	22	238.32	223.32	3.77	6.15	4.56	8.67
6.	35	250.20	235.83	14	225.36	233.79	5.34	5.35	9.41	7.49
7.	64	249.22	257.98	32	257.82	252.73	3.89	3.96	6.29	5.78
8.	14	244.64	261.36	33	253.27	245.64	4.43	8.53	4.90	5.04
9.	17	257.29	259.35	17	252.36	257.60	7.58	8.13	10.72	11.46
Total: 9	311	248.31	245.12	198	243.72	244.59	1.75	2.02	2.11	2.53

TABLE - 5.8

MEAN-DIFFERENCES OF MALES AND FEMALES, STANDARD ERRORS OF MEAN DIFFERENCES, DEGREES OF FREEDOM, t, AND INTERPRETATION

Institution No.	MD (M-F)		SE MD (M-F)		df	t		Interpretation	
	T_1	T_2	T_1	T_2		T_1	T_2	T_1	T2
1.	2.74	5.19	6.66	7.00	58	0.41	0.74	NS	NS
2.	0.15	14.71	7.75	9.72	43	0.02	1.51	NS	NS
3.	8.52	0.23	7.17	7.35	52	1.19	0.12	NS	NS
4.	10.09	14.99	6.78	11.75	38	1.49	1.28	NS	NS
5.	8.19	11.47	5.92	10.63	59	1.38	1.08	NS	NS
6.	24.84	2.04	11.35	9.20	47	2.19	0.22	S (.05)	NS
7.	8.76	5.25	7.40	7.00	84	1.18	0.75	NS	NS
8.	8.63	14.72	6.61	9.91	45	1.31	1.49	NS	NS
9.	14.49	2.35	13.13	14.23	32	1.14	0.17	NS	NS
Totals:									
9	2.19	0.83	2.74	3.23	507	0.80	0.26	NS	NS

means of strengthening courses of teacher-preparation so that desirable and favourable patterns of attitudes are formed, in male and female student-teachers during the period of training.

DISCUSSION OF RESULTS

The general intention of this part of the study was to find out whether the newly developed tool i.e. Teacher Attitude Inventory (TAI) can be used as a device for measuring change in professional attitudes of prospective teachers effectively, efficiently and efficaciously. The findings have shown that the new instrument viz. TAI is a satisfactory appraisal device.

However, the findings of the study have a deeper meaning and message. The question is why the obtained results are in the opposite direction and statistically non-significant in most cases!

The answer is not easy to seek. It is apprehended that one of the main objectives of the teacher-preparation programme i.e. to develop positive, favourable, and healthy professional attitudes is being neglected. It is imperative that some steps should be taken to improve the sad state of things in the field of teacher-education so that prospective teachers may develop healthy professional attitudes.

Chapter 2 reviews a number of studies on change in attitudes of student-teachers. Studies by Leton (1961), Jacob (1964), Cummins (1966), Oilbink (1967), and Yee (1969) are quite

relevant. Studies by Hale (1954) and Walberg (1966) are meaning-ful as they raise a question: "Are teachers' colleges wasting their time?" Hale (1954) in an exhaustive study of students in teachers colleges in New South Wales found little change in a wide range of attitudes assessed at the beginning and end of a two-year course. Mehrotra (1973) in his study found that the attitude scores of teacher-trainees both of full-time and correspondence course (B.Ed. students) of Central Institute of Education, Delhi declined instead of improving as the teacher-preparation programme proceeded. He has pinpointed the need for probing deep into the causes of this malaise.

The results of this study hence rightly raise a pointer. What is wrong with the training institutions in Uttar Pradesh in particular and in India in general? How can training institutions be made better instruments of forming and developing desirable, healthy and favourable professional attitudes in student-teachers?

There is need to do some fresh thinking on introducing reforms in teacher education and strengthening programmes of teacher-preparation. It needs little reiteration that content and method in teacher education alike require experimentation and innovating research. Teacher education hence should welcome a variety of experimentation in many fields.

PART - III

CHAPTER - 6

CONCLUSIONS AND SUGGESTIONS

MAJOR FINDINGS OF THE STUDY

The present study has discovered some interesting results. The following findings need a special mention:

1. The new Teacher Attitude Inventory (TAI) constructed and standardized as an important part of this study is a reliable and valid instrument for the measurement of teacher attitudes.

2. The mean-attitude scores, as a general rule, are found to decrease in place of improving at the end of the training programme.

3. The one-year course of teacher preparation programme as run by different institutions affiliated to the various universities and examining bodies of Uttar Pradesh perhaps does not make an attempt to develop positive, healthy, and favourable professional attitudes in prospective teachers. However, if it makes some attempt, it can be labelled only as unsuccessful and fruitless.

4. The mean attitude scores of admission-seekers to different institutions differ and their mean attitude scores either go up or go down as a consequence of the teacher-preparation programme run by a particular institution.

5. The mean attitude scores on different sub-scales of the TAI differ sex-wise and institution-wise though mostly the observed mean-differences are statistically non-significant which shows that they are either marginal or accidental or due to sheer chance alone.

6. Sex is neither a determinant nor a differential of change in professional attitudes of student-teachers as a consequence of the teacher-preparation programme.

LIMITATIONS OF THE STUDY

1. The present investigation of change in professional attitudes has been conducted on 648 student-teachers undergoing L.T. or B.Ed. training in 11 educational institutions of Uttar Pradesh alone. As such the results of the study cannot be generalized for the student teachers of all the States in India without some reservations. The ideal situation would have been to take a sample from all the regions and states of the Indian union.

2. In this study the Teacher Attitude Inventory (TAI) has been used which was specifically constructed and standardized on 2169 student-teachers of the five Hindi speaking states. Although the TAI has come out to be reliable and valid, yet many more rigorous studies need be conducted to find out and establish its real worth for wider use.

3. The newly developed Teacher Attitude Inventory (TAI) was used to study the change in the attitudes of student-teachers as a consequence of training. There was need to use some other [illegible] tools for confirmation of results.

4. Only sex-variable and change in professional attitude as a result of training have been studied in the present investigation. As a consequence the analysis of obtained data

have been restricted. If there were many other variables the analysis could have been more thorough and treatment of the data more statistically sophisticated.

5. The subjects selected for study of change in professional attitudes were not selected randomly. It was done on the basis of availability of subjects. It is possible that this sample was neither representative nor adequate for arriving at dependable results.

6. There are two problems which confront researchers in the field of attitude measurement. These are the problems of social desirability and of acquiescence to which every self-reporting inventory is subjected to. An attempt was made to check these two elements. How far these have been successfully controlled and checked will only be shown by future follow-up studies.

CONCLUSIONS OF THE STUDY

It may be safely concluded on the basis of this study that present day teacher-preparation programmes are perhaps not much useful in development of desirable, healthy, and favourable attitudes. They need a thorough and radical overhaul sothat they may be attuned to the requirements of the prospective teachers.

The Teacher Attitude Inventory (TAI) has proved it-self to be a satisfactory attitude appraisal device. Further studies with TAI may open up many new avenues of research possibilities.

IMPLICATIONS OF THE STUDY

The generalizations in the study are derived from data which are primarily exploratory and descriptive. Hence it would be unwise to make specific recommendations or pin-pont implications on the basis of these findings. However, the information can be used for improving existing conditions in a variety of ways. Some of these are described here.

There is no denying the fact that the teacher is the pivotal point, the primary ingredient in the teaching learning process, and the characteristics of good teachers should be identified in order to recruit as many good teachers as possible.

Secondly, the teacher education institutions can include in their selection procedure a test of teacher attitudes, so that right type of candidates are selected for admission and are trained for being prospective teachers. They can also modify their methods and curricula accordingly, so that teachers prepared by them possess the desired healthy attitudes. For this purpose the newly developed Teacher Attitudes Inventory (TAI) can be of immense use both to school authorities and teacher training institutions. It can be used as a tool to know whether student-teachers have acquired the desired professional attitude or not.

The knowledge is positively related to favourableness of attitude. A teacher when equipped with the findings of research, will display better attitude which will in turn enrich

the teacher education programme and improve his style of teaching. The Teacher Attitude Inventory (TAI) can be used as a tool for conducting interdisciplinary, cross-cultural, and transnational research in the field of attitudes of prospective and practising teachers.

Programmes in training colleges can be arranged in such a way as to develop the right type of attitude in student-teachers. It can improve its quality and the TAI can be used to assess the quality, in respect of attitude development of secondary teacher training programmes and also to compare their performance in the area of attitude development. The TAI can also prove helpful in measuring the effectiveness of these programmes of teacher education in any State of the Indian Union.

It is of utmost importance to have standard methods, good institutions, dynamic administration for improving knowledge and developing better attitudes among prospective and practising teachers. Favourable attitude will equip these young teachers with an insight which will radiate through the years to improve education as a whole. Some sort of comparison of the attitudes of different groups of prospective and practising teachers on the six selected sub-areas of teaching profession/ process through TAI will definitely prove beneficial.

The TAI can be of immense use in constructing newer and more dependable tools in the difficult area of attitude appraisal and assessment.

SUGGESTIONS FOR FURTHER RESEARCH

The present study has pinpointed the need for research in some important areas. Some such areas are enumerated here:

1. The development of TAI is a good begining but validation studies of this inventory on different samples belonging to different regions of the country can be undertaken to make it more dependable and extensively applicable for future research. Furthermore, the TAI can be translated in various Indian languages and standardized on the population of local student-teachers for use in the different regions.

2. Factor-analytic studies can be conducted to determine factorial compositions of teacher attitudes and to discover the various underlying constructs of professional attitudes.

3. Attitudes of teachers at various levels viz. primary, secondary, college, and university can be studied to determine whether patterns of teacher attitudes vary at different levels.

4. Longitudinal studies can be taken up to study change in attitudes of teachers over a long period of time under different types of training, working, or service conditions.

5. Cross-cultural studies of attitudes of teachers in India and some selected foreign countries may be attempted. Transnational research in the field of teacher attitudes can pay rich dividends.

6. Impact of teacher attitudes on teacher behaviour in the class-room and student behaviour may be investigated.

7. Experimental studies of change in professional attitudes of teachers may be undertaken. These should be rigorous-ly controlled experiments with rigid experimental treatments and specified controls.

8. Studies of changes in the attitudes of teachers towards the courses under controlled conditions need be made to determine the effectiveness and efficiency of programmes and institutions running these programmes.

9. A number of correlational studies can be conducted to find out the nature and pattern of relationship between teacher attitudes and a variety of other variables such as level of intelligence, level of aspiration, socio-economic status, sociometric status, personal problems, job-satisfaction, and so on.

10. Furtheron, relationship between teacher attitudes and other selected variables may be cautiously analysed to find out different regression equations for making prediction studies possible in this rather neglected area of teacher attitudes.

[illegible]

[illegible]

1. Adaval, S.B. "Teacher Education" in National Council of Edul. Res. [illegible] Third Indian Yearbook(New [illegible]).

2. [illegible]l, [illegible]. The Study of Attitude of Training College [illegible] of Agra University Towards Their Profession [illegible] dissertation(Delhi: Delhi Univ., 1966).

3. Allport, G.W. "Attitudes" in Martin Fishbein(ed.) [illegible] in Attitude Theory and Measurement(New York: [illegible], [illegible]).

4. Allport, G.W. "The Historical Background of Modern Social Psychology" in G. Lindzey(ed) Handbook of Social Psychology Vol.I(Cambridge, Mass: Addison Wesley, [illegible]).

5. Anderson, [illegible] and [illegible], E.M. "Staff-characteristics" in [illegible], Chester [illegible] and [illegible] (eds.) [illegible](New York:Macmillan, [illegible]). [illegible]

6. Arvidson, [illegible] Some Factors Influencing the Achievement of [illegible] Secondary Modern School Children; Ph.D [illegible](London : Univ. of London, 1956).

7. Axelrod, S. and [illegible], C. "Attitudes towards Old People: An Empirical [illegible] the Stimulus - Group Validity of the Tuckman - Lorge Questionnaire", J.Geront., 1961, 16, 75-80.

8. Barrington, T.M. The Introduction of Selected Educational [illegible] (New York: Columbia Univ. [illegible] Publication, [illegible]).

9. Becker, Howard S. "The Teacher in the Authority System of the Public School" J. Ed. Sociol. [illegible], 1953.

10. Bernbaum, G. [illegible] (London : [illegible], [illegible]).

......2

11. Bills, R.E., V.M.Macgorm, and R.J.Elliott. "Student-Teacher Personality Change as a Function of the Personalities of Supervising and Cooperating Teachers, Cooperative Research Project (Alabama:College of Education, Univ. 1964).

12. Brim, B.J., "Attitude Changes in Teacher Education Students." Journal of Educational Research, 59: 441-45 (1966).

13. Brown, J. "Some Experimental Results in the Correlation of Mental Abilities" Brit. J. Psychol., 1910, 3, 296-322.

14. Buch, M.B. "The Measurement of Attitudes of Secondary School Teachers Towards the Teaching Profession", Jnl. of Educ. and Psychol., 1959, 17(3).

15. Buch, M.B. "Educational Psychology - A Trend Report" in Indian Council of Social Sciences Research, A Survey of Research in Psychology, (Bombay: Popular Prakashan, 197[illegible]).

16. Butcher, H.J. (Ed.) Educational Research in Britain (London: University of London Press, 19[illegible]).

17. Burstall, C. "French in the Primary School: Some Early Findings", Jnl. Curric. Stud. 1970, 2, 1.

18. Butts, David P. and Raun Chester E. A Study in Teacher Attitude Change (Austin University of Texas Research and Development Centre for Teacher Education, 1973).

19. Callis, R. "Change in Teacher-pupil Attitudes related to training and experience" Educl. and Psychol. Measurement, 1950, 10, 718-727.

20. Campbell, D.E., "Dimensional Attitude Changes of Student Teachers" JER 1967, 61 4 160-162.

......3/-

21. Campbell, [illegible] J. (ed.) [illegible] The Effects [illegible]

22. Cardno, J. A. "The Notion of Attitude : An Historical Note," Psychol. Rep, 1955, 1.

23. Clarke, David L and Burke, Arvid J. "[illegible] and Social Status of Teachers" [illegible]

24. Cook, [illegible], Leeds, C. H. and Callis, [illegible] Minnesota Teacher Attitude Inventory (New York: Psychological Corporation, 1951).

25. Gough, H. G, Durflinger, G. W. and Hill [illegible] "Predicting Performance in Student Teaching from the California Psychological Inventory. Jnl. of Edul. Psychology. 59 : 119-27 (1960).

26. [illegible] and Griswold, Kenneth "[illegible] Changes [illegible] Student Teachers" J. Teach. Ed. [illegible]

27. Cox, Don "An objective and [illegible] Study of the Factors of Laboratory Experience in [illegible] Education Course Prior to Student Teaching". [illegible] (1960), 29:89-94.

28. Cronbach, L. J. and Meehl, P. E. "Construct Validity in Psychological Tests" [illegible] 281-302.

29. Cummins, R. E. "Role Study in Teacher Training; A Sequel." Jnl. of Edul. Psychology (1961), 35: 119-20.

30. Day, H. P. "Attitude Changes of beginning Teachers after initial teaching experience". J. Teacher Edu., 1959, 10, [illegible]

31. Davies, [illegible] and [illegible] "Student Teaching" in [illegible] [illegible], Victor [illegible] [illegible]

......4

32. Dellu Piana, G.M. and Gage, N.L. "Pupils', Values and the Validity of the Minnesota Teacher Attitude Inventory" Jnl. of Educl. Psychology, 1955, 46, 167-78.

33. Dosajh N.L. "A Study of the Change in Attitudes of Teacher Trainees towards Pupils" Recent Trends in Education, 1970, 6-8.

34. Edwards, A.L. Techniques of Attitude Scale Construction (Bombay: Vakils, Feffer and Simons, 19[illegible]). Indian Reprint.

35. English, H.B. and English, A.C. A Comprehensive Dictionary of Psychological and Psychoanalytical Terms (New York: McKay, 1958).

36. Evans, K.M. "An Examination of the Minnesota Teacher Attitude Inventory" British Journal of Educl. Psych. 28, 253-7. (1958).

37. Evans, K.M. A Study of Attitude towards Teaching as a Career unpublished M.A. Thesis (Cardiff: University of Wales Library), 1946.

38. Evans, K.M. A Study of Teaching Ability at the Training College stage in relation to the personality and attitudes of the student unpublished Ph.D. Thesis, (London: University of London), 19[illegible].

39. Evans, K.M. "The Minnesota Teacher Attitude Inventory" Educl. Research, 8, 134-41, (1966).

40. Fraser, E. Home Environment and the School (London: University of London Press, 19[illegible]).

41. Frymier, J.R. Fostering Educational Change (Columbus, Ohio: Charles E. Merrill Publishing Company, 1969).

42. Ghiselli, E.E. Theory of Psychological Measurement (New York : McGraw Hill, 1964).

43. Greene, G. A [illegible] of Attitudes, Values and Dogmatism of College [illegible] and Seniors" Jnl. Tr. Edu(1972), [illegible].

44. Good, H.G. "Teacher Education" in Harris, C.W. and Liba, M. (eds.). Encyclopedia of [illegible] Research (New York: MacMillan, 1962).

45. [illegible]

46. Hale, [illegible] "Are Teachers' Colleges Meeting Some of Their Time? Forum Jl. 12: 102-4; 1954.

47. Hall, Robert K. and Others (Eds.) [illegible] Education World Bk, 1965. [illegible].

48. Herbert, N and Turnbull, G.H. "Personality Factors and Effective Progress in Teaching". Educ. Review 16, 24-31. (1963).

49. [illegible]

50. Hoover, Kenneth H. and Others. "A Comparison of Expressed [illegible] Before and After Student Teaching". [illegible] 324-8; 1965.

51. Horowitz, M. "Student Teaching Experiences and Attitude of Student Teachers". Jnl. Tr. Edu. (1965, XIX, 3).

52. Hunter, Elwood C. "Attitudes and Professional Relationship of Teachers : A Study of Teacher Morale" J. Exp. Ed. 23: 345-52; 1955.

53. Inlow, [illegible] York: Appleton-Century-Crofts, [illegible].

54. Jacks, M.L. Total Education: A Plea for Synthesis (London: [illegible], [illegible]).

55. Jacob, B. E. "Attitude Change in Teacher Education" Jnl. Teacher Education(1964), XIX, 2.

56. Jangira, N.K. and Sharma, S. "Teaching and Teacher Behaviour" in M.B.Buch(Ed.) A Survey of Research in Education(Baroda: CASE, M.S. University of Baroda, 1974) p. 481.

57. Joyces, B.R., and R.E.Hodges. "Instructional Flexibility Training". Journal of Teacher Education, 17:409-16(1966).

58. Kakkar, S.B. "Influence of Teacher Training on Trainees Attitudes" Indian Educl. Review, 1970, 106-113.

59. Kaplan, Louis. "The Annoyances of Elementary School Teachers" J.Ed. Res. 45:649-65; 1952.

60. Kerlinger, Fred N. and Pedhazer E.J. Attitudes and Patterns of Desirable Traits and Behaviours of Teachers(New York: New York University, 1967). Project report.

61. Kenney, L.B. "Unsolved Problems - Symposium on Teacher Education Journal of Tr. Edu., XIV, 1963, p. 32.

62. Kothari, V.A. A Study of Attitude of Parents, Pupils and Teachers Towards Teaching as a career. M.Ed dissertation (Bombay: Bombay Univ., 1958).

63. Krasno, R.M. Teachers' Attitudes: Their Empirical Relationship to Rapport with Students and Survival in the Profession (Stanford, Calif.: School of Education, 1972).

64. Krech, D. Crutchfield R.S. and Ballachey, E.B. Individuals in Society, (New York : Mc Graw Hill, 1962).

65. Kuder, G.F., and Richardson, M.W. "The Theory of Estimation of Test Reliability", Psychometrika, 1937, 2, 151-160.

66. Kuppuswamy, B. and Mapen, P.C. "Attitude of Teachers Towards Moral and Religions Instruction in Schools." Jnl. of Educl. Res. and Ext. 1968, 5, 1, 9-16.

67. Lantz, Donald W. "Changes in Student Teachers' Concepts of Self and Others." J.Teach. Ed. 15:200-3; 1964.

.....7

68. Leton,D.A. "An Evaluation of Course Methods in Teaching Child Development." _Journal of Educational Research_, 35; 118-22(1961).

69. Lipkin,J.P. _Secondary School Teacher Education in Transition_(Bombay: Asia Publishing, 1970).

70. Lipscomb,E.E. "A Study of Attitudes of Student Teachers in Elementary Education' Jnl. E.R.(1966)X,_60_,4.

71. Lohman,Maurice A. "Certain Characteristics of Student Teachers Who Stay in Teaching". CRP No.S-332 The City U. of New York Research Foundation,1966. 51 p.

72. Lulla,B.P. and Singh,L.P. "Teacher Education A Trend Report" in M.B.Buch(ed.) _A Survey of Research in Education_(Baroda: CASE,M.S.University of Baroda,1974), p. 439.

73. Mazer,G.E. "Attitude and Personality Change in Student Teachers of Disadvantaged Youth" _Journal of Educational Research_, 63: 116-20. (1969).

74. Mehrotra,R.N. "Teacher Education Programmes and the Attitude of Teacher Towards the Teaching Profession" _Teacher Education_ _VII_, I (October,1973).

75. Menaker,S.L. and Fuller F.F. "A Study of Elementary Teacher Training - Experimental Control Group Comparisons and Changes During the Two-year Training Period" Research and Development Centre for Teacher Education, U. of Texas,1967.

76. Muuss,R.E. "Differential Effects of Studying Versus Teaching on Teachers Attitudes" Jnl. Educational Research(1969,_63_).

77. Nagle,W. Marshall "Some Effects of Student Teaching Patterns upon Professional Attitudes" _J.Ed. Res._ 52: 355-7;1959.

78. Nash,R. "Measuring Teacher Attitudes", _Educl.Res._1972,14, 2, 141-146.

79. N.E.A. Research Division "The Teacher Looks at Personnel Administration" _Res.B._ 23 : 93-147; 1945.

.....8

80. Newcomb, T.M. Social Psychology (London: Tavistock Publications, 1952).

81. Newsome, George L., Jr. and Others "Changes in Consistency of Educational Ideas Attributable to Student-teaching Experiences" J. Teach. Ed. 16: 319-23; 1965.

82. Nunn, T.P. Education : Its Data and First Principles. (London: London University Press, 1945) 3rd edition.

83. Nunnally, J.C. (Jr.) Tests and Measurements: Assessment and Prediction (New York : McGraw Hill, 1959).

84. Pandey, U. "A Study of Women Teacher Trainees Attitude Towards Their Profession. M.Ed dissertation (Allahabad: Alld. Univ., 1958).

85. Pepper, James N. Factors Involved in the Recruitment and Retention of Teachers in Michigan. Doctoral Thesis. Wayne U., 1954.

86. Pidgeon, D.A. Expectations and Pupil Performances (Slough: NFER, 1970).

87. Polmantier, P.C. and J.L. Ferguson. "Faking the Minnesota Teacher Attitude Inventory" Educl. & Psychol. Measurement, 20: 79-82 (1960).

88. Prashar, O.D. A Study of the Attitude of Teachers of Secondary Schools in Delhi Towards Teaching as a Profession M.Ed Dissertation (Delhi: Univ. of Delhi, 1963).

89. Raina, T.N. "Effect of Internship on Attitude Change" Jnl. of Education & Psychology, 1971, 29.

90. Raina, T.N.; and Raina, M.K. "Attitude Changes of Graduate Student Teachers", Educl. & Psychol. Rev., 1968, pp. 25-33.

91. Rastogi, R.P. "Analysis of Attitude of Training College Students Towards Teaching Profession" M.Ed dissertation (Allahabad: Alld. Univ., 1956).

92. Richardson, C.A. and others. The Education of Teachers in England, France and the U.S.A. (Paris: UNESCO, 1953).

....9

93. Robinowitz,W. "The Fakability of the Minnesota Teacher Attitude Inventory" Educl. & Psychol. Measurement, 14: 657-64(1954).

94. Rocchio,P.D. and Kearney,N.C. Does a Course in Mental Hygiene Help Teachers? Understanding the Child, 25: 91-94(1956).

95. Rogers,Dorothy. "A Study of the Reactions of Forty Men to Teaching in the Elementary School" J.Ed. Sociol. 27: 24-35; 1953.

96. Roy,Dina. Relationship between the Measures of Success of Teachers as Students under Training and as Teachers in Schools (Delhi: Central Institute of Education,1970).

97. Sarason,S.B.,Davidson,K.S., Blatt,B. The Preparation of Teachers.(New York: John Wiley, 1962).

98. Seeger,Martin L. "Twenty-year Sampling of Teacher Attitudes" Sch. Executive 75: 46-48; 1955.

99. Shaw,Marvin E and Wright,Jack M. Scales for the Measurement of Attitudes(New York: McGraw Hill,1967).

100. Sil,A.K. "Impact of Training on Teacher Pupils", Teacher Education VI(1971) PP. 22-28.

101. Silbermann,M.L. "Behavioural Expression of Teachers' Attitudes Towards Elementary School Students", Jnl. of Educl. Psychol. 1969,60, 402-7.

102. Singh,H.L. Measurement of Teacher Values and Their Relationship with Teacher Attitudes and Job-Satisfaction Ph.D Thesis.(Varanasi: Banaras Hindu University, 1973).

103. Snyder,William U. "Recent Investigations of Mental Hygiene in the Schools" Ed. Res. B 24: 231-48; 1945.

104. Spearman,C. "Correlation Calculated from Faulty Data" Brit. J. Psychol. 1910,3, 271-295.

......10

105. Sprinthall,N.A.,Whiteley,J.M.and Mosher,R.L. "A Study of Teacher Effectiveness", Jnl. of Tr.Edu.,1966, 17, 93-106.

106. Srinavaslu,N. "An Investigation into the Attitudinal Changes of Graduate-Student Teachers During the Training Course" M.Ed Dissertation(Waltair:Andhra University,1964).

107. Stouffer,George A.W., Jr. "Behaviour Problems of Children as Viewed by Teachers and Mental Hygienists" Mental Hygiene 36: 271-85; 1952.

108. Symonds,Percival M. "Teaching as a Function of the Teachers' Personality" J.Teach. Ed. 5: 79-83; 1954.

109. Taylor,W.(ed.) Towards a Policy for the Education of Teachers(London: Butterworths, 1969).

110. "Teacher Education for the future" Am.Asso.of Colleges for T.Education. Twelfth Year Book(Chicago:Chicago University Press,1959).

111. Thakkar,P.G. A Critical Study of Attitudes Towards Teaching as a career.(M.Ed dissertation,Bombay Univ. 1959).

112. The Mc Nair Committee: Teachers and Youth Leaders, (London: Government Press, 1944).

113. Thurstone,L.L. The Measurement of Values(Chicago: Univ. of Chicago Press,1959).

114. Triandis,Harry C. Attitude and Attitude Change(New York: John Wiley, 1971).

115. Triandis,H.C. "Exploratory Factor Analysis of the Behavioural Component of Social Attitudes" Jnl.of Abnorm. Soc. Psychol.,1964,68.

116. Tuttle,Harold S. "Profile of Professors" Ed.Forum 20: 313-18; 1956.

117. University of Tolesto. "The characteristics of Teacher Education Students in the British Isles and the United States(Tolesto,Ohio: Research Foundation of the University),1965.

118. Varma, C.L. A Comparative Study of Professional Attitudes of Prospective and Practising Teachers M.Ed Dissertation(Varanasi: Banaras Hindu University, 1974).

119. U.S. Dept. of Health, Education and Welfare, Talent and Tomorrows Teachers: The Honors Approach(Washington, D.C.: Office of Education, 1963).

120. Verma, D.R. A Study of Teacher Training as a Catalyst of Change in Professional Attitudes of Student-Teachers M.Ed Dissertation(Varanasi: Banaras Hindu University, 1971).

121. Verma, I.B. An Investigation into the Impact of Training on the Values, Attitudes, Personal Problems and Adjustments of Teachers. Ph.D. Thesis(Agra: Agra Univ., 1968).

122. Wandt, Edwin "Comparison of the Attitudes of Contrasting Groups of Teachers" Ed.Psychol. Meas. 14: 418-22; 1954.

123. Walberg, H.J., "Self-conception in Beginning Teachers" Journal of Teacher Education(1966)17: 284.

124. Wilk, Roger E. "An Experimental Study of the Effects of Classroom Placement Variables on Student Teacher Performance" J.Ed. Psychol. 55: 375-80; 1964.

125. Yeager, T.C. An Analysis of Certain Traits of High School Seniors Interested in Teaching(New York: Teachers College, Columbia Univ., 1935).

*****

APPENDICES

अध्यापक अभिवृत्ति सूची

जब तक कहा न जाय मत खोलें

DO NOT OPEN UNTIL TOLD TO DO SO

अध्यापक अभिवृत्ति सूची

TEACHER ATTITUDE INVENTORY

(Preliminary Form)

Dr. S. P. Ahluwalia, Reader in Education
Principal Investigator, NCERT Research Project
Banaras Hindu University

निर्देश :

इस सूची मे १५० कथन है जिनका उद्देश्य अध्यापको की व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्तियो को ज्ञात करना है। ये अभिवृत्तियाँ कैसी होनी चाहिये, इस पर पर्याप्त मतभेद है, अतएव इन कथनो के कोई पूर्व-निर्धारित सही या गलत उत्तर नही है। इस सूची मे केवल यह जानने का प्रयत्न किया जा रहा है कि इन कथनो के प्रति आपके व्यक्तिगत विचार या भाव क्या है। प्रत्येक कथन को पढिये और निर्णय कीजिये कि आप का इसके सम्बन्ध मे क्या विचार या अनुभव है। तदुपरान्त अपना उत्तर दिये हुये उत्तर पत्र पर यथास्थान लिखे।

इस पुस्तिका पर कोई चिह्न न लगाएँ।

उत्तर देते समय किसी विशिष्ट परिस्थिति के स्थान पर केवल सामान्य परिस्थिति के सम्बन्ध मे सोचे। उत्तर देने के लिए समय का कोई बन्धन नहीं है, किन्तु जितनी शीघ्रता से हो सके काम करे।

कृपया प्रत्येक कथन का प्रत्युत्तर दीजिए।

Directions :

This inventory consists of 150 statements aimed to identify the professional attitudes of the teachers. There is considerable disagreement as to what these attitudes should be, therefore there are no **right** or **wrong** answers. What is wanted is your own individual feeling about the statements. Read each statement and decide how **you** feel about it. Then mark your answer on the space provided on the answer sheet

Do not make any marks on this book-let.

Think in terms of the general situation rather than specific ones There is no time limit but work as rapidly as you can.

Please respond to every item.

उत्तर-पत्र पर उत्तर लिखने की विधि अगले पृष्ठ पर समझाई गई है।

The method of recording the response on the answer-sheet has been explained o the next page.

अध्यापक अभिवृत्ति सूची

उत्तर लिखने की विधि : Method of recording the response :

	पू० स० S A	स० A	अनि० U	अस० S D	पू० अस० S D	
यदि आप दिए हुए कथन से पूर्ण सहमत हैं तो पू० स० के नीचे रिक्त स्थान पर सही का चिह्न (√) लगा दें।	√					If you **strongly agree**, put a tick (√) mark in the space under **S. A.**
यदि आप दिए हुए कथन से सहमत है तो स० के नीचे रिक्त स्थान पर सही का चिह्न (√) लगा दें।		√				If you **agree**, put a tick (√) mark in the space under **A**
यदि आप अनिश्चित या द्विविधा मे हो तो अनि० के नीचे रिक्त स्थान पर सही का चिह्न (√) लगा दें।			√			If you are **undecided** or **uncertain**, put a tick (√) mark in the space under **U.**
यदि आप दिये हुये कथन से असहमत हो तो अस० के नीचे रिक्त स्थान पर सही का चिह्न (√) लगा दें।				√		If you, **disagree**, put a tick (√) mark in the space under **D.**
यदि आप दिए हुए कथन से पूर्ण असहमत है तो पू० अस० के नीचे रिक्त स्थान पर सही का चिह्न (√) लगा दें।					√	If you **strongly disagree**, put a tick (√) mark in the space under **S D.**

स्मरण रहे इस पुस्तिका पर आपको कोई चिह्न नहीं लगाना है।

Remember you have not to put any mark on this book-let.

अब आप प्रत्येक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़ें और अपने उत्तर उत्तर-पत्र पर अंकित करें।

Now read each statemeat carefully and record your response on the answer-sheet.

कृपया पन्ना उलटिए। **Please turn over.**

पू० स० = पूर्ण सहमत, स = सहमत, अनि = अनिश्चय, अस = असहमत, पू० अस = पूर्ण असहमत ।	S. A. = Strongly agree, A. = Agree, U = Undecided, D = Disagree, S. D. = Strongly disagree
1. यदि कालेज मे प्रवेश पाने योग्य मेरा पुत्र होता, तो मै उसे अध्यापक बनने के लिए प्रोत्साहित करता ।	If I had a son entering college I would have encouraged him to become a teacher.
2.. कक्षागृह कबरस्तान के समान शान्त नही होना चाहिए ।	A classroom should not be as quiet as graveyard.
3. अध्यापक को छात्रों के व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए ।	Students' behaviour should be taken into consideration by the teacher
4. कक्षा मे प्रश्न पूछने के लिए स्वतन्त्रता न देने से छात्र अधिक परिश्रम करते है ।	Students work hard if they are not given freedom to ask questions in the class.
5. छात्र सामान्यत: निष्ठावान होते है ।	Students are generally sincere.
6. अध्यापक प्रत्येक व्यक्ति का आदर करता है ।	A teacher respects everybody.
7. मै नही चाहूंगा कि मेरे घनिष्ठ मित्र अध्यापन व्यवसाय के हो ।	I would not prefer my close friends to be from the teaching profession.
8 शरारती छात्रो को पाठशाला की छात्र समिति द्वारा दण्डित किया जाना चाहिए न कि शिक्षको द्वारा ।	Mischievous students should be punished by the schools' student council and not by the teacher.
9. पढाना केवल कक्षा मे ही सम्भव है ।	Teaching is possible only in the classroom
10. छात्रो की वैयक्तिक विभिन्नता पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए ।	Individual differences among the students should not be paid much attention to.
11. आजकल के छात्रों पर किसी को भरोसा नही करना चाहिए।	One should not rely on students of to-day
12. आजकल अध्यापक पक्षपात नही करते है ।	Now a-days teachers don't show favouritism.
13. अध्यापन व्यक्तित्व और चरित्र का विकास करता है ।	Teaching develops personality and character.
14. कक्षा मे पढ़ने से छात्र अनुशासित हो जाते है ।	Class-room teaching makes the students disciplined.
15. छात्रो को अपनी इच्छानुसार सीखने की स्वतन्त्रता नही होनी चाहिए ।	Freedom should not be given to the students to learn according to their own desire

अध्यापक अभिवृत्ति सूची

पू० स० = पूर्ण सहमत, स = सहमत, अनि = अनिश्चय, अस = असहमत, पू० अस = पूर्ण असहमत ।	S. A =Strongly agree, A.=Agree, U=Undecided, D=Disagree, S. D.=Strongly disagree.
16 छात्र शेखी बघारने वाले नही होते है ।	Students are not boastful.
17. कक्षा मे छात्रो को अपने विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिये ।	Pupils should be given freedom to express their views in the class
18. अध्यापक अपनी बात कहने के लिए स्वतन्त्र नही है ।	Teachers are not free to express their views.
19. जो व्यक्ति अन्य व्यवसायो मे असफल होते है वे ही सामान्यत: अध्यापक बनते है ।	Those who fail in other fields of work usually become teachers
20. कक्षा मे अध्यापन कार्य सरल हो जाता है ।	Teaching work becomes easy in the class-room
21. छात्र दण्ड की अपेक्षा प्यार से सीखते है ।	Students learn more by love than by punishment.
22 अध्यापक प्राय आदर्श की बाते किया करते है ।	Teachers often talk on ideals.
23. बहुत से छात्र तभी पढ़ते है जब उन्हे विवश किया जाता है ।	A good many students study only when they are forced to do so
24. छात्रो को कक्षा मे लज्जित नही करना चाहिए ।	Pupils should not be let down before the class.
25. कक्षा-शिक्षण से सामाजिक वातावरण उत्पन्न होता है ।	Class-room teaching begets social atmosphere.
26 छात्रो के गृहकार्य को उनकी ही सहायता से ठीक करना चाहिये ।	Students' home-work should be corrected with their help
27 छात्रो की इच्छा के विरुद्ध उन्हे पढने के लिए बाध्य करना सीखने मे बाधक है ।	To force students to learn against their wishes handicaps the process of learning.
28. छात्र एक दूसरे से हिलमिल कर नही रहते है ।	Students do not live together in harmony with one another.
29. जब कोई व्यक्ति किसी अध्यापक को देखता है तो उसे हँसी आती है ।	When one sees a teacher he feels like laughing at him
30. कोई भी व्यवसाय अध्यापन से श्रेष्ठ नही ।	No occupation is better than the teaching profession

पू० स० = पूर्ण सहमत, स = सहमत, अनि = अनिश्चय, अस = असहमत, पू० अस = पूर्ण असहमत।	S. A. = Strongly agree, A. = Agree, U = Undecided, D=Disagree, S. D = Strongly disagree.
31. प्राय ऊँचे स्तर के व्यक्ति अध्यापन-व्यवसाय नहीं अपनाते है।	Genetally men of high status do not take up teaching
32. कक्षाध्यापन से छात्रो मे नेतृत्व की भावना उत्पन्न होती है।	Class-room teaching develops a feeling of leadership among students
33. छात्र क्रिया द्वारा सर्वाधिक सीखते है।	Students learn best by doing
34. छात्रो को हमेशा व्यस्त रखना ठीक नहीं है।	It is not good to keep the students busy.
35 आजकल शिष्य गुरुजनो का कहना नही मानते है।	Now-a-days students do not obey their teachers.
36. अध्यापक की बातो पर सभी लोग ध्यान देते है।	Every body pays attention to what a teacher says
37. अध्यापक शेखी बघारने वाले होते है।	Teachers are boastful.
38 छात्र पढाई की अपेक्षा वस्त्रो पर अधिक ध्यान देते हैं।	Students pay more attention to their clothe than to their studies
39. कुछ छात्र कुछ विषयो मे अनुभवी अध्यापको से अधिक जानते है।	Some students know more about some subject than the experienced teachers.
40 विद्यालय मे छात्र सघ नहीं होना चाहिये।	There should be no students' union in school.
41. अध्यापक राष्ट्र के नैतिक मानको का निर्धारण नहीं करते है।	Teachers do not determine the moral standar of a nation.
42. आजकल अध्यापन व्यवसाय मे केवल थोडे से ही ईमानदार व्यक्ति है।	There are only a few honest people in the teachi profession to-day
43. यदि अध्यापन व्यवसाय का मान नही किया जाता है तो हमारे राष्ट्र की प्रगति नहीं होगी।	If the teaching profession is not honoured o nation will not progress
44 कक्षा शिक्षण का कोई विकल्प नहीं है।	There is no alternative to class-room teaching.
45. छात्रो का स्वास्थ्य विद्यालय का एक महत्वपूर्ण दायित्व है।	Students' health is an important responsibility the school.

अध्यापक अभिवृत्ति सूची

पू० स० = पूर्ण सहमत, स = सहमत, अनि = अनिश्चय, अस = असहमत, पू० अस = पूर्ण असहमत ।	S. A.=Strongly agree, A=Agree, U=Undecided, D=Disagree, S D.=Strongly disagree
46. पढाने की एक ही विधि सभी छात्रो के लिए लाभकर नहीं है ।	Just one method of teaching is not suitable for all the students
47. छात्र केवल विद्यालय में ही अनुशासित रहते है ।	Students observe discipline only in the school.
48. अधिकास अध्यापक लालची होते है ।	Most of the teachers are greedy.
49. छात्रो के कार्यो की उपयुक्त प्रशंसा उन्हे सीखने के लिए प्रोत्साहित करती है ।	Due recognition to the work of the students encourages them to learn
50 सामान्यतः अध्यापक कक्षा मे पूरी तैयारी कर के नहीं जाते है ।	Generally teachers do not come to the class well-prepared.
51. राष्ट्रीय समस्याओ के प्रति छात्र सामान्यत उदासीन रहते है ।	Students are generally disinterested in national problems
52 सामूहिक कार्यो से छात्रो मे सहयोग की भावना उत्पन्न नही होती है ।	Group activities do not create a sense of co-operation among the students.
53. कडा दण्ड देने से छात्रो में प्रतिशोध की भावना नही आती है ।	Pupils do not develop a feeling of revenge if punished severely.
54. कक्षाध्यापन मे वैयक्तिक अन्तरो की ओर ध्यान देना कठिन नही है ।	It is not difficult to attend to individual differences in class-room teaching.
55. अध्यापन व्यवसाय का भविष्य उज्ज्वल है ।	Teaching profession has a bright future.
56. अध्यापन व्यवसाय केवल आरम्भ मे ही रोचक लगता है ।	Teaching profession appears to be interesting only in the beginning
57. कक्षाध्यापन से प्राय. तीव्र और प्रतिभाशाली छात्रों की हानि होती है ।	Bright and talented students often suffer in class-room teaching
58 गृहकार्य न दिये जाने पर छात्र लापरवाह हो जाते है ।	Students become careless if home-work is not given to them.
59 विद्यालय के आस-पास के वातावरण का सीखने पर प्रभाव पडता है ।	The surroundings of the school have an impact on the learning process.
60. छात्रो को विचारने की स्वतन्त्रता नही देनी चाहिये ।	Students should not be given freedom to think.

पू० स० = पूर्ण सहमत, स = सहमत, अनि = अनिश्चय, अस = असहमत, पू० अस = पूर्ण असहमत।

S A.=Strongly agree, A =Agree, U=Undecided, D=Disagree, S. D.=Strongly disagree.

61 प्रशिक्षित अध्यापक को ही पढाने का अधिकार होना चाहिए। / Only trained teachers should have the right to teach.

62. कक्षाध्यापन से छात्रो मे आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न नही होती है। / Class-room teaching does not inculcate a feeling of self-confidence in the students.

63. शका समाधान न होने पर छात्र असन्तुष्ट रहते है। / Pupils remain unsatisfied if their doubts are not clarified

64. कक्षा मे वाद-विवाद करने से बहुत सी उलझने सुलझ जाती है। / Many problems get solved through class room discussion

65. अनुचित व्यवहार प्रदर्शन पर छात्रो को कडा दंड मिलना चाहिए। / Students should be given severe punishment for showing indecent behaviour

66. लोग अध्यापको को घृणित दृष्टि से नही देखते है। / People do not look down upon teachers

67. मुझे यह कहने मे गर्व होता है कि मै अध्यापन-व्यवसाय मे हूँ। / I take pride in telling that I belong to the teaching profession

68. कक्षाध्यापन छात्रो को परस्पर आदर करने के लिए प्रेरित करता है। / Classroom teaching makes students respect each other

69. छात्रो की उद्दण्डता को क्षमा करना युक्तिसंगत नही है। / It is not reasonable to forgive the rowdyism of students

70. छात्रो की विशेष योग्यता पर ध्यान न देने से उनकी प्रतिभा छिपी रहती है। / The talents of students remain hidden if due attention is not paid to their special abilities.

71. छात्रो को अध्यापक से आज्ञा लेकर ही कक्षा में प्रवेश करना चाहिए। / Students should enter the class only after getting the permission from the teacher

72. हमारे देश मे अच्छे अध्यापक बहुत कम है। / There are very few good teachers in our country.

73 अध्यापक विनोदी स्वभाव के नही होते है। / Teachers do not have a sense of humour.

74 तुतलाकर बोलने वाले छात्र कक्षा मे समस्या होते है। / The stammering students are a problem in the class

75. छात्रो मे असन्तोष अध्यापन की कमियो का द्योतक है। / Student discontent is a sign of short-comings in teaching

अध्यापक अभिवृत्ति सूची

पू० स० = पूर्ण सहमत, स = सहमत, अनि = अनिश्चय, अस = असहमत, पू० अस = पूर्ण असहमत ।	S A =Strongly agree, A.=Agree, U=Undecided, D=Disagree, S. D.=Strongly disagree.
76. विद्यार्थियो से अध्यापक भी कुछ सीख सकते है ।	Even teachers can learn something from pupils.
77. अध्यापन व्यवसाय मे लाभ की अपेक्षा हानियाँ अधिक है ।	There are more disadvantages than advantages in the teaching profession.
78. कक्षाध्यापन से सीखने की इच्छा प्रबल हो जाती है ।	Class room teaching strengthens the desire to learn.
79. मैं केवल माता-पिता की इच्छा के कारण ही अध्यापन-व्यवसाय अपनाना चाहता हू ।	I want to take up the teaching profession only because my parents wish so.
80. कक्षा-शिक्षण के अभावो के कारण ही निजी-ट्यूशन द्वारा अध्यापन का चलन हुआ है ।	The practice of private tuitions is the result of draw backs of class-room teaching.
81. विद्यार्थियो के लिए पुस्तके सर्वेसर्वा नही है ।	Books are not all in all for pupils.
82. छात्र तभी अच्छे नागरिक बन सकते है, जब अध्यापक अच्छे अध्यापक हो ।	Students can become good citizens only when teachers are good teachers.
83. जब कभी शरारती छात्र पीटे जाते है, मुझे अच्छा लगता है ।	I get pleased when mischievous students get a beating.
84. कहने के अनुसार कार्य करने वाले व्यक्ति मे अध्यापक के गुण होते है ।	One who does according to what he says, has the qualities of a teacher.
85. अध्यापन-व्यवसाय मे रहकर शानदार जीवन व्यतीत करना कठिन है ।	It is difficult to lead a luxurious life in the teaching profession.
86. कक्षाध्यापन मे परिवर्तन की आवश्यकता है ।	Class-room teaching needs a change.
87. छात्रो द्वारा किये गये विभिन्न कार्यों का उनके अन्तिम मूल्यांकन मे कोई स्थान नही होना चाहिये ।	Different activities performed by the students should not have a place in their final evaluation
88. सीखने के लिए छात्र और अध्यापक मे अच्छे सम्बन्धो का होना जरूरी है ।	Good relationship between the teacher and the taught is essential for learning.
89. कक्षा मे छात्रो को प्रश्न पूछने की छूट नहीं होनी चाहिए ।	Students should not be allowed to ask questions in the class
90. अधिकतर अध्यापक छात्रो की बातो मे रुचि नही लेते हैं ।	Most of the teachers do not show interest in what students say

पू० स० = पूर्ण सहमत, स = सहमत, अनि = अनिश्चय, अस = असहमत, पू० अस = पूर्ण असहमत।	S. A.=Strongly agree, A.=Agree, U=Undecided, D=Disagree, S. D.=Strongly disagree.
91. अध्यापक प्रखर बुद्धि वाले छात्रों को सन्तुष्ट नहीं कर पाते है।	Teachers cannot satisfy the intellectually superior students
92. छात्र परीक्षा मे पास होने के लिए कुछ भी कर सकते है।	Students can do anything in order to get through the examination.
93. आज जो ज्ञान छात्रो को दिया जाता है, अधूरा है।	The knowledge that is imparted to the students to-day is incomplete
94. केवल विद्यार्थियों को ही निश्चित करना चाहिये कि वे क्या गृह-कार्य करना चाहते है।	Students alone should decide what home-work they would do
95. कक्षाध्यापन मे अध्यापक और छात्रो के बीच एक दूरी रहती है।	There is a distance between teacher and students in class room teaching
96. आजकल अध्यापन को छोड कर लोग दूसरे व्यवसायो मे जाना पसन्द नहीं करते है।	To day people do not like to give up teaching to enter other professions
97. अध्यापन व्यवसाय मे रहना अभिशाप है।	It is a curse to remain in the teaching profession.
98. कक्षाध्यापन मे पीछे बैठने वालो पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता।	Back-benchers do not get proper attention in class-room teaching.
99. यह अच्छा है कि अब बालको की अभिरुचि को महत्व दिया जाता है।	It is good that now-a-days aptitude of students is given importance.
100. पुराने समय की अध्यापन विधियाँ आज से अच्छी थीं।	Teaching methods of the past were better than those of to-day
101. समाज की सभी समस्याएँ छात्रो द्वारा हल नहीं हो सकती है।	All the problems of the society cannot be solved by the students
102. अध्यापक अक्सर सतर्क रहते है।	Teachers are often alert.
103 एक अध्यापक प्राय अपने को एक नेता समझता है।	A teacher often thinks himself to be a leader.
104. बहुत कम छात्र घर पर अध्ययन करते है।	Very few students study at home.
105. प्रचलित अध्यापन विधियो मे क्रान्तिकारी परिवर्तन की आवश्यकता है।	The existing methods of teaching need a radical change

अध्यापक अभिवृत्ति सूची

पू० स० = पूर्ण सहमत, स = सहमत, अनि = अनिश्चय, अस = असहमत, पू० अस = पूर्ण असहमत

S A. = **Strongly agree, A. = Agree, U = Undecided, D = Disagree, S. D = Strongly disagree**

106. गृह-कार्य देते समय छात्रो की योग्यता का ध्यान रखना चाहिये।	While assigning home task pupils' ability should be taken into consideration
107. कक्षाध्यापन में विद्यार्थी का स्थान प्रमुख नहीं होना चाहिये।	The place of the student should not be supreme in class-room teaching.
108. अध्यापन व्यवसाय मे लगे व्यक्ति प्राय समाज की भलाई की ही बाते करते है।	Persons in the teaching profession always talk about the welfare of the society.
109. अध्यापन बहुत ही प्रेरणाप्रद व्यवसाय है।	Teaching is a very stimulating profession.
110. अधिकारियो के विरुद्ध किसी भी छात्र को विद्रोह नही करना चाहिये।	No student should rebel against authorities.
111. कक्षा मे अध्यापक के पाठ दुहराने से कमजोर छात्र को अधिक लाभ होता है।	Weak students gain a lot through the revision of the lesson by the teacher in the class-room.
112 कक्षाध्यापन से प्राप्त ज्ञान उतना टिकाऊ नही होता जितना कि पर्यटन से प्राप्त ज्ञान है।	The knowledge acquired through class-room teaching is not as lasting as that acquired through excursions.
113. छात्र आजकल भी अन्धविश्वासी है।	Students are superstitious even to-day.
114. वह व्यक्ति जो विद्यार्थियो को शारीरिक दड नहीं देता है, कमजोर अध्यापक है।	One who does not inflict corporal punishment on students, is a poor teacher
115. किसी व्यक्ति को अपने जीवन मे अध्यापक बनने का स्वप्न भी नही देखना चाहिए।	One should not even dream of becoming a teacher in his life
116. छात्र प्राय कक्षा मे मूर्खतापूर्ण बातें करते है।	Students often talk nonsense in the class.
117. जब अध्यापक और विद्यार्थी के बीच मित्रतापूर्ण और उत्साहवर्धक सम्बन्ध होते है सीखने के लिए अच्छी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।	Good learning condition is created when the relations between the teacher and the pupil are warm and friendly.
118. शरारती छात्र को दड देने की अपेक्षा अच्छे छात्र को पुरस्कार देना उचित है।	It is better to reward a good pupil than to punish a mischievous one.
119. कक्षाध्यापन आधुनिक मनोवैज्ञानिक नियमो के अनुकूल नही है।	Class-room teaching is not in line with the modern developments in Psychology.
120. अध्यापन व्यवसाय लोगो को आलसी बनाता है।	Teaching profession makes people lazy.

पू० स० = पूर्ण सहमत, स = सहमत, अनि = अनिश्चय, अस = असहमत, पू० अस = पूर्ण असहमत ।

S A. = Strongly agrde, A. = Agree, U = Undecided, D = Disagree, S. D. = Strongly disagree.

121. अध्यापन व्यवसाय उतना बुरा नही है जितना कि लोग समझते है ।

Teaching profession is not as bad as people think it to be

122 कक्षाध्यापन छात्र-केन्द्रित न होकर पुस्तक-केन्द्रित होता है ।

Class-room teaching is book-centred rather than child-centred.

123. अध्यापक को शैक्षणिक दृष्टि से कमजोर छात्रो पर विशेष ध्यान देना चाहिए ।

Teacher should give special attention to educationally back-ward pupils

124. छात्रो को उनकी प्रगति से सूचित रखना उनके सीखने पर कोई प्रभाव नही डालता है ।

Keeping students informed of their progress has little effect on learning.

125. छात्रो को अत्यधिक स्वतन्त्रता कक्षा मे गड़बड उत्पन्न करती है ।

Increased freedom to the students creates confusion in class-room

126. अध्यापक जान-बूझकर कुछ छात्रो को अधिक अक प्रदान करते है ।

Teachers deliberately allot more marks to some students

127. आजकल अध्यापन व्यवसाय मे परिश्रम और लगन की भावना का अभाव है ।

To day hard work and a sense of dedication are lacking in the teaching profession

128. कक्षाध्यापन मे कक्षा को व्यवस्थित रखने पर अत्यधिक बल दिया जाता है ।

In class-room teaching there is too much stress on keeping order in the class-room

129. अध्यापक को बालको के लिये पाठ रोचक नही बनाना चाहिये ।

The teacher should not make the lesson interesting for children.

130. एक अच्छे शिक्षक को चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र इत्यादि की कोई आवश्यकता नही होती है ।

A good teacher has little need for charts, maps, diagrams and the like.

131. अधिकाश छात्र अध्यापको का आदर नही करते है ।

Most students do not respect the teachers.

132. अध्यापन अध्यापक को थका देता है ।

Teaching makes a teacher tired

133. अध्यापन व्यवसाय मानवता की सेवा का एक उत्तम साधन नही है ।

Teaching profession is not a good medium of serving humanity.

134. कक्षाध्यापन मे सभी छात्रो को अपनी योग्यता के अनुसार काम करने का अवसर नही मिलता है ।

In class-room teaching all students do not get an opportunity to work according to their capability.

135. हमें पाठ्यक्रम को बालक की योग्यता के अनुसार बनाना चाहिये न कि बालक को पाठ्यक्रम के अनुसार ।

We should fit the curriculum to the child and not the child to the curriculum.

अध्यापक अभिवृत्ति सूची

पू० स० = पूर्ण सहमत, स = सहमत, अनि = अनिश्चय, अस = असहमत, पू० अस = पूर्ण असहमत ।	**S. A. = Strongly agree, A = Agree, U = Undecided Disagree, S D = Strongly disagree.**
136. प्राय छात्रो को सिखाने का उत्तम ढंग यह है कि उन्हे पढने के लिये कुछ दिया जाय और उनसे कहा जाय कि उसमे से उनकी परीक्षा होगी ।	The best way to teach students is to assign them some reading and to tell them that they will be tested in it
137. छात्र पाठशाला के साफ और आकर्षक वातावरण मे गर्व अनुभव करते है ।	Students take pride in the neat and attractive environment of the school
138. समाज न ही अध्यापको की प्रशसा करता है और न ही उनका मूल्य स्वीकार करता है ।	The community neither appreciates teachers nor recognises their worth.
139 एक अध्यापक अपनी अल्पज्ञता खुले और स्पष्ट रूप मे स्वीकार करने के लिए स्वतन्त्र है ।	A teacher is free to admit his ignorance openly and frankly
140 छात्रो को अध्यापक के कथन से अपनी असहमति व्यक्त करने का अधिकार होना चाहिए ।	Students should have right to express dis-agreement with what the teacher says
141. आधुनिक शालाओ की एक कठिनाई यह है कि छात्रो की रुचियो के लिए प्राय अनुशासन की बलि दी जाती है ।	One of the difficulties with modern schools is that discipline is often sacrificed to the interest of students
142. कक्षाध्यापन मे क्रिया द्वारा सीखने के नियम को कार्यान्वित नहीं किया जा सकता ।	In class-room teaching the principle of "learning by doing" cannot be implemented
143. मैं अध्यापन के अलावा कोई दूसरा व्यवसाय नही चुनूंगा ।	I will not take up any other job except teaching.
144. कक्षाध्यापन मे एक शाब्दिक वर्णन को सशक्त करने के लिए श्यामपट को अधिकाधिक प्रयोग में लाया जा सकता है।	In class-room teaching one can use the black-board a great deal to emphasize a verbal description
145. यदि मुझे कोई नौकरी नहीं मिली तो मै अध्यापन व्यवसाय अपनाऊँगा ।	If I do not get any other job, I will join the teaching profession
146. अध्यापन प्रणालियों के सम्बन्ध मे सामान्यीकरण करना अत्यन्त कठिन है क्योकि प्रत्येक छात्र अपने-अपने ढग से अनुक्रिया करता है ।	It is very difficult to generalize about teaching procedures because each pupil responds differently.
147. अध्यापको को छात्रो से व्यवहार करने मे कठोर नही होना चाहिए ।	Teachers should not be strict in their dealings with students.
148. अध्यापक राष्ट्र के नेता है ।	Teachers are the leaders of the nation
149. यदि कोई छात्र गृह-कार्य नही समझता है तो यह सामान्यत: अध्यापक का दोष है ।	If a student does not understand an assignment, it is usually the fault of the teacher
150. अध्यापक का कार्य प्रमुखत विषय-वस्तु पढाना और समझाना ही है ।	A teacher's job is primarily one of teaching and explaining the subject matter.
धन्यवाद !	**Thanks !!!**

Printed at : Hind Printing Works, Bhadaini, Varanasi.

अध्यापक अभिवृत्ति सूची
TEACHER ATTITUDE INVENTORY
उत्तर - पत्र
ANSWER-SHEET

tement No.	पू.स. SA	स A	अनि U	अस. D	पू.अस. SD	Statement No	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD	Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD
1						26						51					
2						27						52					
3						28						53					
4						29						54					
5						30						55					
6						31						56					
7						32						57					
8						33						58					
9						34						59					
10						35						60					
11						36						61					
12						37						62					
13						38						63					
14						39						64					
15						40						65					
16						41						66					
17						42						67					
18						43						68					
19						44						69					
20						45						70					
21						46						71					
22						47						72					
23						48						73					
24						49						74					
25						50						75					

Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD	Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD	Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD
76						101						126					
77						102						127					
78						103						128					
79						104						129					
80						105						130					
81						106						131					
82						107						132					
83						108						133					
84						109						134					
85						110						135					
86						111						136					
87						112						137					
88						113						138					
89						114						139					
90						115						140					
91						116						141					
92						117						142					
93						118						143					
94						119						144					
95						120						145					
96						121						146					
97						122						147					
98						123						148					
99						124						149					
100						125						150					

I= II= III= IV= V= VI=

Total=

Examiner

जब तक कहा न जाय मत खोलें

DO NOT OPEN UNTIL TOLD TO DO SO

अध्यापक अभिवृत्ति सूची

TEACHER ATTITUDE INVENTORY

Dr. S. P Ahluwalia, Reader in Education

Principal Investigator, NCERT Research Project

Banaras Hindu University

VARANASI (India)

कृपया इस पुस्तिका पर कोई चिह्न न लगाएँ।

Please do not make any marks on this book-let

निर्देश :

इस सूची मे ९० कथन है जिनका उद्देश्य अध्यापको की व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्तियो को ज्ञात करना है । ये अभिवृत्तियाँ कैसी होनी चाहिये इस पर पर्याप्त मतभेद है; अतएव इन कथनो के कोई पूर्व-निर्धारित सही या गलत उत्तर नही है । इस सूची मे केवल यह जानने का प्रयत्न किया जा रहा है कि इन कथनो के प्रति आपके व्यक्तिगत विचार या भाव क्या है । प्रत्येक कथन को पढिये और निर्णय कीजिये कि आपका इसके सम्बन्ध मे क्या विचार या अनुभव है । तदुपरान्त अपना उत्तर दिये हुये उत्तर पत्र पर यथास्थान लिखे ।

उत्तर देते समय किसी विशिष्ट परिस्थिति के स्थान पर केवल सामान्य परिस्थिति के सम्बन्ध मे सोचें । उत्तर देने के लिए समय का कोई बन्धन नही है, किन्तु जितनी शीघ्रता से हो सके काम करे ।

कृपया प्रत्येक कथन का प्रत्युत्तर दीजिए ।

Directions :

This inventory consists of 90 statements aimed to identify the professional attitudes of the teachers There is considerable disagreement as to what these attitudes should be, therefore there are no **right** or **wrong** answers. What is wanted is your own individual feeling about the statements Read each statement and decide how **you** feel about it. Then mark your answer in the space provided on the answer sheet.

Think in terms of the general situation rather than specific ones There is no time limit but work as rapidly as you can

Please respond to every item.

उत्तर-पत्र पर उत्तर लिखने की विधि अगले पृष्ठ पर समझाई गई है ।

The method of recording the response on the answer-sheet has been explained on the next page.

उत्तर लिखने की विधि :

Method of recording the response :

उत्तर लिखने की विधि	पू० स० SA	स० A	अनि० U	अस० D	पू०अस० SD	Method of recording the response
यदि आप दिये हुए कथन से पूर्ण सहमत है तो पू० स० के नीचे रिक्त स्थान पर सही का चिह्न (√) लगा दे।	☑	☐	☐	☐	☐	If you **strongly agree**, put a tick (√) mark in the space under **S. A.**
यदि आप दिए हुए कथन से सहमत हैं तो स० के नीचे रिक्त स्थान पर सही का चिह्न (√) लगा दें।	☐	☑	☐	☐	☐	If you **agree**, put a tick (√) mark in the space under **A.**
यदि आप अनिश्चित या द्विविधा मे हो तो अनि० के नीचे रिक्त स्थान पर सही का चिह्न (√) लगा दे।	☐	☐	☑	☐	☐	If you are **undecided** or **uncertain**, put a tick (√) mark in the space under U.
यदि आप दिये हुये कथन से असहमत हैं तो अस० के नीचे रिक्त स्थान पर सही का चिह्न (√) लगा दे।	☐	☐	☐	☑	☐	If you **disagree**, put a tick (√) mark in the space under **D.**
यदि आप दिए हुए कथन से पूर्ण असहमत है तो पू० अस० के नीचे रिक्त स्थान पर सही का चिह्न (√) लगा दे।	☐	☐	☐	☐	☑	If you **strongly disagree**, put a tick (√) mark in the space under **S. D.**

स्मरण रहे इस पुस्तिका पर आपको कोई चिह्न नहीं लगाना है।

Remember you have not to make any mark on this book-let.

अब आप प्रत्येक कथन को ध्यानपूर्वक पढ़ें और उत्तर-पत्र पर अपने उत्तर अंकित करें।

Now read each statement carefully and record your response on the answer-sheet.

कृपया पन्ना उलटिए।

Please turn over.

जब तक कहा न जाय मत खोलें।

Do Not Open Until Told To Do So

पू० स० = पूर्ण सहमत, स० = सहमत, अनि० = अनिश्चय, अस० = असहमत, पू० अस० = पूर्ण असहमत ।	**S A = Strongly agree, A = Agree, U = Undecided D = Disagree, S D = Strongly disagree.**
1. यदि कालेज मे प्रवेश पाने योग्य मेरा पुत्र होता, तो मैं उसे अध्यापक बनने के लिए प्रोत्साहित करता ।	If I had a son entering college I would have encouraged him to become a teacher.
2. कक्षा मे श्मशान (कब्रिस्तान) की सी शान्ति नही होनी चाहिए ।	A classroom should not be as quiet as graveyard.
3. अध्यापक को छात्रो के व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए ।	Students' behaviour should be taken into consideration by the teacher
4. कक्षा मे प्रश्न पूछने के लिए स्वतन्त्रता न होने से छात्र अधिक परिश्रम करते है ।	Students work hard if they are not given freedom to ask questions in the class.
5 छात्र सामान्यतः निष्ठावान होते है ।	Students are generally sincere
6. अध्यापक प्रत्येक व्यक्ति का आदर करता है ।	A teacher respects everybody
7. छात्रो की वैयक्तिक विभिन्नता पर अधिक ध्यान नही दिया जाना चाहिए ।	Individual differences among the students should not be paid much attention to
8. अध्यापन द्वारा व्यक्तित्व और चरित्र का विकास होता है ।	Teaching develops personality and character
9. कक्षा की पढाई छात्रो को अनुशासित बनाती है ।	Class-room teaching makes the students disciplined.
10. छात्रो को अपनी इच्छानुसार सीखने की स्वतन्त्रता नही होनी चाहिए ।	Freedom should not be given to the students to learn according to their own desire.
11. कक्षा मे छात्रो को अपने विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिये ।	Pupils should be given freedom to express their views in the class
12. अध्यापक अपनी बात कहने के लिए स्वतन्त्र नही है ।	Teachers are not free to express their views.
13 जो व्यक्ति अन्य व्यवसायो मे असफल होते है वे ही प्राय: अध्यापक बनते हैं ।	Those who fail in other fields of work usually become teachers.
14. कक्षा में अध्यापन कार्य सरल हो जाता है ।	Teaching work becomes easy in the class-room
15. छात्र दण्ड की अपेक्षा प्यार से अधिक सीखते है ।	Students learn more by love than by punishment.

पू० स० = पूर्ण सहमत, स० = सहमत, अनि० = अनिश्चय, अस० = असहमत, पू० अस० = पूर्ण असहमत ।	S A=Strongly agree, A=Agree, U=Undecided, D=Disagree, S D=Strongly disagree.
16. छात्रों को कक्षा मे लज्जित नही करना चाहिए ।	Pupils should not be let down before the class.
17. कक्षा-शिक्षण से सामाजिक वातावरण उत्पन्न होता है ।	Class room teaching begets social atmosphere
18. छात्र एक दूसरे से हिलमिल कर नही रहते है ।	Students do not live together in harmony with one another
19. जब कोई व्यक्ति किसी अध्यापक को देखता है तो उसे उस पर हँसी आती है ।	When one sees a teacher he feels like laughing at him
20. कोई भी व्यवसाय अध्यापन से श्रेष्ठ नही है ।	No occupation is better than the teaching profession
21. छात्र क्रिया द्वारा सर्वाधिक सीखते है ।	Students learn best by doing.
22. आजकल छात्र अध्यापकों का कहना नही मानते है ।	Now a-days students do not obey their teachers.
23. अध्यापक की बातो पर सभी लोग ध्यान देते है ।	Every body pays attention to what a teacher says
24. अध्यापक शेखी बघारने वाले होते है ।	Teachers are boastful
25. विद्यालय में छात्र संघ नही होना चाहिये ।	There should be no students' union in school.
26. अध्यापक राष्ट्र के नैतिक मानको का निर्धारण नही करते है ।	Teachers do not determine the moral standards of a nation
27. छात्रों का स्वास्थ्य विद्यालय का एक महत्वपूर्ण दायित्व है ।	Students' health is an important responsibility of the school
28. पढाने की एक ही विधि सभी छात्रो के लिए उपयुक्त नही है ।	Just one method of teaching is not suitable for all the students.
29. छात्र केवल विद्यालय मे ही अनुशासन का ध्यान रखते है ।	Students observe discipline only in the school.
30. अधिकाश अध्यापक लालची होते है ।	Most of the teachers are greedy.

पू० स० = पूर्ण सहमत, स० = सहमत, अनि० = अनिश्चय, अस० = असहमत, पू० अस० = पूर्ण असहमत ।	S A = Strongly agree, A = Agree, U = Undecided, D = Disagree, S D = Strongly disagree.
31. राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति छात्र सामान्यत उदासीन रहते है ।	Students are generally disinterested in national problems.
32. सामूहिक कार्यो से छात्रो मे सहयोग की भावना उत्पन्न नही होती है ।	Group activities do not create a sense of co-operation among the students.
33. अध्यापन व्यवसाय का भविष्य उज्ज्वल है ।	Teaching profession has a bright future.
34. अध्यापन व्यवसाय केवल आरम्भ मे ही रोचक लगता है ।	Teaching profession appears to be interesting only in the beginning.
35. कक्षाध्यापन से प्रायः तीव्र और प्रतिभाशाली छात्रो की हानि होती है ।	Bright and talented students often suffer in class room teaching.
36. विद्यालय के आस-पास के वातावरण का सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव पडता है ।	The surroundings of the school have an impact on the learning process.
37. छात्रो को विचारने की स्वतन्त्रता नही देनी चाहिये ।	Students should not be given freedom to think
38. कक्षाध्यापन से छात्रों मे आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न नहीं होती है ।	Class-room teaching does not inculcate a feeling of self-confidence in the students.
39. शंका समाधान न होने पर छात्र असन्तुष्ट रहते है ।	Pupils remain unsatisfied if their doubts are not clarified.
40. लोग अध्यापको को नीची नजर से नहीं देखते है ।	People do not look down upon teachers.
41. मुझे यह कहने में गर्व होता है कि मै अध्यापन-व्यवसाय मे हूँ ।	I take pride in telling that I belong to the teaching profession.
42. कक्षाध्यापन छात्रो को परस्पर आदर करने के लिये प्रेरित करता है ।	Class-room teaching makes students respect each other.
43. छात्रों की विशेष योग्यता पर ध्यान न देने से उनकी प्रतिभा छिपी रहती है ।	The talents of students remain hidden if due attention is not paid to their special abilities.
44. छात्रो को अध्यापक से आज्ञा लेकर ही कक्षा मे प्रवेश करना चाहिए ।	Students should enter the class only after obtaining permission from the teacher.
45. अध्यापक विनोदी स्वभाव के नही होते हैं ।	Teachers do not have a sense of humour.

पू० स० = पूर्ण सहमत, स० = सहमत, अनि० = अनिश्चय, अस० = असहमत, पू० असं० = पूर्ण असहमत ।	S A = Strongly agree, A = Agree, U = Undecided, D = Disagree, S D = Strongly disagree.
46. अध्यापन व्यवसाय में लाभ की अपेक्षा हानियाँ अधिक है ।	There are more disadvantages than advantages in the teaching profession
47. कक्षाध्यापन से सीखने की इच्छा प्रबल होती है ।	Class room teaching strengthens the desire to learn.
48. मैं केवल माता-पिता की इच्छा के कारण ही अध्यापन-व्यवसाय अपनाना चाहता हूँ ।	I want to take up the teaching profession only because my parents wish so.
49 छात्रो के लिये पुस्तके सर्वेसर्वा नही है ।	Books are not all in all for students.
50. छात्र तभी अच्छे नागरिक बन सकते है, जब अध्यापक अच्छे अध्यापक हो ।	Students can become good citizens only when teachers are good teachers
51. जब कभी शरारती छात्र पीटे जाते है, मुझे अच्छा लगता है ।	I get pleased when mischievous students get a beating
52. कहने के अनुसार कार्य करने वाले व्यक्ति मे अध्यापक के गुण होते है ।	One who does according to what he says, has the qualities of a teacher.
53. कक्षाध्यापन मे परिवर्तन की आवश्यकता है ।	Class room teaching needs a change
54. छात्रो द्वारा किये गये विभिन्न कार्यो का उनके अन्तिम मूल्यांकन मे कोई स्थान नहीं होना चाहिये ।	Different activities performed by the students should not have a place in their final evaluation
55. सीखने के लिए छात्र और अध्यापक मे अच्छे सम्बन्धो का होना जरूरी है ।	Good relationship between the teacher and the taught is essential for learning.
56 कक्षा मे छात्रों को प्रश्न पूछने की छूट नहीं होनी चाहिए ।	Students should not be allowed to ask questions in the class.
57. अध्यापक प्रखर बुद्धि वाले छात्रो को सन्तुष्ट नही कर पाते है ।	Teachers cannot satisfy the intellectually superior students.
58. छात्र परीक्षा में पास होने के लिए कुछ भी कर सकते हैं ।	Students can do anything in order to get through the examination.
59 कक्षाध्यापन मे अध्यापक और छात्रो के बीच एक दूरी रहती है ।	There is a distance between teacher and students in class-room teaching.
60. अध्यापन व्यवसाय मे रहना अभिशाप है ।	It is a curse to remain in the teaching profession.

पू० स० = पूर्ण सहमत, स० = सहमत, अनि० = अनिश्चय, असह० = असहमत, पू० असह० = पूर्ण असहमत ।

S A = Stronly agree, A = Agree, U = Undecided, D = Disagree, S D = Strongly disagree.

---

61. कक्षाध्यापन मे पीछे बैठने वालो पर उचित ध्यान नही दिया जाता ।

Back-benchers do not get proper attention in class-room teaching

62. यह अच्छा है कि अब छात्रो की अभिरुचि को महत्व दिया जाता है ।

It is good that now a-days aptitude of students is given importance

63. पुराने समय की अध्यापन विधियाँ आज की विधियो से अच्छी थी ।

Teaching methods of the past were better than those of to-day

64. गृह-कार्य देते समय छात्रो की योग्यता का ध्यान रखना चाहिये ।

While assigning home-task pupils' ability should be taken into consideration.

65. कक्षाध्यापन मे विद्यार्थी का स्थान प्रमुख नही होना चाहिये ।

The place of the student should not be supreme in class-room teaching.

66. अध्यापन बहुत ही प्रेरणाप्रद व्यवसाय है ।

Teaching is a very stimulating profession.

67. कक्षा मे अध्यापक के पाठ दुहराने से कमजोर छात्रो को अधिक लाभ होता है ।

Weak students gain a lot through the revision of the lesson by the teacher in the class-room.

68. वह व्यक्ति जो छात्रो को शारीरिक दड नही देता है अयोग्य अध्यापक है ।

One who does not inflict corporal punishment on students, is a poor teacher.

69. किसी व्यक्ति को अपने जीवन मे अध्यापक बनने का स्वप्न भी नही देखना चाहिये ।

One should not even dream of becoming a teacher in his life.

70 छात्र प्राय कक्षा मे मूर्खतापूर्ण बाते करते है ।

Students often talk nonsense in the class.

71 जब अध्यापक और विद्यार्थी के बीच मित्रता और उत्साहपूर्ण सम्बन्ध होते है सीखने के लिए अच्छी स्थिति उत्पन्न हो जाती है ।

Good learning condition is created when the relations between the teacher and the pupil are warm and friendly.

72. अध्यापन व्यवसाय लोगो को आलसी बनाता है ।

Teaching profession makes people lazy.

73 कक्षाध्यापन छात्र-केन्द्रित न होकर पुस्तक-केन्द्रित होता है ।

Class-room teaching is book-centred rather than pupil-centred.

74. छात्रों को उनकी प्रगति से सूचित रखना उनके सीखने पर कोई प्रभाव नहीं डालता है ।

Keeping students informed of their progress has little effect on learning

75. अध्यापक को बालको के लिए पाठ रोचक नही बनाना चाहिये ।

The teacher should not make the lesson interesting for children.

पू० स० = पूर्ण सहमत, स० = सहमत, अनि० = अनिश्चय, अस० = असहमत, पू० अस० = पूर्ण असहमत ।

S A=Strongly agree, A=Agree, U=Undecided, D=Disagree, S D=Strongly disagree

76 एक अच्छे शिक्षक को चित्र, मानचित्र, रेखाचित्र, इत्यादि की कोई आवश्यकता नहीं होती है ।	A good teacher has little need for charts, maps, diagrams and the like
77. अधिकांश छात्र अध्यापकों का आदर नहीं करते हैं ।	Most students do not respect the teachers.
78. अध्यापन अध्यापक को थका देता है ।	Teaching makes a teacher tired
79. अध्यापन व्यवसाय मानवता की सेवा का एक अच्छा माध्यम नहीं है ।	Teaching profession is not a good medium of serving humanity.
80 हमें पाठ्य-क्रम को छात्र की योग्यता के अनुसार बनाना चाहिये न कि छात्र को पाठ्य-क्रम के अनुसार ।	We should fit the curriculum to the student and not the student to the curriculum
81. छात्र विद्यालय के साफ और आकर्षक वातावरण में गर्व अनुभव करते हैं ।	Students take pride in the neat and attractive environment of the school.
82. छात्रों को अध्यापक के कथन से अपनी असहमति व्यक्त करने का अधिकार होना चाहिये ।	Students should have right to express dis-agreement with what the teacher says.
83 आधुनिक शालाओं की एक कठिनाई यह है कि छात्रों की रुचियों के लिए प्राय: अनुशासन की बलि दी जाती है ।	One of the difficulties with modern schools is that discipline is often sacrificed to the interest of students.
84 कक्षाध्यापन में क्रिया द्वारा सीखने के नियम को कार्यान्वित नहीं किया जा सकता ।	In class-room teaching the principle of "learning by doing" cannot be implemented.
85 मैं अध्यापन के अलावा कोई दूसरा व्यवसाय नहीं चुनूंगा ।	I will not take up any other job except teaching
86. यदि मुझे कोई नौकरी नहीं मिली तो मैं अध्यापन व्यवसाय अपनाऊँगा ।	If I do not get any other job, I will join the teaching profession
87. अध्यापकों को छात्रों से व्यवहार करने में कठोर नहीं होना चाहिए ।	Teachers should not be strict in their dealings with students
88. अध्यापक राष्ट्र के नेता हैं ।	Teachers are the leaders of the nation.
89. यदि कोई छात्र गृह कार्य नहीं समझता है तो यह सामान्यतः अध्यापक का दोष है ।	If a student does not understand an assignment, it is usually the fault of the teacher.
90. अध्यापक का कार्य प्रमुखत. विषय-वस्तु पढ़ाना और समझाना ही है ।	A teacher's job is primarily one of teaching and explaining the subject matter.

क्या आपने प्रत्येक कथन का प्रत्युत्तर दिया है ?
कृपया जाँच लीजिए । धन्यवाद !

Have you responded to every statement?
Please check. Thanks!

Hind Printing Works, Bhadaini, Varanasi.

उत्तरदाता विषयी सामान्य जानकारी

GENERAL INFORMATION ABOUT THE RESPONDENT

निर्देश :

इस पत्र में ६ प्रश्न है। इनका उद्देश्य आपके विषय मे कुछ जानकारी प्राप्त करना है। कृपया इनको ध्यान से पढें और अपने उत्तर उपयुक्त स्थान पर प्रत्येक प्रश्न के किसी एक क्रमाक पर सही का चिह्न (√) लगाकर दर्शाएँ।

अगर आपका उत्तर दिए गए उत्तरो से भिन्न है तो उसे कृपया इसमे दिए गए रिक्त स्थान पर सुन्दर लिपि मे लिखे।

प्रश्न :

१— आपकी आयु क्या है ?

(अ) २० वर्ष से कम

(ब) २१ से ३० वर्ष के बीच

(स) ३१ से ४० वर्ष के बीच

(द) ४१ वर्ष से अधिक

२— आप कौन है ?

(अ) स्त्री

(ब) पुरुष

३— आप किस प्रकार के स्कूल/कालेज मे $\frac{\text{पढ़ते}}{\text{कार्य करते}}$ है ?

(अ) (i) राजकीय

(ii) राजकीय सहायता प्राप्त

(iii) अमान्य

(iv) ....

(ब) (i) उच्च विद्यालय/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

(ii) इन्टर कालेज

(iii) डिग्री कालेज

(iv) पोस्ट ग्रेजुएट कालेज

(v) विश्वविद्यालय विभाग

Directions :

There are 6 items on this sheet. They seek general information about you Please read them carefully and record your response on this paper by putting a tick (√) mark on the appropriate place against the respective number.

If your response is different from the given alternatives, please write it legibly in the blank space.

Questions :

1—What is your age ?

a. Less than 20 years

b Between 21 and 30 years

c Between 31 and 40 years

d. More than 41 years

2—What is your sex ?

a Female

b Male

3—In what type of School / College $\frac{\text{do you read}}{\text{do you serve}}$?

a (i) Government

(ii) Government-aided

(iii) Unrecognised

(iv) ....

b (i) High School / Higher Secondary School

(ii) Intermediate College

(iii) Degree College

(iv) Post-Graduate College

(v) University Department

४—आप कितने वर्षों से कार्य कर रहे हैं (अध्यापन अनुभव) ?

(अ) कोई अनुभव नहीं

(ब) तीन वर्ष से कम

(स) ४ से ९ के बीच

(द) १० से १५ वर्ष के बीच

(य) १६ वर्ष से अधिक

4—For how many years have you been in service (Teaching experience) ?

a. No experience

b. Less than three years

c. Between 4 to 9 years

d. Between 10 to 15 years

e. More than 16 years

५—क्या आप प्रशिक्षित (बी०टी० / बी०एड० डिग्री प्राप्त) है ?

(अ) अप्रशिक्षित

(ब) प्रशिक्षण आधीन

(स) १९४७ से पूर्व प्रशिक्षित

(द) १९४७ के पश्चात् प्रशिक्षित

5—Are you trained (hold a training degree, B.T. / B. Ed.) ?

a. Untrained

b. Under training

c. Trained before 1947

d. Trained after 1947

६—आपका पद क्या है ?

(१) जिला शिक्षा अधिकारी / सहायक विद्यालय निरीक्षक अथवा अन्य कोई प्रशासक

(२) प्राचार्य / मुख्याध्यापक

(३) अध्यापक

(i) विशेष उत्तरदायित्व रहित

(ii) विशेष उत्तरदायित्व सहित

(अ) कक्षाध्यापक

(ब) खेल अध्यापक

(स) पाठ्यान्तर क्रिया-कलाप प्रभारी

(द) अन्य कोई (कृपया लिखे) ------- -------

6—What is your designation ?

1. District Education Officer / Asstt. Inspector of Schools or any other Administrator

2. Principal / Headmaster

3. Teacher

(i) With no special responsibility

(ii) With special responsibility

a. Class teacher

b. Games and sports teacher

c. Extra-Curricular activities incharge

d. Any other (Please specify) . . ..

धन्यवाद !

Thanks !

अब आप **अध्यापक अभिवृत्ति सूची** परीक्षण-पत्रिका के प्रथम दो पृष्ठों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

Now read carefully the first two pages of the **Teacher Attitude Inventory** test-book-let.

Sub-Scale I : Attitude Toward Teaching Profession

क्रमांक ....Serial No.

अध्यापक अभिवृत्ति सूची — TEACHER ATTITUDE INVENTORY

उत्तर - पत्र — ANSWER - SHEET

Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD	Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD	Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD
1	☐	☐	☐	☐	☐	31	☐	☐	☐	☐	☐	61	☐	☐	☐	☐	☐
2	☐	☐	☐	☐	☐	32	☐	☐	☐	☐	☐	62	☐	☐	☐	☐	☐
3	☐	☐	☐	☐	☐	33	☐	☐	☐	☐	☐	63	☐	☐	☐	☐	☐
4	☐	☐	☐	☐	☐	34	☐	☐	☐	☐	☐	64	☐	☐	☐	☐	☐
5	☐	☐	☐	☐	☐	35	☐	☐	☐	☐	☐	65	☐	☐	☐	☐	☐
6	☐	☐	☐	☐	☐	36	☐	☐	☐	☐	☐	66	☐	☐	☐	☐	☐
7	☐	☐	☐	☐	☐	37	☐	☐	☐	☐	☐	67	☐	☐	☐	☐	☐
8	☐	☐	☐	☐	☐	38	☐	☐	☐	☐	☐	68	☐	☐	☐	☐	☐
9	☐	☐	☐	☐	☐	39	☐	☐	☐	☐	☐	69	☐	☐	☐	☐	☐
10	☐	☐	☐	☐	☐	40	☐	☐	☐	☐	☐	70	☐	☐	☐	☐	☐
11	☐	☐	☐	☐	☐	41	☐	☐	☐	☐	☐	71	☐	☐	☐	☐	☐
12	☐	☐	☐	☐	☐	42	☐	☐	☐	☐	☐	72	☐	☐	☐	☐	☐
13	☐	☐	☐	☐	☐	43	☐	☐	☐	☐	☐	73	☐	☐	☐	☐	☐
14	☐	☐	☐	☐	☐	44	☐	☐	☐	☐	☐	74	☐	☐	☐	☐	☐
15	☐	☐	☐	☐	☐	45	☐	☐	☐	☐	☐	75	☐	☐	☐	☐	☐
16	☐	☐	☐	☐	☐	46	☐	☐	☐	☐	☐	76	☐	☐	☐	☐	☐
17	☐	☐	☐	☐	☐	47	☐	☐	☐	☐	☐	77	☐	☐	☐	☐	☐
18	☐	☐	☐	☐	☐	48	☐	☐	☐	☐	☐	78	☐	☐	☐	☐	☐
19	☐	☐	☐	☐	☐	49	☐	☐	☐	☐	☐	79	☐	☐	☐	☐	☐
20	☐	☐	☐	☐	☐	50	☐	☐	☐	☐	☐	80	☐	☐	☐	☐	☐
21	☐	☐	☐	☐	☐	51	☐	☐	☐	☐	☐	81	☐	☐	☐	☐	☐
22	☐	☐	☐	☐	☐	52	☐	☐	☐	☐	☐	82	☐	☐	☐	☐	☐
23	☐	☐	☐	☐	☐	53	☐	☐	☐	☐	☐	83	☐	☐	☐	☐	☐
24	☐	☐	☐	☐	☐	54	☐	☐	☐	☐	☐	84	☐	☐	☐	☐	☐
25	☐	☐	☐	☐	☐	55	☐	☐	☐	☐	☐	85	☐	☐	☐	☐	☐
26	☐	☐	☐	☐	☐	56	☐	☐	☐	☐	☐	86	☐	☐	☐	☐	☐
27	☐	☐	☐	☐	☐	57	☐	☐	☐	☐	☐	87	☐	☐	☐	☐	☐
28	☐	☐	☐	☐	☐	58	☐	☐	☐	☐	☐	88	☐	☐	☐	☐	☐
29	☐	☐	☐	☐	☐	59	☐	☐	☐	☐	☐	89	☐	☐	☐	☐	☐
30	☐	☐	☐	☐	☐	60	☐	☐	☐	☐	☐	90	☐	☐	☐	☐	☐

I = II = III = IV = V = VI =

महायोग (Total) = परीक्षक (Examiner) ....

Printed at : Hind Printing Works, Bhadaini, Varanasi.

Sub-Scale I : Attitude Toward Teaching Profession

उपमापनी १ : अध्यापन व्यवसाय सम्बन्धी अभिवृत्ति

अंकन कुंजी

Scoring Key

अध्यापक अभिवृत्ति सूची

TEACHER ATTITUDE INVENTORY

Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू अस. SD
1	4	3	2	1	0
8	4	3	2	1	0
13	0	1	2	3	4
20	4	3	2	1	0
33	4	3	2	1	0
34	0	1	2	3	4
41	4	3	2	1	0
46	0	1	2	3	4
48	0	1	2	3	4
60	0	1	2	3	4
66	4	3	2	1	0
72	0	1	2	3	4
79	0	1	2	3	4
85	4	3	2	1	0
86	0	1	2	3	4

I =

Sub-Scale II : Attitude Toward Class-room Teaching

उपमापनी २ : कक्षाध्यापन सम्बन्धी अभिवृत्ति

अंकन कुंजी
अध्यापक अभिवृत्ति सूची

Scoring Key
TEACHER ATTITUDE INVENTORY

Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD
2	4	3	2	1	0
9	4	3	2	1	0
14	4	3	2	1	0
17	4	3	2	1	0
35	0	1	2	3	4
38	0	1	2	3	4
42	4	3	2	1	0
47	4	3	2	1	0
53	4	3	2	1	0
59	0	1	2	3	4
61	0	1	2	3	4
65	0	1	2	3	4
67	4	3	2	1	0
73	0	1	2	3	4
84	0	1	2	3	4

II = [ ]

Sub-Scale III : Attitude Toward Pupil-Centred Practices

उपमापनी ३ : छात्र केन्द्रित व्यवहारों सम्बन्धी अभिवृत्ति

अंकन कुंजी
Scoring Key

अध्यापक अभिवृत्ति सूची
TEACHER ATTITUDE INVENTORY

Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस D	पू.अस. SD
3	4	3	2	1	0
11	4	3	2	1	0
16	4	3	2	1	0
21	4	3	2	1	0
25	0	1	2	3	4
27	4	3	2	1	0

Statement No	पू.स SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू अस. SD
39	4	3	2	1	0
49	4	3	2	1	0
54	0	1	2	3	4

Statement No	पू स SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD
62	4	3	2	1	0
64	4	3	2	1	0
75	0	1	2	3	4
80	4	3	2	1	0
83	0	1	2	3	4
90	0	1	2	3	4

III =

Sub-Scale IV : Attitude Toward Educational Process

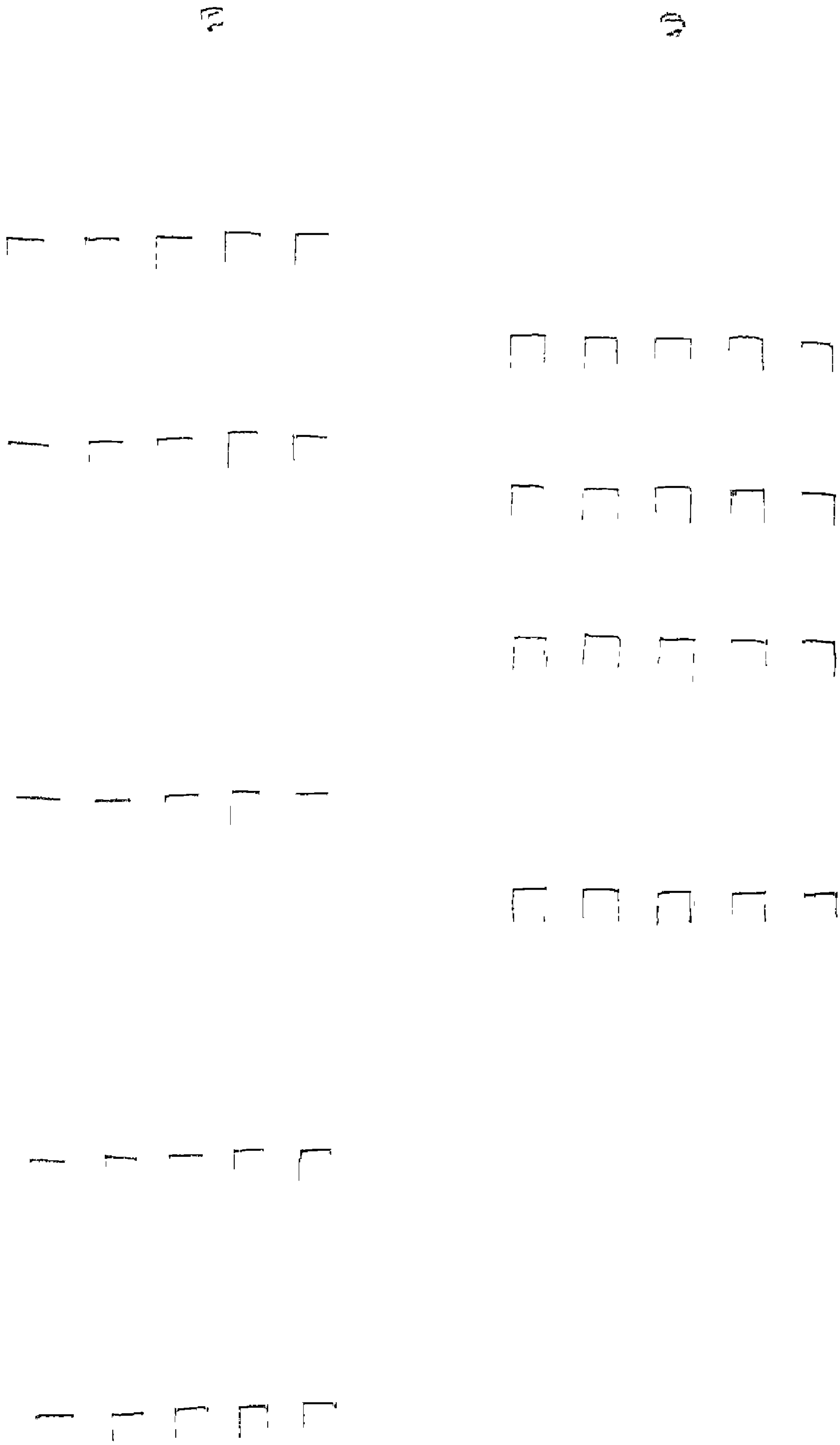
उपमापनी ४ : शैक्षिक प्रक्रिया सम्बन्धी अभिवृत्ति

अंकन कुंजी
Scoring Key

अध्यापक अभिवृत्ति सूची
TEACHER ATTITUDE INVENTORY

Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस D	पू.अस. SD
4	0	1	2	3	4
7	0	1	2	3	4
10	0	1	2	3	4
15	4	3	2	1	0
28	4	3	2	1	0
32	0	1	2	3	4
36	4	3	2	1	0
43	4	3	2	1	0
50	4	3	2	1	0
55	4	3	2	1	0
63	0	1	2	3	4
71	4	3	2	1	0
74	0	1	2	3	4
76	0	1	2	3	4
87	4	3	2	1	0

IV =



Sub-Scale V : Attitude Toward Pupils

उपमापनी ५ : छात्रों सम्बन्धी अभिवृत्ति

अंकन कुंजी
अध्यापक अभिवृत्ति सूची

Scoring Key
TEACHER ATTITUDE INVENTORY

Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD
5	4	3	2	1	0
18	0	1	2	3	4
22	0	1	2	3	4
29	0	1	2	3	4
31	0	1	2	3	4
37	0	1	2	3	4
44	4	3	2	1	0
51	0	1	2	3	4
56	0	1	2	3	4
58	0	1	2	3	4
70	0	1	2	3	4
77	0	1	2	3	4
81	4	3	2	1	0
82	4	3	2	1	0
89	4	3	2	1	0

V = [ ]

Sub-Scale VI : Attitude Toward Teachers

उपमापनी ६ : अध्यापकों सम्बन्धी अभिवृत्ति

अंकन कुंजी
अध्यापक अभिवृत्ति सूची

Scoring Key
TEACHER ATTITUDE INVENTORY

Statement No.	पू.स. SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD
	4	3	2	1	0
6					
	0	1	2	3	4
12					
	0	1	2	3	4
19					
	4	3	2	1	0
23					
24					
	0	1	2	3	4
26					
	0	1	2	3	4
	0	1	2	3	4
30					

Statement No	पू.स SA	स A	अनि. U	अस D	पू.अस. SD
	4	3	2	1	0
40					
	0	1	2	3	4
45					
	4	3	2	1	0
52					
	0	1	2	3	4
57					

Statement No	पू स SA	स. A	अनि. U	अस. D	पू.अस. SD
	0	1	2	3	4
68					
69					
	0	1	2	3	4
	0	1	2	3	4
78					
	4	3	2	1	0
88					

VI =

M A N U A L
O F
T E A C H E R A T T I T U D E I N V E N T O R Y

Dr. S. P. Ahluwalia
Reader in Education and
Principal Investigator
NCERT Research Project

Department of Education
Faculty of Education
Banaras Hindu University
V A R A N A S I

1971

The quantitative expansion and qualitative improvement of secondary education has raised problems of selection of right type of teachers and em rieding programmes of teacher-preparation. This necessitates not only improving the knowledge and teaching competence of a teacher but also to inculcate in him healthy professional attitudes and desirable teacher-like qualities.

Teacher training institutions have initiated perhaps half - heartedly some schemes for stirring and stimulating the student - teachers who enter their portals for receiving professional training. It is a good augury that educationists and educational planners in India have started realising that only securing enough teachers will not do, as what is equally important is found the secondary schools cannot deliver the goods that are expected of them. Fundamentally, the success of secondary education does not depend either on the definition of aims, statement of objectives, or discussion of subject values but on the academic and professional preparation of teachers.

For the professional preparations of teachers the study of attitudes held by them is very important. How a teacher performs his duty as a teacher is dependent, to a great extent, on his attitudes, values, and beliefs. A positive favourable attitude makes the work not only easier but also more

satisfying and pro essionally rewarding. A negative unfavourable attitude makes the teaching task harder, more tedious, and unpleasant.

In addition a teacher's attitudes not only affect his behaviour in the class-room but also influence the behaviour of his students. Moreover effective and productive learning on the part of pupils can be achieved by employing teachers with desirable attitudes or by shaping their attitudes in the desired directions.

Hence, it appears relevant to develop a dependable multi-dimensional attitude inventory for measuring attitudes of prospective and practising teachers towards teaching profession and its allied aspects. This newly developed inventory, it is believed, is a worthwhile tool for the training institutions not only for diagnostic and prognostic purposes but also for the possibility of its use in changing the attitudes of the teachers through a positive programme of inculcating favourable attitudes in teacher-trainees by changing the organisational climate of training institutionsand by enriching the social emotional climate of their class - rooms.

D E S C R I P T I O N

This inventory is a 90 - item Likert instrument consisting of six sub - scales. These sub - scales were developed by the Likert summated ratings procedure. Each scale has 15 statements that pertain to a particular aspect of prospective

and practising teachers' professional attitudes. The six aspects dealt within the inventory are :

Attitude towards : -

(i) Teaching Profession

(ii) Class-room Teaching

(iii) Child-centred Practices

(iv) Educational Process

(v) Pupils

(vi) Teachers

The inventory has been constructed and standardized by Dr. S. P. Ahluwalia, Reader in Education, Banaras Hindu University and his associates under a project of the National Council for Educational Research and Training, New Delhi. The form of the items is akin to the usual Likert format. The items were selected from a longer list by a scientific statistical procedure. The items in the final sub-scales were selected by item analysis.

Originally 300 attitude statements, 50 on each sub-scale were collected from diverse sources. After careful discussions and cautious deliberations in two seminars of educators, teacher - educators, measurement specialists and persons know-ledgeable in the fields of Education, Psychology and Sociology, weak and poor items were either modified and improved or dropped. The selected 180 attitude, statements, 30 on each sub-scale were discussed in a small group (N = 25) of student-teachers and teachers. On the basis of their judgement and reasoning only 150 attitude statements, 25 on

each sub-scale, were retained for inclusion in the preliminary form of the Teacher Attitude Inventory (T A I) for wide scale try - out.

The answer-sheets were scored and arranged in descending order. The upper 27 % and lower 27 % of cases were taken to find out the t - values of each attitude statement by using the formula given by Edwards (1959, p.152).

Keeping the rationale of attitude scale construction in mind 90 psychometrically " good " attitude statements, 15 on each sub-scale, were selected to constitute the final form of the T A I . Out of 90 items 53 are in positive declarative form and 31 of them are in negative form. Again 43 items are meant to assess attitude in favourable direction and 47 in unfavourable direction. Thus the favourable - unfavourable continuum adequately measures the aforesaid six selected areas.

The T A I consists of a bilingual (English and Hindi) re-usable test-booklet with a separate answer-sheet.

Table 1.1 shows the total number of favourable and unfavourable items and their distribution in each sub-scale.

S U B J E C T S

The try-out sample consisted of 1402 (student teachers) prospective teachers, students of B.Ed. and L.T classes of different secondary teacher training colleges of the five Hindi-speaking States viz. Uttar Pradesh, Haryana, Madhya Pradesh, Rajasthan and Bihar. Table 1.2 gives at a glance information about the try - out sample.

The norming sample consisted of 2139 student-teachers studying in the secondary teacher training institutions having courses leading to B.Ed. and L.T. degrees/diplomas in five Hindi-speaking States of Haryana, Uttar Pradesh, Madhya Pradesh, Bihar and Rajasthan. Table 1.3 shows the state-wise distribution of the norming population.

R E S P O N S E   M O D E

Likert continuum : strongly agree, agree, undecided, disagree and strongly disagree has been provided for each item. The subject responds to each item by putting a tick mark (✓) in the square (✓) of the chosen alternative against the serial number of the attitude statement in the answer-sheet. Subjects are required to respond to all the items like-wise. They do not have the option to leave any item unanswered. The subjects are not permitted to make any mark on the test-booklets as they are re - usable.

The directions given in the test-booklet explain in simple and clear terms the procedure of test-taking and of recording responses on the answer-sheet. To make scoring easy and less time-consuming a set of six scoring keys has been prepared.

I N S T R U C T I O N S

The experimenter will distribute the test booklet and answer sheet- to each subject. After all subjects have received the proper test materials the experimenter will say : " Don't open it unless told to do so. This inventory consists

of 80 statements aimed to identify the professional attitudes of the teachers. There is considerable disagreement as to what these attitudes should be; therefore there are no right or wrong answers. What is wanted is your own individual feeling about the statements. Read each statement and decide how you feel about it. Then mark your answer in the space provided on the answersheet.

Think in terms of the general situation rather than aspecific one. There is no time limit but work as rapidly as you can. Please respond to every item. "

After giving the instructions the experimenter will ask them to turn over the page and will say :

" If you strongly agree, put tick (✓) mark in the space under Strongly Agree. If you agree, put a tick (✓) mark in the space under Agree. If you are undecided or uncertain, put a tick (✓) mark in the space under Undecided. If you disagree, put a tick (✓) mark in the space under Disagree. If you strongly disagree, put a tick (✓) mark in the space under Strongly Disagree."

" Remember you have not to make any mark on this booklet. Now read each statement carefully and record your response on the answersheet ".

S C O R I N G

Each item alternative is assigned a weight ranging from 4 (Strongly Agree) to 0 (Strongly Disagree) for favourable items. In the case of unfavourable items range of weights is

reversed i.e. from 6 (Strongly Agree) to 1 (Strongly Disagree). The attitude score of a subject is the sum total of items scores of all the six sub-scales. The theoritical range of scores is from 6 to 330 with the higher score indicating the more favourable attitude towards teaching and allied aspects.

R E L I A B I L I T Y

Reliability was estimated by the split-half (odd-even) method and found to be .79 (corrected to .88) for a sample of 239 prospective teachers. The test-retest reliability coefficients after the interval of 3 months and 9 months are found to be .58 (N = 102) and .51 (N = 230). The details of reliability coefficients, indices of reliability, corrected reliability coefficients and standard errors of measurement are given in Table 1.1 .

V A L I D I T Y

Determination of validity of an attitude inventory is a hard task.

The inventory appears to have content validity, and the method of selecting items supports this supposition. In addition, differences in mean scores were found among some selected " known " groups. The mean scores for B. A. Part-I and Part - II students offering and not offering Education as an Elective subject, B.Ed. trainees and practising teachers were computed and compared. The observed differences were found to be in the expected direction. The validity was also determined

through stimulus group technique. Table 1.5 presents at a glance a summary of the obtained results.

For determining the concurrent validity the scores on T A I were compared with the scores on the Hindi adaptation of the M T A I developed by Dr. M. C. Joshi. The obtained correlation coefficients for prospective teachers (N = 79) came out to be positive but low. This may be due to the fact that the M T A I is meant for elementary teachers, is largely culture-based and has become perhaps out of date to some extent. Table 1.6 shows the obtained correlation coefficients in a summary form.

The high discriminatory power of the items is a testimony of its internal consistency.

N O R M S

Norms have been computed State-wise and area-wise for the five Hindi-speaking States. The Means and Standard Deviations have been reported along with their Standard Errors in Tables 1.7 and 1.8 In addition to it, State-wise and sex-wise percentile norms have been computed and are given in Table 1.9

U S E F U L N E S S

The T A I appears to have reasonably high reliability and validity. As such it is a quite an adequate scale for measuring attitudes towards teaching profession, class-room teaching, child-centred practices, educational process, pupils and teachers.

This is a new inventory and the content of its items seems appropriate for extensive use for purposes of research with teachers, teaching and teacher-prospective programme.

The greatest weakness of this inventory is the dearth of information concerning its validity. Follow-up studies through the application of factor analysis are needed to provide evidence of its construct validity.

The evidence concerning the characteristics of this inventory is very limited. It is recommended that additional evidence of reliability and validity be obtained before the inventory is used for any purpose other than exploratory research.

The inventory is easy to administer and score and its wide usage is endorsed as it is reasonably long and has appreciably high reliability and validity.

It appears to be useful for conducting research in the following areas :

(1) measuring the effectiveness, mainly in the area of attitude development, of teacher preparation / education programmes in India ;

(2) knowing whether student - teachers have acquired the desired attitude ;

(3) assessing the quality, in respect of attitude development, of secondary teacher training college programmes ;

(4) comparing the performance of different training institutions in the area of attitude development ;

(5) comparing the attitudes of different groups of prospective and practising teachers on the six selected sub-areas of teaching profession/process ;

(6) using as a tool for conducting interdisciplinary, cross-cultural and transnational research in the field of attitudes of prospective and practising teachers ; and

(7) constructing newer and more dependable tools in the difficult area of attitude appraisal and assessment.

For further details / queries please contact or write to :

Dr. S. P. Ahluwalia
Reader in Education
Banaras Hindu University
VARANASI - 221005 (U. P.) INDIA

M. A. C./

TABLE 1.1

TOTAL NUMBER OF FAVOURABLE AND UNFAVOURABLE ITEMS AND SCALE-WISE THEIR SERIAL NUMBERS

Sub-scale		Serial Numbers	Total No. of items
I	F*	1,8,20,33,41,66,85	7
	UF*	13,34,46,48,60,72,79,86	8
II	F	2,9,14,17,42,47,53,67	8
	UF	35,38,59,61,65,73,84	7
III	F	3,11,16,21,27,39,49,62,64,80	10
	UF	25,54,75,83,90	5
IV	F	15,26,36,43,50,55,71,87	8
	UF	4,7,10,32,63,74,76	7
V	F	5,44,81,82,89	5
	UF	18,22,29,31,37,51,56,58,70,77	10
VI	F	6,23,40,52,88	5
	UF	12,19,24,28,30,45,57,68,69,78	10
			90

F* = Favourable - SA = 4, A = 3, U = 2, D = 1, SD = 0
UF* = Unfavourable - SA = 0, A = 1, U = 2, D = 3, SD = 4

TABLE 1.2

INFORMATION ABOUT TRY-OUT SAMPLE (NAME OF STATE, NUMBER OF COLLEGES, AND NUMBER OF SUBJECTS)

S.No.	Name of State	No. of Colleges	No. of Subjects
1.	Uttar Pradesh	3	260
2.	Madhya Pradesh	3	294
3.	Bihar	3	308
4.	Haryana	3	248
5.	Rajasthan	3	292
	Total	15	1402

TABLE 1.3

INFORMATION ABOUT NORMING POPULATION
(NAME OF THE STATE, NUMBER OF COLLEGES AND NUMBER OF PROSPECTIVE TEACHERS)

S.No.	Name of State	No. of colleges	No. of Prospective Teachers
1.	Uttar Pradesh	6	391
2.	Madhya Pradesh	5	433
3.	Bihar	3	435
4.	Haryana	1	318
5.	Rajasthan	3	292
	Total	21	2139

TABLE 1.4

RELIABILITY COEFFICIENT, INDEX OF RELIABILITY, CORRECTED COEFFICIENT, AND STANDARD ERROR OF MEASUREMENT

S.No.	Method	Reliability coefficients: Obtained r_{11}	Reliability coefficients: Corrected r	Index of Reliability r_{100}	Standard Error of Measurement
1.	Split-half (odd-even)	.79	.88	.89	11.37
2.	Test-retest (3 months)	.58	.75	.76	16.17
3.	Test-retest (9 months)	.61	.78	.80	15.13
4.	Rational Equivalence (KR21)	.54	.70	.73	20.10

TABLE 1.5

MEAN, STANDARD DEVIATION AND OTHER MEASURES OF SOME SELECTED GROUPS

S.No.	Group	N	M	σ_M	SD	σ_{SD}
1.	B.A. Part I (Not offering Education Elective)	56	230.57	2.91	21.98	2.09
2.	B.A. Part II "	53	230.73	3.44	28.74	2.41
3.	B.A. Part I (Offering Education Elective)	70	237.98	3.41	28.33	2.41
4.	B.A. Part II "	47	252.91	4.65	33.91	3.30
5.	Practising Teachers	132	251.41	2.78	30.70	1.97
6.	Prospective Teachers (at the time of B.Ed. admission)	83	251.45	3.36	31.12	2.39
7.	Prospective Teachers (After 9 months of B.Ed. training)	83	256.29	3.60	33.38	2.58

TABLE 1.6

CORRELATION BETWEEN SCORES ON T A I AND THE M T A I SCORES (N = 79)

Variables	Correlation Coefficient
MTAI Scores and Scores on Factor I of TAI	+ .42
MTAI Scores and Scores on Factor II of TAI	+ .32
MTAI Scores and Scores on Factor III of TAI	+ .02
MTAI Scores and Scores on Factor IV of TAI	+ .27
MTAI Scores and Scores on Factor V of TAI	+ .23
MTAI Scores and Scores on Factor VI of TAI	+ .07
MTAI Scores and TAI Scores	+ .23

TABLE 1.7

MEAN, STANDARD DEVIATION AND OTHER MEASURES OF NORMING POPULATION OF PROSPECTIVE TEACHERS (N = 2169)

S.No.	State	Prospective Teachers (N = 2169)				
		N	M	SE_M	S.D	$S.E_{SD.}$
1.	Uttar Pradesh	591	2[illegible].79	2.56	33.20	1.82
2.	Madhya Pradesh	433	240.71	1.30	26.97	.92
3.	Bihar	435	240.28	1.37	28.50	.97
4.	Haryana	318	240.28	1.55	27.70	1.10
5.	Rajasthan	392	237.77	1.87	31.92	1.33
	Total	2169	242.73	.64	30.00	.45

TABLE 1.8

MEAN, STANDARD DEVIATION AND OTHER MEASURES OF NORMING POPULATION (N=2169)

S. No.	State	N	M							SE_M						
			I	II	III	IV	V	VI	T	I	II	III	IV	V	VI	T
1.	Uttar Pradesh	691	40.34	40.07	39.85	45.04	38.77	40.30	248.79	0.34	0.26	0.22	0.25	0.30	0.24	2.56
2.	Madhya Pradesh	433	37.96	37.31	46.45	46.72	36.43	35.83	240.71	0.39	0.31	0.28	0.27	0.29	0.34	1.30
3.	Bihar	435	37.01	37.22	45.94	46.28	36.52	37.25	240.22	0.44	0.31	0.28	0.27	0.29	0.31	1.37
4.	Haryana	318	36.60	36.46	46.74	46.36	36.30	35.82	240.22	0.47	0.29	0.34	0.37	0.54	0.37	1.55
5.	Rajasthan	292	36.43	36.39	46.75	46.89	36.93	34.36	237.77	0.55	0.43	0.35	0.38	0.88	0.40	1.87
	Total	2169	38.12	37.92	44.32	46.35	37.24	37.33	242.73	0.19	0.23	0.14	0.13	0.15	0.15	0.64

Contd........

Contd........

(Table 1.8)

S. No.	State	S.D.							$S.E._{SD}$						
		I	II	III	IV	V	VI	T	I	II	III	IV	V	VI	T
1.	Uttar Pradesh	8.83	6.88	5.72	6.64	7.85	6.39	33.20	0.24	0.19	0.15	0.18	0.21	0.17	1.82
2.	Madhya Pradesh	8.18	6.36	5.75	5.54	5.97	7.04	26.97	0.29	0.22	0.20	0.19	0.20	0.24	0.92
3.	Bihar	9.22	6.37	5.81	5.7	6.14	6.48	28.50	0.31	0.22	0.20	0.19	0.21	0.22	0.97
4.	Haryana	8.43	5.15	6.06	6.53	9.70	6.65	27.70	0.34	0.21	0.24	0.26	0.39	0.26	1.10
5.	Rajasthan	9.44	7.27	5.93	6.41	6.54	6.85	31.92	0.39	0.30	0.25	0.27	0.27	0.28	1.33
	Total	8.95	10.79	6.58	6.38	7.02	7.02	30.00	0.13	0.16	0.10	0.09	0.10	0.10	0.45

TABLE 1.9

STATE-WISE AND SEX-WISE PERCENTILES OF NORMING POPULATION

Percentiles	STATES								
	Uttar Pradesh			Madhya Pradesh			Bihar		
	M	F	T	M	F	T			T
P_{100}	324	326	326	327	333	333	310	298	310
P_{95}	268	265	264	251	256	253	257	245	255
P_{90}	254	249	253	237	238	235	238	236	238
P_{85}	239	238	239	233	233	231	233	232	233
P_{80}	234	234	235	229	229	228	228	228	228
P_{75}	231	230	231	225	224	224	224	224	224
P_{70}	227	227	227	220	220	220	219	220	219
P_{65}	223	223	223	216	216	215	214	215	214
P_{60}	219	219	219	212	211	211	209	211	209
P_{55}	214	215	215	208	207	207	204	207	205
P_{50}	210	211	211	204	202	202	199	203	200
P_{45}	206	208	207	199	198	199	194	198	195
P_{40}	202	204	203	194	193	193	190	193	190
P_{35}	197	200	198	188	188	188	185	188	185
P_{30}	190	194	192	183	183	183	180	183	181
P_{25}	184	189	186	177	179	178	176	178	176
P_{20}	178	182	179	171	174	172	171	173	171
P_{15}	171	175	173	166	169	168	166	168	167
P_{10}	165	169	167	160	164	162	162	163	162
P_{5}	159	155	160	152	153	152	145	152	146
P_{0}	157	141	141	146	149	146	141	146	141

Contd......

Contd....   (Table 1.9)

Percentiles	STATES								
	Haryana			Rajasthan			Total		
	M	F	T	M	F	T	M	F	T
P_{100}	303	309	309	303	309	309	327	333	333
P_{95}	237	292	246	255	246	284	259	243	259
P_{90}	232	238	236	239	236	238	239	239	239
P_{85}	226	234	232	233	231	233	235	235	235
P_{80}	221	230	228	229	226	228	230	231	231
P_{75}	216	226	224	224	221	223	226	227	226
P_{70}	210	223	220	219	216	219	221	223	222
P_{65}	205	220	216	215	212	214	217	219	218
P_{60}	203	215	212	210	207	209	213	215	214
P_{55}	201	212	208	206	202	206	208	211	209
P_{50}	199	207	204	201	197	202	204	207	205
P_{45}	194	203	200	196	190	195	199	203	201
P_{40}	188	199	195	102	184	191	194	198	196
P_{35}	183	193	189	186	178	184	189	193	180
P_{30}	178	187	183	181	172	179	183	187	185
P_{25}	173	181	178	176	166	174	178	181	179
P_{20}	167	175	172	171	160	168	172	175	173
P_{15}	163	169	166	166	149	163	167	170	168
P_{10}	151	163	160	161	137	141	162	164	162
P_{5}	135	146	140	153	126	135	145	152	146
P_{0}	116	122	122	143	122	122	116	122	116

1. Adaval, S.B. "Teacher Education" in National Council of Edul. Res. *Educational Research Third Indian Year-book* (New Delhi: NCERT 1968).

2.. Allport, G.W. "Attitudes" in Martin Fishbein (ed.) *Readings in Attitude Theory and Measurement* (New York: Wiley, 1967).

3. Bernbaum, G. *Social Change and the Schools 1918-1944* (London: Routledge and Kegan Paul, 1967).

4. Brim, B.J. "Attitude Changes in Teacher Education Students." *Journal of Educational Research*, 59: 441-45 (1966).

5. Buch, M.B. "The Measurement of Attitudes of Secondary School Teachers Towards the Teaching Profession", *Jnl. of Educ. and Psychol.*, 1962, 17(3).

6. Buch, M.B. "Educational Psychology - A Trend Report" in Indian Council of Social Sciences Research, *A Survey of Research in Psychology*, (Bombay: Popular Prakashan, 1972).

7. Butts, David P. and Raun Chester L, *A Study in Teacher Attitude Change* (Austin University of Texas Research and Development Centre for Teacher Education, 1973).

8. Callis, R. "Change in Teacher-pupil attitudes related to training and experience" *Educl. and Psychol. Measurement*, 1950, 10, 718-727.

9. Campbell, D.E., "*Dimensional Attitude Changes of Student Teachers*" JER 1967, 61, 4 160-162.

10. Cardno, J.A. "The Notion of Attitude: An Historical Note," *Psychol. Rep.*, 1955, 1.

11. Cook, W.W., Leeds, C.H. and Callis, R. *Minnesota Teacher Attitude Inventory* (New York: Psychological Corporation, 1951).

12. Corrigan, Dean and Griswold, Kenneth "Attitude Changes of Student Teachers" *J. Teach. Ed.* 1963, 14: 93-5.

13. Day, H.P. "Attitude Changes of Beginning Teachers After Initial Teaching Experience". *J. Teacher Edu.*, 1959, 10 326-328.

14. Edwards, A.L. *Techniques of Attitude Scale Construction* (Bombay: Vakils, Feffer and Simons, 1969). Indian Reprint.

15. Evans, K.M. "An Examination of the Minnesota Teacher Attitude Inventory" *British Journal of Educl. Psych.* 28, 253-7. (1958).

16. Evans, K.M. "The Minnesota Teacher Attitude Inventory" *Educl. Research*, 8, 134-41 (1966).

17. Good, C.V. "Teacher Education" in Harris, C.W. and Liba, M. (eds.). *Encyclopedia of Educational Research* (New York: Macmillan, 1969).

18. Jowda, T.V. Chinese *Measurement of Attitudes: A Study of the Attitudes of Teachers Towards their Source* [illegible], 19[illegible].

19. Horowitz, M. "Student Teaching Experiences and Attitude of Student Teachers". *Jnl. Tr. Edu.* (1968, XIV, 3).

20. Insko, Chester A. *Theories of Attitude Change* (New York: Appleton-Century-[illegible], 19[illegible]).

Appendix - III

INSTITUTIONS INCLUDED IN THE TRY - OUT STUDY

S.No.	Institution	Place	Respondents
A.	H a r y a n a		
1.	S.L.College of Education	Ambala City	80
2.	C. R. College of Education	Rohtak	98
3.	K. M. College of Education	Bhiwani	70
B.	R a j a s t h a n		
4.	Basic Teachers' Training College	Sardarshahar	114
5.	Government Teachers Training College	Bikaner	36
6.	Government Teachers Training College	Ajmer	112
C.	M a d h y a P r a d e s h		
7.	Government College of Education	Sagar	148
8.	Government College of Education	Bhopal	80
9.	Prantiya Saikshan Mahavidyalaya	Jabalpur	66
D.	B i h a r		
10.	Government Teachers Training College	Bhagalpur	119
11.	Government Teachers Training College	Deoghar	98
12.	Government Teachers Training College	Ranchi	91
E.	U t t a r P r a d e s h		
13.	D. B. S. College	Kanpur	106
14.	H. C. Degree College	Varanasi	70
15.	Mohila Mahavidyalaya	Lucknow	84
		T o t a l	1402

Appendix - IV

INSTITUTIONS INCLUDED IN THE WORKING STUDY

S.No.	Institution	Place	Respondents
	A. H a r y a n a		
1.	K. M. College of Education	Bhiwani	70
2.	D.A.V. College of Education for Women	Karnal	76
3.	S. L. College of Education	Ambala City	79
4.	C. R. College of Education	Rohtak	93
	B. R a j a s t h a n		
5.	Basic Teachers Training College	Sardarshahr	114
6.	Government Teachers Training College	Ajmer	112
7.	Government Teachers Training College	Bikaner	36
	C. M a d h y a P r a d e s h		
8.	Government College of Education	Sagar	117
9.	Government Teachers Training College	Chhatarpur	97
10.	Government College of Education	Bhopal	81
11.	Government College of Education	Jabalpur	65
12.	Hitkarini City College	Jabalpur	43
	D. B i h a r		
13.	Government Teachers Training College	Bhagalpur	247
14.	Government Teachers Training College	Deoghar	98
15.	Government Teachers Training College	Ranchi	90
	E. U t t a r P r a d e s h		
16.	R. B. S. College of Education	Agra	164
17.	A. N. D. Mahila Mahavidyalaya	Kanpur	148
18.	K. P. Training College	Allahabad	93
19.	Department of Education, B. H. U.	Varanasi	72
20.	Degree College	Pratapgarh	131
21.	Tilak Dhari College	Jaunpur	86
		T o t a l	2139

Appendix - V

INSTITUTIONS INCLUDED IN THE ATTITUDE CHANGE STUDY

S.No.	Institution	Place	Respondents
1.	N. A. S. College	Meerut	30
2.	Degree College	Pratapgarh	48
3.	K. N. I. Mahavidyalaya	Naimabad	51
4.	Tilak Dhari College	Jaunpur	70
5.	N. R. E. C. College	Khurja	31
6.	D. S. College	Aligarh	49
7.	Womens' Training College, Dayalbagh	Agra	78
8.	R. B. S. College of Education	Agra	86
9.	K. P. Training College	Allahabad	17
10.	A. N. D. Mahila Mahavidyalaya	Kanpur	53
11.	Department of Education, B. H. U.	Varanasi	34
		Total	548